जेष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 127, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 03 जून 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

आतंकियों ने राजस्थान के रहने वाले बैंक मैनेजर को कुलगाम में बैंक में घुसकर गोली मार दी

कश्मीर में फिर टारगेट किलिंग

एक महीने में छह टारगेट किलिंग

12 मई	25 मई
बडगाम राहुल भट्ट (कश्मीरी पंडित)	अमरीन भट्ट टीवी आर्टिस्ट
13 मई	31 मई
पुलवामा रियाज अहमद ठाकोर पुलिसकर्मी	कुलगाम रजनी बाला (टीचर)
24 मई	2 जून
सैफुल्लाह कादरी कांस्टेबल	कुलगाम विजय कुमार (बैंक मैनेजर)

कुलगाम: कश्मीर में आतंकवादियों ने एक और टारगेट किलिंग को अंजाम दे दिया है। 3 दिन पहले कुलगाम में ही एक टीचर की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इलाकाई देहाती बैंक के अधिकारियों ने कहा कि मोहनपोरा ब्रांच में विजय कुमार को आतंकवादियों ने गोली मारी। नाजुक हालत में उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी मौत हो गई। आतंकवादियों की तलाश में सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है। इधर, दिल्ली में गृहमंत्री अमित शाह ने राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोवाल और रॉ प्रमुख के साथ मीटिंग की है।

केएफएफ ने ली हत्या की जिम्मेदारी, धमकी भी दी: आतंकी संगठन कश्मीर फ्रीडम फाइटर्स (केएफएफ) ने इस हत्या की जिम्मेदारी ली है। केएफएफ ने चिट्ठी जारी कर चेतावनी भी दी है। संगठन ने कहा, जो भी कश्मीर के डेमोग्राफिक बदलाव में शामिल होगा, उसका यही अंजाम होगा। आतंकी संगठन कश्मीर फ्रीडम फाइटर्स (केएफएफ) ने हत्या की जिम्मेदारी लेते हुए पत्र जारी किया है।

आतंकी संगठन कश्मीर फ्रीडम फाइटर्स (केएफएफ) ने हत्या की जिम्मेदारी लेते हुए पत्र जारी किया है। पत्र में आगे लिखा है, 'जो भी बाहरी लोग इस धोखे में रह रहे हैं कि मोदी के नेतृत्व वाली सरकार उन्हें यहां स्थायी कर देगी, उनके लिए ये आंख खोलने वाला है। अब बाहरी लोगों को वास्तविकता समझ लेनी चाहिए कि उन्हें इसके लिए जान भी गंवानी पड़ेगी। सोचिए, कहीं देर न हो जाए और अगली बारी तुम्हारी हो।'

शाह-डोभाल के बीच हाईलेवल मीटिंग: कश्मीर में टारगेट किलिंग की घटना के बाद गृहमंत्री अमित शाह और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोवाल के बीच हाईलेवल मीटिंग हुई है। मीटिंग में प्रधानमंत्री कार्यालय के स्टेट मिनिस्टर जितेंद्र सिंह भी शामिल रहे। शाह ने 3 जून को भी बैठक बुलाई है, जिसमें कश्मीर के उप-राज्यपाल भी मौजूद रहेंगे।

एक महीने में 6 टारगेट किलिंग: जम्मू-कश्मीर में एक महीने में 6 टारगेट किलिंग का मामला सामने आया है। 12 मई बडगाम में राहुल भट्ट (सरकारी कर्मचारी), 13 मई को पुलवामा में रियाज अहमद ठाकोर (पुलिसकर्मी), 24 मई को सैफुल्लाह कादरी (कांस्टेबल), 25 मई को अमरीन भट्ट (टीवी आर्टिस्ट) और 31 मई को कुलगाम में रजनी बाला (टीचर) की आतंकियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी।

अनुच्छेद 370 हटने के बाद निशाने पर हिंदू: गृह मंत्रालय ने सदन में बताया कि अगस्त, 2019 से मार्च, 2022 तक, 4 कश्मीरी पंडितों और 14 /हिन्दू और गैर-कश्मीरी मजदूरों की हत्या हो चुकी है। अगस्त में केंद्र सरकार ने कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाया था।

कश्मीर में पंडितों का प्रदर्शन जारी: घाटी में 19 दिनों से कश्मीरी पंडितों का आंदोलन चल रहा है। प्रधानमंत्री रोजगार पैकेज के तहत नौकरी पाने वाले पंडित काम का बहिष्कार कर प्रदर्शन कर रहे हैं।

आठ सालों में देशवासियों का खुद पर भरोसा बढ़ा: मोदी

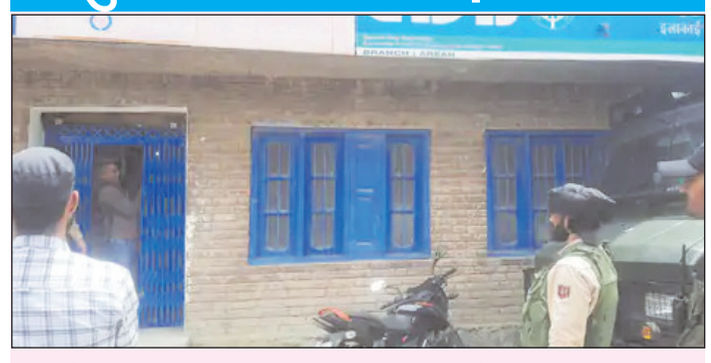

जानकारी के अनुसार बैंक मैनेजर विजय हनुमानगढ़ के नोहर थाना इलाके के भगवान गांव के रहने वाले थे। उनके पिता ओमप्रकाश बेनीवाल एक सरकारी स्कूल में शिक्षक हैं। उनका छोटा भाई अनिल पढ़ाई कर रहा है। विजय की चार महीने पहले ही शादी हुई थी और वह एक महीने पहले ही पत्नी को अपने साथ ले गया था।

हमले का वीडियो भी आया सामने: विजय कुमार कुलगाम के मोहनपोरा में इलाकी देहाती बैंक में तैनात बैंक प्रबंधक थे। गुरुवार सुबह आतंकियों ने उन्हें गोली मार दी। इस हमले का वीडियो भी सामने आया है। जिसमें दिख रहा है कि एक आतंकी बैंक में दाखिल होता है, कुछ देर बैंक के गेट पर खड़े होकर इंतजार करता है। पिस्टल से विजय को गोली मार देता है। इलाज के दौरान विजय की मौत हो गई।

सीएम गहलोत का एनडीए सरकार पर बोला हमला: राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत ने कहा कि जम्मू कश्मीर के कुलगाम में कार्यरत हनुमानगढ़, राजस्थान के निवासी विजय कुमार की आतंकियों द्वारा हत्या घोर निंदनीय है। मैं ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति एवं परिवार को हिम्मत देने की प्रार्थना करता हूं। एनडीए सरकार कश्मीर में शांति बहाल करने में असफल रही है।

कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया हुई कोरोना संक्रमित

नई दिल्ली: कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी कोरोना संक्रमित कांग्रेस की अध्यक्ष सोनिया गांधी कोरोना संक्रमित हो गई हैं। उनके साथ ही कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल की जांच रिपोर्ट भी कोरोना संक्रमित आई हैं। इसके साथ ही बैठक में आए कुछ नेता भी संक्रमण के शिकार बताए जा रहे हैं।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता रणदीप सिंह सुरजेवाला ने ट्वीट कर बताया कि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी पिछले एक सप्ताह से नेताओं और कार्यकर्ताओं से मिल रही हैं, जिनमें से कुछ कोरोना संक्रमित पाये गये हैं। कांग्रेस अध्यक्ष को कल शाम को हल्का बुखार और कोविड के लक्षण दिखाई दिए थे। जांच में वह कोविड पॉजिटिव पाई गई हैं। उन्होंने आगे कहा कि चिकित्सकीय सलाह के अनुसार कांग्रेस अध्यक्ष ने खुद को आइसोलेट कर लिया है। उन्होंने कहा कि जैसा कि पहले ही बताया गया है कि कांग्रेस अध्यक्ष 8 जून को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के सामने पेश होंगी। कांग्रेस के एक अन्य नेता ने बताया कि सोनिया गांधी को ज्यादा दिक्कत नही है और उम्मीद जताई जा रही कि वह 8 जून से पहले ठीक हो जाएंगी। दरअसल, प्रवर्तन निदेशालय ने मनी लांड्रिंग के एक मामले में सोनिया और राहुल गांधी को सम्मन जारी किया है। सोनिया और भी कई बीमारियों से ग्रस्त हैं। जिसके कारण उनकी सर गंगाराम अस्पताल में नियमित जांच होती है। सोनिया के साथ गत बुधवार को हुई एक बैठक में शामिल कई अन्य नेता भी संक्रमित बताए गए हैं। सोनिया एक दिन पहले यहां पार्टी की ओर से आयोजित आजादी गौरव यात्रा के समापन समारोह में शामिल हुई थी। उनके साथ ही कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल भी कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। इससे पहले देश की आजादी के 75 साल पूरे होने के अवसर पर कांग्रेस की ओर से निकाली गई आजादी गौरव यात्रा का गत बुधवार को समापन हो गया। सोनिया समेत कई अन्य वरिष्ठ नेता इस दौरान मौजूद रहे। कांग्रेस सेवा दल की ओर से गत 6 अप्रैल को गुजरात के साबरमती से यह यात्रा शुरू हुई थी। दिल्ली के राजघाट पर यह यात्रा संपन्न हुई। इस दौरान सोनिया समेत पार्टी के कई वरिष्ठ नेता उपस्थित थे। बताया जा रहा कि सोनिया की जांच रिपोर्ट कोरोना संक्रमित आने के बाद कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने भी लखनऊ के अपने कार्यक्रम रद्द कर दिये हैं और वह भी दिल्ली में ही हैं।

रिलीज से पहले यूपी में टैक्स फ्री हुई 'सम्राट पृथ्वीराज'

लखनऊ: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को फिल्म सम्राट पृथ्वीराज देखने के बाद उत्तर प्रदेश में इसको टैक्स फ्री करने की घोषणा की। योगी ने कहा कि यह फिल्म अतीत की गलतियों से सीखने की प्रेरणा देने वाली है। लोकभवन में इस फिल्म की स्पेशल स्क्रीनिंग हुई, जिसमें मुख्यमंत्री आदित्यनाथ ने अभिनेता अक्षय कुमार, अभिनेत्री मानुषी छिल्लर, निर्देशक चंद्रप्रकाश द्विवेदी के साथ फिल्म का आनंद लिया। योगी के साथ उनकी मंत्रिपरिषद के सदस्य भी मौजूद रहे। फिल्म देखने के बाद मुख्यमंत्री ने कलाकारों का अभिनन्दन किया। उन्होंने कहा कि वर्षों के अंतराल के बाद आज फिल्म देखने का सुअवसर मिला। हालांकि राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के आगामी कार्यक्रमों की तैयारियों की व्यस्तता के कारण शो में थोड़ी देर से पहुंचे।

राज्यसभा चुनवा: कांग्रेस ने हरियाणा के 28 विधायकों को भेजा रायपुर

चंडीगढ़: हरियाणा से राज्यसभा के लिए कांग्रेस के उम्मीदवार अजय माकन की जीत को सुनिश्चित करने के लिए पार्टी ने मोर्चा संभाल लिया है। अंदरखाने भीतरघात के डर से 31 में से 28 विधायक रायपुर भेज दिए गए हैं। विधायक निजी विमान से रायपुर भेजे गए। अब सभी 10 जून को मतदान के दिन लौटेंगे। रायपुर भेजने से पहले केसी वेणुगोपाल ने नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र हुड्डा के निवास पर विधायकों की बैठक ली। इससे पहले सभी 31 विधायकों को गुरुवार को पांच जोड़ी कपड़ों के साथ दिल्ली तलब कर लिया गया था। तीन विधायक कुलदीप बिश्नोई, किरण चौधरी व चिरंजीव राव नहीं पहुंचे। बाकी विधायक सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा के आवास पर पहुंच गए हैं, जहां से सभी को छत्तीसगढ़ ले जाया जाएगा। हरियाणा कांग्रेस प्रभारी विवेक बंसल ने दावा किया कि सभी विधायक एकजुट हैं। सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने कहा कि कोई विधायक नाराज नहीं है। मैं बीजेपी से कहना चाहता हूं कि वह अपने हरियाणा के विधायकों को सुरक्षित रखे।

जीत के लिए चाहिए 30 विधायक: कांग्रेस के विधानसभा में 31 विधायक हैं, माकन को जीतने के लिए 30 वोट चाहिए। नाराज विधायक कुलदीप बिश्नोई की अनुपस्थिति की स्थिति में 30 विधायक एकजुट रहते हुए वोट करते हैं तो माकन आराम से जीत जाएंगे। लेकिन, आलाकमान के पास रिपोर्ट पहुंची है कि निर्दलीय विधायक कार्तिकेय शर्मा और उनके पूर्व मंत्री पिता विनोद शर्मा कुछ कांग्रेस विधायकों को तोड़ने की फिराक में हैं। पूर्व स्पीकर कुलदीप शर्मा निर्दलीय उम्मीदवार के ससुर हैं, इसलिए पार्टी और सतर्क हो गई है। 10 जून को राज्यसभा की दोनों सीटों के लिए होने वाले मतदान में क्रॉस वोटिंग की संभावना कम है। चूंकि, भाजपा, कांग्रेस के साथ निर्दलीय उम्मीदवार के चुनाव प्रभारी व एजेंट मौके पर मौजूद रहेंगे। विधायकों को वोट डालने से पहले उन्हें दिखानी होगी।

केके मौत मामला: होटल के कमरे से बरामद हुई एंटासिड की गोलियां

कोलकाता। मशहूर गायक केके की अस्वाभाविक मौत की जांच कर रही कोलकाता पुलिस की टीम ने होटल ग्रांड ओबेरॉय के उस कमरे से एंटासिड की गोलियां बरामद की है जिसमें केके ठहरे हुए थे। मंगलवार की रात सरकारी नजरुल मंच ऑडिटोरियम में परफॉर्मेंस के दौरान उनकी तबीयत बिगड़ गई थी जिसके बाद वह होटल रूम में लौटे थे। वहां लगातार उनकी तबीयत बिगड़ने पर उनकी टीम ने उन्हें सीएमआरआई अस्पताल में भर्ती किया था जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया था। गुरुवार को कोलकाता पुलिस की ओर से जारी बयान में बताया गया है कि केके की मौत को लेकर पुलिस ने अस्वाभाविक मौत का मामला दर्ज किया है और जांच चल रही है। उनके होटल रूम की तलाशी के दौरान एंटासिड की गोलियां जब्त की गई हैं। ये ऐसी दवाई है जो अपच और गैस्ट्रिक दूर करने के लिए ली जाती है।

'आज के मुसलमानों के पूर्वज भी थे हिंदू'

नई दिल्ली: संघ प्रमुख मोहन भागवत ने मौजूदा वक्त में देश और दुनिया के हालात को लेकर संघ का नजरिया सबके सामने रखा है। उन्होंने ज्ञानवापी मामले का भी जिक्र करते हुए कहा कि देश में सभी के पूर्वज समान ही थे। साथ ही संघ प्रमुख ने रूस-यूक्रेन युद्ध का हवाला देते हुए कहा कि हमारी आकांक्षा लोगों को जीतने की नहीं, बल्कि लोगों को जोड़ने की है। साथ ही मौजूदा वैश्विक स्थिति के मद्देनजर भारत को अपनी ताकत बढ़ाने की बात भी कही।

आज के मुसलमानों के पूर्वज भी हिंदू थे: ज्ञानवापी को लेकर हिंदू-मुस्लिम विवाद पर संघ प्रमुख ने कहा, मामला जारी है। हम इतिहास नहीं बदल सकते। इसे न आज के हिंदुओं ने बनाया और न ही आज के मुसलमानों ने। यह उस समय हुआ था। इस्लाम हमलावरों के जरिए बाहर से आया था। हमलों में भारत की आजादी चाहने वालों का मनोबल गिराने के लिए देवस्थानों को तोड़ा गया। उन जगहों के मुद्दे उठाए गए हैं जो हिंदुओं की भक्ति से जुड़े हैं। हिंदू मुसलमानों के खिलाफ नहीं सोचते। आज के मुसलमानों के पूर्वज भी हिंदू थे। यह उन्हें हमेशा के लिए आजादी नहीं देने और मनोबल को दबाने के लिए किया गया था। इसलिए हिंदुओं को लगता है कि उन्हें (धार्मिक स्थलों) को बहाल किया जाना चाहिए।

हिंदू-मुस्लिम आपसी सहमति से खोजें रास्ता: भागवत ने कहा, मन में कोई बात हो तो उठ जाती है। यह किसी के खिलाफ नहीं है। इसे ऐसा नहीं माना जाना चाहिए। मुसलमानों को ऐसा नहीं मानना चाहिए और हिंदुओं को भी ऐसा नहीं करना चाहिए। आपसी सहमति से रास्ता खोजें। एक रास्ता हमेशा बाहर नहीं आता है।

हार्दिक पटेल की भाजपा में एंट्री: रोड शो निकाला, बोले- घर वापसी

अहमदाबाद: गुजरात के चर्चित पाटीदार नेता हार्दिक पटेल भाजपा में शामिल हो गए। इससे पहले कांग्रेसी नेता श्वेता ब्रह्मभट्ट प्रदेश अध्यक्ष सीआर पाटिल की मौजूदगी में बीजेपी में शामिल हुईं। बीजेपी में शामिल होने से पहले हार्दिक ने कोबा इलाके से बीजेपी कार्यालय 'कमलम' तक रोड शो निकाला। इसके बाद दोपहर 12.39 बजे के विजय मुहूर्त में कमलम में प्रदेश अध्यक्ष सीआर पाटिल की मौजूदगी में उन्होंने केसरिया पहन लिया। इस दौरान मीडिया से बात करते हुए उन्होंने कहा, 'मैं भाजपा में शामिल नहीं हुआ हूं, बल्कि ये मेरी घर वापसी हुई है।'

प्रदेश अध्यक्ष सीआर पाटिल ने करवाई श्वेता ब्रह्मभट्ट की बीजेपी में एंट्री: भाजपा जॉइन करने से पहले उन्होंने एक ट्वीट किया- राष्ट्रहित, प्रदेशहित, जनहित एवं समाज हित की भावनाओं के साथ आज से नए अध्याय का प्रारंभ करने जा रहा हूँ। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में चल रहे राष्ट्र सेवा के भगीरथ कार्य में छोटा सा सिपाही बनकर काम करूंगा।

भाजपा जॉइन करने से पहले पूजा-पाठ: हार्दिक ने पार्टी जॉइन करने से पहले एक पोस्टर जारी किया था, जिसमें उनके भाजपा में जॉइन होने का समय भी बताया गया था। इससे पहले उन्होंने अपने आवास पर दुर्गा पाठ किया। दुर्गा पूजा के बाद हार्दिक स्वामीनारायण मंदिर गए, जहां उन्होंने गो पूजा भी की।

हार्दिक बोले- पद का लालच नहीं: पूर्व कांग्रेस नेता हार्दिक पटेल ने कहा- आज तक मैंने पद के लालच में कहीं भी किसी भी प्रकार की मांग नहीं रखी। कांग्रेस को भी मैंने काम मांगते हुए छोड़ा और भाजपा में भी मैं काम करने की अभिलाषा के साथ जुड़ रहा हूं। स्थान की चिंता कमजोर लोग करते हैं। मजबूत लोग कभी भी स्थान की चिंता नहीं करते हैं। उन्होंने कहा कि बहुत जल्द हर 10 दिन में एक कार्यक्रम करेंगे, जिसमें कांग्रेस पार्टी से नाराज विधायकों, जिला पंचायत या तहसील पंचायत के सदस्यों, नगर निगम के सदस्यों को जोड़ेंगे।

'पीएम श्री स्कूल' स्थापित करेगी केंद्र सरकार

नई दिल्ली: केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने गुरुवार को कहा कि केंद्र सरकार 'पीएम श्री स्कूल' स्थापित करने की प्रक्रिया में है। उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करना होगा। ये अत्याधुनिक स्कूल राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की प्रयोगशाला होंगे। केंद्रीय मंत्री प्रधान गुजरात के गांधीनगर में देश के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के शिक्षा मंत्रियों के दो दिवसीय सम्मेलन के सत्र को संबोधित करते हुए यह बात कही। उन्होंने बताया कि सरकार पीएम श्री स्कूलों की स्थापना की प्रक्रिया में है जो छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने के लिए पूरी तरह से सुसज्जित होंगे। ये अत्याधुनिक स्कूल एनईपी 2020 की प्रयोगशाला होंगे। उन्होंने पीएम श्री स्कूलों के रूप में एक फ्यूचरिस्टिक बेंचमार्क मॉडल बनाने के लिए सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों और संपूर्ण शिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र से सुझाव और प्रतिक्रिया मांगी। उन्होंने कहा कि हम अमृत काल के युग में हैं। यह अगले 25 साल भारत को एक ज्ञान अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

हम एक सभ्यता हैं जो वसुधैव कुटुम्बकम में विश्वास करती हैं और हमें यह महसूस करना चाहिए कि हमारे पास न केवल हमारे राष्ट्र की बल्कि दुनिया की भी जिम्मेदारियां हैं।

खबर संक्षेप

चिकित्सा प्रभारी के खिलाफ भाजपा संसद ने खोला मोर्चा हटाने की मांग

मऊआइमा। मऊआइमा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर अरसे से तैनात चिकित्सा अधीक्षक के खिलाफ तमाम शिकायतों के बावजूद नहीं हटाया गया।अब भाजपा जिला संयोजक आई टी निमिष खत्री की शिकायत पर फूलपुर संसद केशरी देवी ने मोर्चा खेलते हुए सीएमओ को पत्र लिख कर हटाने की मांग की है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक मऊआइमा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर अरसे से तैनात चिकित्सा अधीक्षक डाक्टर आर जी वर्मा के खिलाफ काफी दिनों से स्टाफ से लेकर आम जनमानस नाराज हैं। आरोप है कि चिकित्सा अधीक्षक जल्दी अस्पताल नहीं आते । यदि आए तो उनका व्यवहार आमजनमानस के प्रति ठीक नहीं रहता है।अधीक्षक पर उदासीनता, अनियमितता की शिकायत भाजपा जिला संयोजक आई टी एंव सोशल मीडिया गंगापार निमिष खत्री ने फूलपुर संसद केशरी देवी पटेल से की। जिसपर केशरी देवी पटेल ने चिकित्सा प्रभारी डाक्टर आर जी वर्मा के प्रति काफी नाराजगी देखाते हुए सीएम ओ को पत्र लिख कर अधीक्षक पर शासकीय कार्यालयों में अनिमितता तथा जनता के प्रति डाक्टर के प्रति रोष और चिकित्सा प्रभारी के कृत्यों के कारण सरकारी क्षवि धूमिल होने का आरोप लगाते हुए अधीक्षक को हटाने की मांग पत्र सीएमओ को लिख कर मोर्चा खोल दिया है।

यूनियन बैंक जंघई में युवक से तमंचा सटाकर दिन दहाड़े 50 हजार लूटा

अखंड भारत संदेश

जंघई। भारतीय यूनियन बैंक जंघई मे रुपया निकालने आये एक युवक से बदमाशों ने तमंचा सटाकर 50 हजार 5 सौ रुपया लूट लिया। दिनदहाड़े घटना घटने पर भुक्तभोगी की सूचना पर बैंक ड्यूटी में लगी पुलिस जांच में जुट गयी है । सरायममरेज थाना के भुलेन्द्र जयसिंहपुर गाँव निवासी कुलदीप यादव यूनियन बैक जंघई की शाखा मे दोपहर 11 बजकर 12 मिनट पर पहुंचा भुक्तभोगी ने बताया की उसने बैंक से चेक द्वारा पचास हजार रुपया निकाला उसके बाद बगल एटीएम से पांच सौ निकाला इसी बीच एटीएम व बैंक के बगल में पहले से मौजूद दो बदमाशों ने तमंचा सटाकर उसका पचास हजार पांच सौ रुपया लूट कर वहां से पैदल निकल गये वह डर गया उनके जाने के कुछ देर बाद उसने हल्ला मचाया तो अगल बगल के लोग दौड़ आये तो उसने बैक ड्यूटी में मौजूद सिपाही व होमगार्ड को छिनैती होने की सूचना दी तो सिपाहियों ने सीसी टीवी फुटेज खंगालना शुरू कर दिया सीसी टीवी मे दो लोग उसके साथ बैंक में पीछे से जाते और आते वक्त दिख रहे लेकिन जहां घटना घटी

घटना के बाद बैंक में पुलिस व कर्मचारी सीसीटीवी खंगालती।

वह सीसीटीवी की में नही आ रहा है जिससे तमंचा सटाकर पैसा छिनते नही दिख रहा है। लेकिन बैक से बाहर पैदल जाते दो लोग दिख रहे हैं। भुक्तभोगी के अनुसार दोनो पैदल ही यहां से निकले फिर कीधर गये वह नही बता पा रहा है फिलहाल घटना के चार घंटे बाद भी मीरगंज थानाध्यक्ष या उच्चधिकारी मौके पर नही पहुंच पाये थे।थानाध्यक्ष बृजेश कुमार गुप्ता का कहना है किसी भी तरह की घटना की जानकारी नही है।

हद है! एसडीएम के सामने चेयरमैन को जान से मारने की धमकी

लालगोपालगंज। एसडीएम की मौजूदगी में बंजर भूमि और अवैध अतिक्रमण को लेकर स्थानीय नगर पंचायत चेयरमैन से विवाद हो गया। जहां गाली गलौज के बाद चेयरमैन को जान से मारने की धमकी दे दी गई। नगर पंचायत क्षेत्र में सरकारी भूमि की पैमाइश और नाजायज कब्जा हटाने के लिए एसडीएम सोरांव डॉक्टर कंचन लालगोपालगंज पहुंची थीं। जिनके साथ नगर पंचायत अधिशासी अधिकारी संतोष कुमार वर्मा समेत कार्यालय के अन्य लोगों की मौजूदगी में चेयरमैन मुख्तार अहमद सरकारी जमीन की पैमाइश करा रहे थे। तभी विपक्षी ने चेयरमैन से गाली गलौज की। आरोप है कि विपक्षी ने सरकारी कार्यों में बाधा डाला। यही नहीं चेयरमैन को जान से मारने की धमकी तक दी गई। चेयरमैन मुख्तार अहमद ने नवाबगंज थाना में नामजद तहरीर देते हुए कार्यवाही किए जाने की मांग की है।

पढ़ाई के टेंशन में कक्षा आठ की छात्रा ने लगाई फांसी, मौत

अखंड भारत संदेश

फाफामऊ। उम्र महज 13 साल, कक्षा आठ की छात्रा, और खत्म कर ली जिंदगी। इस घटना ने जान देने जैसा कठोर कदम उठाने वाली लड़की के माता-पिता और परिवार ही नहीं, समाज को भी स्तब्ध किया है। वजह भी बस इतनी सी कि पढ़ाई के चलते तनाव में थी। ऐसे में भला इस उम्र की बालिका ऐसा कैसे कर सकती है। आरएएफ सिपाही की बेटी की खुदकुशी ने इस फोर्स के कर्मचारियों को भी दुखी कर दिया है।फाफामऊ क्षेत्र के न्यू शांतिपुरम कॉलोनी के मोहल्ले में गुरुवार की सुबह साक्षी अग्निहोत्री (13) पुत्री पुष्पराज अग्निहोत्री ने कमरे में छत के पंखे में साड़ी के सहारे लटक कर जान दे दी। दरअसल हुआ यह कि वह काफी देर तक कमरे से बाहर नहीं निकली तो घरवालों ने उसे आवाज दी, लेकिन कोई हलचल नहीं हुई। जब देर तक कोई आहट नहीं मिली तो संदेह होने पर खिड़की से कमरे में देखने पर सभी सन्न रह गए। पंखे के सहारे साड़ी के फंदे से साक्षी का शव लटक रहा था। परिवार के लोग यह देख रोने कलपने लगे। बेटी की मौत हो चुकी थी।

पुलिस को भी घरवालों ने यही बताया कि पढ़ाई का था टेंशन

इस बारे में सूचना पाकर पहुंची फाफामऊ थाने की पुलिस ने मौके पर जांच पड़ताल और घरवालों से बातचीत के बाद शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक छात्रा के पिता रैपिड एक्शन फोर्स 101 बटालियन शांतिपुरम में सिपाही पद पर कार्यरत हैं। घटना के वक्त वह कानपुर गए हुए थे। थानाध्यक्ष फाफामऊ आशीष सिंह सिसोदिया का कहना है कि कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। छात्रा पढ़ाई के चलते कई दिनों से तनाव में थी, ऐसा परिवार के लोगों ने ही बताया है। सच्चाई क्या है, ये घरवाले ही जानते हैं मगर लोग हैरान-परेशान हैं।

चेयरमैन ने कम्युनिटी हेल्थ वर्करों को बांटे वीर निशुल्क लैपटॉप

सभी वर्करों को अधीक्षक ने डाटाबेस अपलोड करने का दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

रत्योंरा। ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं को सरल एवं सुगम तरीके से मुहैया कराने के उद्देश्य से सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में तैनात कम्युनिटी हेल्थ वर्करों को हाईटेक बनाने का काम कर रही है। जिसके क्रम में शासन ने कम्युनिटी हेल्थ वर्करों को निशुल्क लैपटॉप मुहैया करा रही है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर नगर पंचायत कोरांव के अध्यक्ष नरसिंह कुमार केसरी उर्फ गोपाल जी एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अधीक्षक डॉ केबी सिंह ने हेल्थ वर्करों को निशुल्क लैपटॉप वितरित किया। कोराव में तैनात कुल 14 कम्युनिटी हेल्थ वर्करों को निशुल्क लैपटॉप दिया गया। सामुदायिक स्वास्थ केंद्र कोरांव के अधीक्षक डॉ केबी सिंह ने सभी वर्करों को स्वास्थ्य विभाग से जुड़ी जानकारियों का डेटाबेस अपलोड करने का निर्देश दिया है। अधीक्षक ने कहा टीवी एवं कैंसर तथा अन्य गंभीर रोगों से पीड़ित लोगों का पूरा डाटा बेस कम्युनिटी हेल्थ वर्कर वेबसाइट पर अपलोड करने का काम करेंगे। इसके साथ ही साथ ऐसे गंभीर

कम्युनिटी हेल्थ वर्करों को लैपटाप वितरित करते चेयरमैन

रोगियों को चिन्हित कर उनके डेटाबेस को ऑनलाइन किया जाएगा। इसी प्रकार नगर पंचायत अध्यक्ष नरसिंह केसरी ने कहा कि सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं को सरल तरीके से मुहैया कराने के लिए कटिबद्ध है। जिसके क्रम में कम्युनिटी हेल्थ वर्करों को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस किया जा रहा है। ग्रामीणों को उपचार में किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत न हो इसके लिए सरकार पूरी तरह संवेदनशील है।

एसएसपी ने झूंसी इंस्पेक्टर को किया लाइन हाजिर

वैभव सिंह को मिला झूंसी थाने का कार्यभार

झूंसी। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अजय कुमार ने गुरुवार को झूंसी इंस्पेक्टर एसपाल सिंह को लाइन हाजिर कर दिया अतिरिक्त प्रभारी धर्मेंद्र यादव को विवेचना सेल अपराध शाखा भेज दिया साथ ही एसओजी प्रभारी वैभव सिंह को झूंसी थाने का प्रभारी निरीक्षक व पीआरओ वरिष्ठ अधीक्षक अजय कुमार मिश्रा को वरिष्ठ उप निरीक्षक बनाया। बताया जाता है जन सुनवाई के दौरान कुछ लोगो ने एसएसपी प्रयागराज से झूंसी प्रभारी निरीक्षक रहे यशपाल सिंह के सीयूजी फोन न उठाने की शिकायत की जिसपर एसएसपी ने जन शिकायत प्रकोष्ट के दारोगा से झूंसी थाने के सीयूजी नम्बर पर पाच बार फोन कराया पर सीयूजी नही उठा एसएसपी ने अपने नम्बर से काल कर फोन न उठाने का कारण पूछा जिसपर इंस्पेक्टर सन्तोष जनक जवाब नही दे पाए जिसके लिए उन्हें तत्काल प्रभाव से लाइन हाजिर कर दिया।

बिना डिग्री के हॉस्पिटल चला रहे फर्जी डाक्टर पर नहीं हो रही कार्रवाई!

अखंड भारत संदेश

लेडियारी। कोरांव थाना क्षेत्र के रत्योरा बाजार में बिना डिग्री का डॉक्टर हॉस्पिटल चला रहा है। इतना ही नहीं हॉस्पिटल का रजिस्ट्रेशन किसी और के नाम से बताया जा रहा है, किंतु उसे चलाता कोई और है। मौजूदा समय में आशीष यादव नामक व्यक्ति उर्मिला हॉस्पिटल का संचालन कर रहा है। चचाओं पर गौर करें तो उसके पास कोई डिग्री नहीं है डी फार्मा कोर्स किया हुआ है। मेडिकल स्टोर के लिए ऑथराइज है। लेकिन वह अस्पताल चलाकर क्षेत्रीय मरीजों का गलत उपचार कर जान लेने पर उतारू है। इलाज दौरान अस्पताल परिसर में मौत अब तक हो चुकी हैं । परिजनों ने हंगामा भी काटा था, किंतु बिना डिग्री का डॉक्टर आशीष यादव अपने साथियों के साथ कई मरीजों के परिजनों को गुमराह कर शहर ले जाने की बात कह कर अस्पताल से भगा देता है जबकि स्थानीय लोगों की मानें तो

क्षेत्रीय मरीजों का गलत उपचार जान लेने पर उतारू

कई मरीजों की मौत अस्पताल में ही हो गई है। बाजार व अस्पताल के आसपास के लोगों ने बताया कि लगभग एक वर्ष पूर्व गजरिया गांव की रहने वाली एक 6 वर्षीय बालिका की भी गलत उपचार के कारण उर्मिला हॉस्पिटल में मौत हुई थी। उस समय भी शिकायत के बाद भी विभागीय अफसरों के द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई थी। जिससे बिना डिग्री के अस्पताल संचालक के हौसले बुलंद हैं।

लोगों ने बताया कि उर्मिला हास्पिटल का रजिस्ट्रेशन किसी और के नाम से है। जिसे आशीष यादव नामक व्यक्ति चलाता है। जिसके नाम से रजिस्ट्रेशन है वह अस्पताल में कभी नहीं आता है न तो कभी दिखाई देता है। आशीष यादव ही अस्पताल का सर्वे सर्वा है इसी के ऊपर उपचार आदि की जिम्मेदारियां हैं। रत्योरा बाजार का उर्मिला हॉस्पिटल तो महज बानगी है। कोराव तहसील क्षेत्र एवं विकास क्षेत्र में दर्जनों ऐसे हॉस्पिटल संचालित हो रहे हैं जिनका न तो पंजीयन और रजिस्ट्रेशन है और न ही कोई चिकित्सक बैठते हैं। झोलाछाप डॉक्टर अस्पताल व क्लीनिक चला रहे हैं, किंतु विभाग मूकदर्शक बना हुआ है। ऐसे में गरीब जनता का यह झोलाछाप डॉक्टर शोषण कर खुद जहां मालामाल हो रहे हैं। वही गलत उपचार कर मरीजों की जान लेने का भी काम कर रहे हैं। कई ऐसे हादसे हो चुके हैं। इसके बावजूद भी स्वास्थ्य महकमा कान में तेल डाले बैठा हुआ है। स्थानीय लोगों ने बिना रजिस्ट्रेशन के संचालित हो रहे क्लीनिको, अस्पतालों एवं बिना डिग्री के डॉक्टर बने झोलाछापो पर कार्रवाई करने की मांग की है। क्षेत्र के लेडियारी बाजार, खीरी बाजार, बड़ोखर, देवघाट, खजुरी, महुली, हाटा, रामपुर आदि बाजारों में बिना रजिस्ट्रेशन के मेडिकल स्टोर अस्पताल क्लीनिक चल रहे हैं, किंतु जिम्मेदार उदासीन बने हुए हैं।

बारात में विवाद होने पर दांत से काटकर युवक को किया घायल

अखंड भारत संदेश

करछना। थाना क्षेत्र के ग्राम सभा भरहा में विनोद कुमार की लड़की की बारात आई थी जिसमें खाना खाते समय गांव के ही नन्दलाल पटेल पुत्र स्वर्गीय गोविंद प्रसाद का किसी कारण वश बारातियों से हाथापाई शुरू हो गई जिसे देख गांव के ही श्यामबहादुर पुत्र इन्द्रजीत वहां पहुंच गए और किसी तरह झगड़ा शांत कराकर वहां से सबको हटा दिया।इसके बाद रात 12 बजे के लगभग जब श्यामबहादुर अपने घर लौट रहे थे तो अपने घर थोड़ी दूरी पर ही नन्दलाल नें श्यामबहादुर को अचानक जमीन पर पटकर दिया और एक तरफ उनके ओंठ और दाढ़ी के बीच के मांस को चमड़े सहित दांत से काटकर घायल करके खून से लथपथ छोड़कर भाग निकला। दर्द से तड़पते गांव को कुछ लोगों ने देखा तो तुरंत अस्पताल में ले जाकर भर्ती करवा दिया। अगले दिन की सुबह करछना थाने में रिपोर्ट दर्ज कर इन्हें थाने से सरकारी अस्पताल में इलाज के लिए भेजा गया फिर मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर लिखा पढ़ी करके घायल को कार्यवाही का आश्वासन देकर परिजनो के साथ घर भेज दिया गया। परंतु अभी तक पुलिस प्रशासन की ओर से मौके पर जाकर कोई छानबीन नहीं की गई । जिससे दोषी का हौसला अब भी बुलंद है। और घायल युवक अंदर अभी भी भय व्याप्त है।

दबंगों ने जलाए एक दर्जन हरे पेड़ और पौधे, पीड़ित ने दी तहरीर

सोरांव। गहरपुर मालाका निवासी अमरनाथ पटेल पुत्र मिठाई लाल का आरोप है कि 31 मई को मैं काम करने प्रयागराज गया था। तभी गांव के ही बड़के पुत्र श्रीनाथ ने मेरे भाग में आम भूंजने के बहाने पत्तियों का ढेर इकट्ठा कर आग लगा। दिए जिससे मेरे बाग में लगभग एक दर्जन आम, महुआ और गूलर के हरे पेड़ जल गए और झुलस भी गए। बगल में स्थित समर सेबुल से गांव के लोगों ने घंटो मेहनत करके आग पर काबू पाया। शाम को जब मैं इसकी शिकायत आग लगाने वाले व्यक्ति से करने गया। तो वह मुझे परिवार सहित लाठी-डंडे और सरिया लेकर मेरे घर पर चढ़ आया। और मुझे गंदी-गंदी गालियां देने लगा। इतना ही नहीं दबंग विपक्षी मेरे घर आने जाने वाले रास्ते को लाठी डंडे लेकर अपने कुछ अज्ञात साथियों की मदद से घेर कर मुझे मारने के उद्देश्य से बैठे रहते हैं। जिससे मेरा परिवार दर के कारण उस रास्ते से न आकर खेत की पगडंडी से आता जाता है। दबंगों की दबंगई से पीड़ित का परिवार बहुत डरा सहमा है। इसको लेकर गुरुवार को पीड़ित ने सोरांव थाने में तहरीर देकर दबंग विपक्षियों पर कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है।

विश्व पर्यावरण दिवस : बनाई वृहद वृक्षारोपण की रणनीति

बन विभाग सहित विकास विभाग की हुई बैठक, वृक्ष लगाने के बाद हो उनका संरक्षण करें लोग : दिनेश कुमार

अखंड भारत संदेश

रत्योंरा। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को वृहद वृक्षारोपण की तैयारियों को लेकर को खंड विकास अधिकारी कोरांव के साथ क्षेत्रीय वन अधिकारी के बीच संयुक्त बैठक बीआरसी कोरांव में प्रशिक्षण के दौरान आयोजित की गई। खंडविकास अधिकारी कोरांव मुकेश कुमार के द्वारा प्रत्येक ग्राम पंचायतों में तैनात रोजगार सेवक, ग्राम विकास अधिकारी सहित तकनीकी सहायको को सख्त निर्देश देते हुए समय से वृक्षारोपण के कार्यों को सकुशल संपन्न कराने का निर्देश दिया। बीडीओ ने कहा कि सभी ग्राम पंचायतों में शासन के मंशा के अनुरूप वृक्षारोपण के जो लक्ष्य दिए गए हैं उनके गड्ढे जो अभी खुदने बाकी हैं तत्काल उन्हें

खुदवाने का कार्य प्रत्येक ग्राम पंचायतों में किया जाए। बरसात के मौसम को दृष्टिगत रखते हुए आने वाले दिनों में हमें अपने वातावरण को स्वच्छ एवं हरा-भरा रखने हेतु पौधे अवश्य रोपित करने चाहिए। पेड़ हमारे लिए विभिन्न रूपों में औषधि का भी काम करते हैं। साथ ही हमारे स्वास्थ्य हेतु पेड़ों का अत्यधिक महत्व है। पेड़ों को लगाने के उपरांत उनकी जीवितता पर सभी लोग विशेष रुप से ध्यान दें जिससे अधिक से अधिक पौधे सरवाइव कर सकें।

वन विभाग के द्वारा भी बताई गई पौधरोपण की विधि

पौधरोपण को लेकर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला में विकास विभाग के उपस्थित जिम्मेदारों को प्रत्येक ग्राम पंचायतों में कैसे पौधरोपण किया जाय उसकी विधि पर भी क्षेत्रीय वन अधिकारी दिनेश कुमार के द्वारा आवश्यक बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया। सर्वप्रथम गड्ढों की खुदाई के उपरांत पौध रोपण करते समय प्लास्टिक की झिल्ली को निकालने की विधि के साथ-साथ समयानुसार सिंचाई और निराई के साथ देखभाल व सुरक्षा विधि पर भी पंचायतों में तैनात कर्मियों को जानकारियां दी गई। सर्वाधिक ऑक्सीजन देने वाले पौधे के विषय में भी जानकारियां दी गई। एक दिवसीय प्रशिक्षण में प्रमुख रूप से विकासखंड कोरांव के समस्त ग्राम पंचायतों मैं तैनात ग्राम विकास अधिकारी तकनीकी सहायक, रोजगार सेवक के साथ वन विभाग से वन दरोगा रमेश कुमार, आशीष पटेल, गुलजार मौके पर मौजूद रहे।

पेयजल और बिजली की समस्या का निराकरण जरूरी : डॉ.पाण्डेय

अखंड भारत संदेश

पेयजल की पुरानी योजनाओं को चालू करने हेतु मिशन ने लगाई गुहार

बैठक में सांसद एवं विधायकों ने पेयजल की समस्या पर चर्चा करते हुए

करछना। प्रयागराज भीषण गर्मी के दिनों में जमुनापार के कई क्षेत्र में लोगों को पानी के अभाव से जूझना पड़ रहा है। यहां लापर,डाबर और पाठा क्षेत्र में पेयजल की गम्भीर समस्या को देखते हुए पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री और हेमवती नंदन बहुगुणा के प्रयास से लगभग 600 गांवों में जलापूर्ति करने हेतु धनावल, देवघाट, कोहड़ार घाट, नारीबारी पेयजल योजनाएं बनाई गई थी।जिनका वर्तमान जर्जर हो चुका है और फिर से योजनाओं को पुनरजीवित किया जाना जरूरी है। यह बातें सर्किट हाउस में प्रयागराज की सांसद डॉ. रीता बहुगुणा जोशी,विधायक वास्चपति समेत कई स्थानीय विधायकों,पेयजल योजनाओं व विद्धुत विभाग के आला अधिकारियों की बैठक के दौरान मिशन के संयोजक डॉ. भगवत पाण्डेय ने कही। उन्होंने कहा कि गर्मी के दिनों में जलस्तर नीचे जाने और कई इलाके पथरीले होने के कारण जगह-जगह बोरिंग करना दुर्लभ कार्य है ।इससे पेयजल के मिशन को सफल नहीं बनाया जा सकता बल्कि पुरानी और शास्त्री जी के समय की योजनाओं को जो नदियों से पानी उठाकर उसे शुद्ध कर गांवों तक सप्लाई करती थी फिर से जिंदा कर मकसद को पूरा किया जा सकता है। मिशन ने इसके लिए कईबार इसके लिए आवाज उठाई है। मौके पर मौजूद सांसद डा0 रीता बहुगुणा जोशी ने कहा कि गांवों में कई एकल समूह योजनाए चल रही है किन्तु फिर भी सुदूर क्षेत्रों में कहीं कहीं पानी का अभाव है।डॉ.पाण्डेय की बातों का समर्थन करते हुए उन्होने शासन स्तर से पेयजल की समस्या को दूर कराये जाने पर जोर भी दिया।विधायक बारा डा0 वास्चपति ने नारी बारी पेयजल मुद्धे को उठाते हुए अधिकारियों को कई दिशा निर्देश दिए।बैठक के दौरान बिजली का भी मुद्धा उठाते हुए डा0 पाण्डेय ने कहा कि कई छोटे तपके के अधिकारी कर्मचारियों के चलते धन उगाही का कार्य किए जाने से सुचारू रूप से लोगों को बिजली नही मिल पाती। काफी दिनों से जमे ऐसे कर्मचारियों और अधिकारियों को हटाया जाना चाहिए।बैठक में कई विभागीय अधिकारी, क्षेत्रीय जन प्रतिनिधि भी मौजूद रहे।

भारतगंज बाजार से हटवाया गया अतिक्रमण, काटा गया चालान

मांडा। नगर पंचायत भारतगंज बाजार में अतिक्रमण हटाने को लेकर अभियान चलाया गया। इसमें रेहड़ी वाले दुकानदारों को नसीहत देते हुए दुकानों को हटवाया गया। साथ ही बाजार में अनावश्यक खड़े वाहनों के कारण लगे भीषण जाम से आक्रोशित पुलिस ने कई वाहनों का तत्काल चालान काट दिया। इससे बाजार में हड़कंप मचा हुआ है।मांडा ब्लॉक के नगर पंचायत भारतगंज बाजार में बुधवार की शाम ईओ स्वतंत्र प्रताप सिंह के नेतृत्व में सीएम योगी आदित्यनाथ के निर्देश के अनुपालन में बाजार से अतिक्रमण हटाने की नसीहत दी गई। साथ ही रेहड़ी वाले दुकानदारों को निर्देशित किया गया कि ऐसे स्थानों पर दुकान लगाए,जहा जाम की स्थिति न हो सके। बताया गया कि जिन दुकानों के सामने जाम की स्थिति देखी गई। उन दुकानदारों पर ही कठोर कार्यवाही की जाएगी। इसके अलावा पुलिसकर्मियों ने बाजार में खड़े पांच वाहनों का तत्कालीन चालान काट दिया। इससे वाहन चालकों में हड़कंप मचा रहा।उधर भारतगंज पुलिस चौकी प्रभारी दुर्गेश सिंह ने चेतावनी देते हुए दुकानदारों से कहा है कि जिन दुकानों पर वाहनों को खड़ा करते पाया गया। वाहनों को सीज करते हुए दुकानदार पर भी आवश्यक कार्यवाही की जाएगी।

बार एसोसिएशन कोरांव की आम सभा की बैठक संपन्न

अखंड भारत संदेश

वकीलों ने तहसीलदार विशाल कुमार शर्मा के विरुद्ध ठोंकी ताल, लगा भ्रष्ट्राचार का आरोप

बार एसोशियेसन कोराव के अधिवक्ताओं ने तहसीलदार के भ्रष्ट्राचार युक्त सिस्टम के विरुद विगुल बजाते हुए

कोरांव। बार एशोसिएशन तहसील कोरांव के अधिवक्ताओ की आम सभा की बैठक संपन्न हुई,जिसमें अधिवक्ताओ ने तहसीलदार डॉक्टर विशाल शर्मा के प्रति जमकर भड़ास निकाली । और कहा कि तहसीलदार अपना रवैया सुधार ले नही उनके प्रति हम सब एकजुट होकर न्यायिक कार्य से विरत रहेंगे , जिसकी जिम्मेवारी शासन प्रशासन की होगी। बताते चले कि तहसील कोरांव विशाल शर्मा जब से तहसीलदार बन के आये हैं,तभी से धन ऐंठने के लिए एक सिस्टम बना दिया,सिस्टम का अर्थ सुविधा शुल्क की व्यवस्था। अधिवक्ताओ,और फरियादियों ने आरोप लगाया कि तहसीलदार सिस्टम से आने की बात करते हैं, जिससे अधिवक्ताओ में भारी आक्रोश व्याप्त है। जिसके क्रम मे बार बार एशोसिएशन के अध्यक्ष उमाकांत तिवारी के नेतृत्व में अधिवक्ताओं की आम सभा की बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता अध्यक्ष उमाकान्त तिवारी ने करते हुए कहा कि बार और बेंच का सम्बंध मधुर होना चाहिए, जिससे न अधिवक्ताओ को दिक्कत हो न ही फरियादियों को। लेकिन तहसीलदार द्वारा भ्रष्ट्राचार में नियंत्रण के बजाय और रफ्तार तेज कर दी। आरोप है कि बंधक की फाइल, नोट्यूज, डे बाई डे, आदि कार्यो मे धनराशि लिया जाना काफी दुर्भाग्यपूर्ण है। आगे कहा कि तहसीलदार यदि अपना रवैया नही सुधारते तो उनके विरुद्ध हम सब अधिवक्ता एक होकर न्यायिक कार्य से विरत रहेंगे । सभा मे अधिवक्ताओ के हित के लिएअन्य विन्दुओं पर भी अध्यक्ष जी ने प्रकाश डाला ।संचालन मंत्री कैलाश नाथ सिंह ने किया, इस सभा मे हेमवती सिंह, मोतीलाल कुशवाहा, बालगोविन्द पाण्डेय, रोहणी तिवारी, मंत्री कैलाश नाथ सिंह ने भी अपने अपने विचार रखे।इनके अलावा विनीत मिश्रा, राजू दुबे, सुनील पाण्डेय, यादवेंद्र अहीर, रवि प्रकाश तिवारी, संतोष कुशवाहा, भास्कर यादव आदि अधिवक्ता मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

झाड़-फूंक कराने गई युवती को नशीला पदार्थ पिलाकर किया दुष्कर्म

हंडिया। उतरांव थाना क्षेत्र के हसनपुर गांव में एक तांत्रिक ने युवती को अपनी प्रेम जाल में फंसा कर दो साल दुष्कर्म किया। उसके बाद युवती को मारपीट कर भगा दिया। युवती ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की।युवती ने बताया कि वह बीमार रहती थी। झाड़-फूंक से अपना इलाज कराती थी। युवती ने आरोप लगाया कि तांत्रिक उसे नशीला पदार्थ खिलाकर उसके साथ दुष्कर्म करता था। इसी बीच तांत्रिक उसे प्रेम जाल में भी फंसा लिया। तांत्रिक प्रेम जाल में फंसाकर उसे मुंबई ले गया। वहां उसके साथ तांत्रिक ने दो साल तक दुष्कर्म किया। इसके बाद आरोपी उसे कोर्ट मैरिज करने के बहाने गांव ले आया। युवती को जान से मारने की धमकी देते हुए मारपीट कर भगा दिया। मामले की शिकायत पीड़िता ने नजदीकी थाने में की। साथ ही उच्च अधिकारियों से न्याय की गुहार लगाई। डीएम और एसएसपी से युवती ने फरियाद की तो अफसरों ने तांत्रिक के खिलाफ कार्रवाई का आदेश दिया ।

गर्ल्स हॉस्टल के वॉशरूम में मिला कैमरा, हॉस्टल संचालक गिरफ्तार

हॉस्टल की लड़कियों को नहाते हुए देखता था युवक, कम पैसे में कमरा देख कर लड़कियों का बनाता था वीडियो

अखंड भारत संदेश

पुलिस के गिरफ्त में हॉस्टल संचालक

गिरफ्त आरोपी के पास से हार्ड डिक्स व कंप्यूटर हुआ बरामद

पुलिस लाइन के पास मौजूद हॉस्टल

प्रयागराज। शहर के म्योहाल चौराहे स्थित एक गर्ल्स हॉस्टल में हंगामा के दौरान पुलिस ने एक ऐसे युवक को गिरफ्तार किया है जिसने अपने गर्ल्स हॉस्टल के बाथरूम में स्पाई कैमरे लगा रखे थे। वह लड़कियों को बाथरूम में नहाते हुए लाइव देखता था। इस बात का खुलासा तब हुआ, जब एक छात्रा गुरुवार को हॉस्टल में कमरा लेने के लिए गई थी।बाथरूम में जाने पर उसे कुछ शक हुआ। उसने बाथरूम के शावर को चेक किया तो उसमें स्पाई कैमरा निकला। छात्रा ने वहीं पर हंगामा शुरू कर दिया। उसके दोस्त ने डायल 112 पर फोन करके पुलिस को बुला लिया। पुलिस ने आरोपी आशीष खरे को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी प्रयागराज के आई सर्जन बीके खरे का बेटा है।

लड़कियों को नहाते हुए देखता था : आशीष खरे ने बाथरूम में स्पाई कैमरा लगाने के बाद सबसे पहले खुद को नहाते हुए रिकॉर्ड किया। इसके बाद यह देखा कि किस-किस एंगल से वीडियो शूट हो रहा है। इसके बाद उसका एंगल सेट किया। ताकि वह लड़कियों के नहाते हुए हर एंगल से वीडियो रिकॉर्ड हो सके। इसके लिए उसने एक कंप्यूटर लैब बना रखी थी। वहां बैठकर लड़कियों को नहाते हुए देखता था। वीडियो रिकॉर्ड और मिक्स करता था। पुलिस को जांच में कई लड़कियों के नहाते हुए क्लिप मिले हैं।

कंप्यूटर लैब में मिलीं आपत्तिजनक चीजें : डॉ. बीके खरे का दो मंजिला घर पुलिस लाइन के पास ही है। पुलिस ने जब वहां जांच शुरू की, तो उनके इकलौते बेटे आशीष खरे के कमरे से कई आपत्तिजनक चीजें मिलीं। इनमें कंडोम और लड़कियों के अंडरगारमेंट्स भी शामिल हैं। इन चीजों के मिलने से साफ है कि वह लड़कियों को उनकी अश्लील वीडियो दिखाकर यौन शोषण भी करता था। जांच में कंप्यूटर में कई अश्लील वीडियो मिले हैं।

पोर्न साइट्स पर वीडियो शेयर करने की आशंका : क्षेत्राधिकारी कर्नलगंज, अजीत सिंह चौहान ने बताया कि उसके कंप्यूटर में कई अश्लील वीडयो मिले हैं। कंप्यूटर और उसकी हार्ड डिस्क सबूत के तौर पर सील कर दी गई है। जांच में अश्लील वीडियो को पोर्न वेबसाइट्स पर भी बेचे जाने की आशंका है। इसकी भी जांच की जाएगी। शुक्रवार को आरोपी आशीष को कोर्ट में पेश कर पुलिस रिमांड लेने के लिए कोशिश करेगी।

कम किराए के चक्कर में लड़कियां लेती थीं कमरा : आशीष खरे अपने मकान के 4 कमरों को केवल लड़कियों को ही किराए पर देता था। अमूमन शहर में जो किराए का रेट है, वह उससे करीब आधे रेट पर कमरे का किराया लेता था। सस्ते के चक्कर में लड़कियां कमरा ले लेती थीं। जब तक लड़कियों को आशीष की करतूत के बारे में पता चलता था, उनकी अश्लील वीडियो उसके हाथ में होती थी। इसके बाद वह उन्हें ब्लैकमेल करने लगता था। लोक-लाज के डर से कोई भी लड़की पुलिस के सामने शिकायत लेकर नहीं पहुंची।

संगम पर बड़े हनुमान मंदिर के नाम पर कब्जा की गई भूमि खाली कराएगी सेना

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। आवंटित भूमि से अधिक क्षेत्रफल पर अवैध दुकानों के अलावा मनमाना तरीके से गराए गए रैंप और अन्य निमार्णों को लेकर संगम किनारे स्थित बड़े हनुमान प्रबंधन की मुश्किलें बढ़ सकती हैं। सेना ने मंदिर परिसर के आसपास से अवैध निर्माण और अतिक्रमण हटाने के लिए नोटिस जारी किया है। सेना चाहती है कि मंदिर प्रबंधन खुद से अवैध निमार्णों को हटा ले। अगर ऐसा नहीं किया गया तो सेना की ओर से अवैध निर्माण हटाने की कार्रवाई शुरू की जा सकती है।मठ बाघंबरी गद्दी और संगम स्थित बड़े हनुमान मंदिर के महंत और अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष रहे नरेंद्र गिरी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत होने के बाद सेना ने एक बार फिर अभी भूमि खाली कराने के लिए पहल शुरू कर दी है। सेना की ओर से प्रयागराज मेला प्राधिकरण को भूमि की पैमाइश कराने के लिए कहा गया है। बड़े हनुमान मंदिर के आसपास मूल मंदिर के अलावा परिसर का क्षेत्र काफी बड़ा है। इसमें कई दुकानें बन गई। मौजूदा समय वहां लड्डू के अलावा, पूजा और प्रसाद की कई अवैध दुकानों का निर्माण करा लिया गया है।इन दुकानों का संचालन मंदिर प्रबंधन ही अपने आदमियों से करवा रहा है और इससे हर महीने लाखों रुपये की कमाई की जा रही है। इसके अलावा मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं की भीड़ को नियंत्रित करने के लिए मंदिर प्रबंधन ने रैंप का भी निर्माण कराया है। यह रैंप भी मंदिर को आवंटित भूमि के अलावा है। इस पर सेना ने आपत्ति जताई है।

2019 में भी भेजा गया था नोटिस

सेना ने नोटिस जारी कर मंदिर के लिए आवंटित भूमि के अलावा अन्य सभी निमार्णों को हटाने के लिए कहा है। इससे पहले वर्ष 2019 में भी संगम स्थित बड़े हनुमान मंदिर को आवंटित भूमि से अधिक क्षेत्रफल पर अवैध कब्जा और निर्माण का मुद्दा उठ चुका है। तब सेना ने अवैध निर्माण हटाने के लिए मंदिर प्रबंध को जब नोटिस जारी किया तब तत्कालीन महंत नरेंद्र गिरि ने रक्षा मंत्रालय से मदद की गुहार लगाते हुए मोहलत मांगी थी।इस मामले पर रक्षामंत्रालय से मार्ग दर्शन प्राप्त किया जा रहा है। संगम स्थित हनुमान मंदिर को आवंटित भूमि से अधिक क्षेत्रफल पर अवैध निर्माण के मामले में अब तक की प्रगति के बारे में जल्द ही अवगत कराया जाएगा। -समीर गंगखेडकर, क्षेत्रीय पीआरओ -रक्षामंत्रालय, प्रयागराज क्षेत्र।

मुक्त विश्वविद्यालय को मिले दो प्रोफेसर और एक निदेशक

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय को एक निदेशक और दो नए प्रोफेसर मिल गए हैं। इसी के साथ विश्वविद्यालय में कार्यरत आधा दर्जन के प्रोन्नत को कार्य परिषद ने अंतिम मुहर लगा दी है। गुरुवार को कुलपति प्रो.सीमा सिंह की अध्यक्षता में हुई कार्य परिषद की बैठक चयन समिति के लिफाफे खोले गए। बैठक में प्रशांत कुमार अस्टालिन को निदेशक शिक्षा शास्त्र, डॉ. अजेंद्र कुमार मलिक को प्रोफेसर गणित और डॉ. जय प्रकाश यादव को प्रोफेसर जंतु विज्ञान के पद पर नियुक्त किया गया। कैरियर अभिवर्धन योजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष को वरिष्ठ वेतनमान, चयन वेतनमान, एसोसिएट प्रोफेसर, उप पुस्तकालयाध्यक्ष पदनाम एवं वेतनमान के संबंध में विभिन्न स्क्रीनिंग एवं चयन समितियों की संस्तुतियों पर विचार किया। कार्यपरिषद ने कैरियर अभिवर्धन योजना के अंतर्गत डॉ. श्रुति, डॉ. मीरा पाल, डॉ. ज्ञान प्रकाश यादव, डॉ. देवेश रंजन त्रिपाठी, डॉ. गिरीश कुमार द्विवेदी एवं डॉ. दिनेश सिंह को एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर प्रोन्नत करने का निर्णय लिया। डॉ. राम जनम मौर्या को उप पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर प्रोन्नत किया। असिस्टेंट प्रोफेसर सुनील कुमार एवं मनोज कुमार बलवंत को स्टेज-2 पर प्रोन्नत किया गया। बैठक में प्रो. निर्मला एस मौर्य, डॉ. गोविंद शेखर, अभय सिंह, प्रो. प्रेम प्रकाश दुबे, प्रो. सत्यपाल तिवारी, प्रो. पीके पांडेय, डॉ. आनंदानंद त्रिपाठी, डॉ. साधना श्रीवास्तव आदि मौजूद रहीं।

शासन के एक्शन में आते ही सीएमओ ने जांच पड़ताल कर देखी साफ सफाई की व्यवस्था

सीएमओ और एडी हेल्थ ने काल्विन अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में जाकर रोगियों का पूछा हाल

अखंड भारत संदेश

डॉक्टरों के साथ जांच पड़ताल करते सीएमओ प्रयागराज

प्रयागराज। अस्पतालों में अव्यवस्था के चलते कहीं शासन का चाबुक न चल जाए, गुरुवार को स्वास्थ्य विभाग के शीर्ष स्तर तक इसका खौफ बना रहा। एडी हेल्थ डा. विमलेंदु शेखर और सीएमओ डा. नानक सरन एक साथ जा पहुंचे मोतीलाल नेहरू मंडलीय चिकित्सालया यानी काल्विन अस्पताल। पहले से भनक लगने पर इन अधिकारियों को सब ओके दिखाने की कसरत शुरू हो गई।सभी डाक्टर एप्रेन में, मास्क लगाए और अपनी-अपनी ड्यूटी पर मुस्तैद हो गए। सीएमओ ने वार्ड और ओपीडी कक्ष से लेकर शौचालय के भीतर तक जाकर जांच परख की। निर्देश दिया कि जो भी कमियां हों उसे ठीक कर लिया जाए।दोपहर करीब डेढ़ बजे सीएमओ और एडी हेल्थ ने काल्विन अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में जाकर रोगियों का हाल पूछा। शौचालय के भीतर जाकर सफाई की स्थिति देखी। जहां कमी मिली उसे ठीक करने का निर्देश दिया। सर्जिकल मेल वार्ड, रसोईघर के सामने वार्ड के प्रवेश द्वार पर लगे वाटर कूलर को देखा। उसमें ठंडा पानी नहीं आ रहा था एक टोटी से तो पानी निकल ही नहीं रहा था। सीएमओ ने इसे ठीक कराने, एक टोटी से ठंडा और दूसरी टोटी से सादे पानी का इंतजाम रखने का निर्देश दिया।इमरजेंसी कक्ष में जाकर डाक्टरों के क्रियाकलाप को समझा। रोगियों, घायलों के उपचार के दौरान लिखापढ़ी पर कुछ सुधार के निर्देश दिए।

सुबह-शाम के खाना-नाश्ता की ली जानकारी

वार्ड में भर्ती लोगों से इलाज, दवाएं मिलने, डाक्टरों के राउंड पर आने और सुबह शाम मिलने वाले खाने-नाश्ते के बारे में पूछा। यह भी पूछा कि उपचार के बदले कोई पैसे की मांग करता हो तो बताएं। हालांकि पलंग के पास प्रमुख चिकित्सा अधीक्षक, डाक्टरों, नर्सों के रहने के कारण रोगियों ने सीएमओ को सब ठीक बताया। निरीक्षण के समय प्रमुख चिकित्साधीक्षक डा. इंदु कनौजिया भी मौजूद रहीं।

नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय के एलएलबी विभाग ने मलिन बस्ती के बच्चों को पढ़ाई के प्रति किया जागरूक

शिक्षा जागरूकता अभियान के तहत नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय के एलएलबी विभाग द्वारा बच्चों को जागरूक करते

अखंड भारत संदेश

गरीब बच्चों के निशुलक अध्ययन के लिए प्रवेश की दी विस्तृत जानकारी, 6-14 वर्ष आयु के 65 बच्चों ने कराया अपना नामांकन

6 जून से अपराह्न 2-3 बजे हनुमानगंज परिसर में कक्षाएं होंगी संचालित

प्रयागराज। गुरुवार को नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय) के बी. ए. एल. एल. बी. विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के हनुमानगंज परिसर के पास की मलिन बस्ती में जाकर गरीब परिवार के बच्चों को पढ़ाई के प्रति जागरूक किया गया तथा बी. ए. एल एल. बी. के छात्र - छात्राओ द्वारा संचालित किए जा रहे गरीब बच्चों के अध्ययन हेतु निः शुल्क प्रवेश की जानकारी उपलब्ध कराई गई। जिसमे 6 वर्ष से 14 वर्ष के कुल 65 बच्चों ने अपना नामांकन कराया। कक्षाओं का संचालन बी. ए. एल. एल बी. विभाग द्वारा दिनांक 06/06/2022 को अपरान्ह 2 से 3 बजे तक हनुमानगंज परिसर मे किया जायेगा। जागरूकता कार्यक्रम में अधिष्ठाता, विधि संकाय डॉ॰ स्वप्निल त्रिपाठी, श्री विनीत प्रताप सिंह और पराविधिक स्वयं सेवक, विधिक सेवा प्राधिकरण प्रयागराज, शिवांश पांडेय, कार्तिकेय श्रीवास्तव, सत्यम रावत, सुधीर यादव एवं बी. ए. एल. एल. बी. के अन्य छात्र /छात्राएं उपस्थित रहे।

धमकी भरा पत्र से हड़बड़ा या मोहम्मद अकील, पुलिस से सुरक्षा की लगाई गुहार

हंडिया। अंजना गांव में भू-माफियाओं द्वारा एक पीड़ित परिवार को फर्जी मुकदमे में फंसाने तथा जान से मारने की धमकी दी जा रही है। पीड़ित ने अपने परिवार की सुरक्षा के लिए उच्च अधिकारियों से गुहार लगाई है। मामला जमीन को लेकर है जहां, दो पक्षों में जमीन को लेकर रंजिश चल रही है। मामला न्यायालय में भी विचाराधीन है।थाना हंडिया निवासी मोहम्मद अकील का आरोप है कि गांव के ही भू माफियाओं द्वारा उनके परिवार को जान से मारने और फर्जी मुकदमे में फंसाने की धमकी मिल रही है। आरोप है कि उनके दरवाजे पर एक पत्र मिला। जिसमें अकील के बेटे को जान से मारने की बात लिखी हुई थी। पत्र दीवार पर चिपका दिया। आरोप है कि दबंगों ने ग्रामसभा और भूमिधरी जमीन से सटे जमीन पर निर्माण कार्य किया जा रहा है। जिसका न्यायालय में विचाराधीन है।पीड़ित पक्ष ने बताया कि जबकि संपूर्ण अंश का न्यायालय से स्थगन आदेश भी है। उसके बावजूद भी पुलिस की मिलीभगत से दबंगों द्वारा लगातार निर्माण कार्य किया जा रहा है। वहीं निर्माण कार्य का विरोध करने पर दबंगों द्वारा पीड़ित परिवार को जान से मारने की धमकी तथा फर्जी मुकदमे में फंसाने की साजिश भी की जा रही है। जिसको लेकर पीड़ित मोहम्मद अकील ने उच्च अधिकारियों को लिखित पत्र देकर निर्माण कार्य को रुकवाने तथा अपने परिवार की सुरक्षा की मांग की है।

वार्षिक परीक्षा में हर सवाल के लिए दो मिनट, विवि ने जारी किया प्रारूप

अखंड भारत संदेश

अभ्यर्थियों को लेना होगा स्क्रीनशॉट

प्रमाण के रूप में परीक्षा के सफल समापन के बाद उम्मीदवारों को स्क्रीनशॉट/फोटो लेना होगा। घोषित प्रारंभिक समय से तीन मिनट के बाद उम्मीदवार सब्मिट बटन पर क्लिक करके अपने उत्तर जमा कर सकेंगे, अन्यथा परीक्षा अवधि पूरी होने के बाद ह्यउत्तर और उत्तर चिह्नितह्ल प्रश्न स्वचालित रूप से संरक्षित हो जाएंगे। परीक्षा सफलतापूर्वक संपन्न मानी जाएगी।

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) एवं संघटक महाविद्यालयों में स्नातक तृतीय वर्ष की ऑनलाइन परीक्षाएं सात जून से शुरू होने जा रहीं हैं। इस बार परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रकार के सवाल पूछे जाएंगे और प्रत्येक प्रश्न के लिए दो मिनट का वक्त निर्धारित किया गया है। परीक्षा दो पालियों में सुबह नौ और अपराह्न दो बजे से शुरू होगी, जबकि लॉगिन टाइम क्रमशः सुबह 8.30 और अपराह्न 1.30 बजे निर्धारित किया गया है। परीक्षा अवधि प्रश्नों की संख्या के आधार पर तय होगी। उदाहरण के तौर पर किसी प्रश्नपत्र में 75 प्रश्न हैं तो परीक्षा अवधि 150 मिनट की होगी। इविवि प्रशासन ने परीक्षा से संबंधित दिशा-निर्देश जारी कर दिए हैं।गलत सवाल के लिए कोई नकारात्मक अंक नहीं होंगे। किसी भी प्रश्नपत्र में प्रश्नों की संख्या संबंधित प्रश्नपत्र के अधिकतम अंकों के बराबर होगी। यानी प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा। स्क्रीन में एक बार में एक प्रश्न ही अपने चार विकल्पों के साथ प्रदर्शित होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए दो मिनट निर्धारित किए गए हैं। किसी भी पेपर के लिए अधिकतम समय इस परिकलित समय का न्यूनतम या तीन घंटे (जो भी कम हो) होगा। परीक्षा की पूरी अवधि के दौरान अभ्यर्थियों के पास किसी भी समय पहले से दर्ज उत्तरों को बदलने/संशोधित करने का विकल्प होगा।अभ्यर्थी जिस प्रश्न पर हैं, उससे पहले के प्रश्न पर जाने के लिए प्रीवियस बटन का प्रयोग कर सकेंगे। अभ्यर्थी चाहें तो ह्यसेव एंड नेक्स्टह्ल का प्रयोग करके बिना उत्तर दिए अगले प्रश्न पर जा सकेंगे। किसी भी प्रश्न को सुरक्षित करने के लिए ह्यसेव एंड नेक्स्टह्ल पर क्लिक करना होगा। इससे प्रश्न सुरक्षित हो जाएगा और अगला प्रश्न अभ्यर्थी की कंप्यूटर स्क्रीन पर प्रदर्शित होगा। अगर अभ्यर्थी सही विकल्प चुनने के बाद ह्यसेव एंड नेक्स्टह्ल पर क्लिक नहीं करते हैं तो उत्तर सुरक्षित नहीं होगा। केवल उन्हीं प्रश्नों का मूल्यांकन होगा जो उत्तरित एवं चिह्नित होंगे। अनुत्तरित लेकिन देखे हुए एवं चिह्नित प्रश्नों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

परानीपुर-लाक्षागृह मार्ग पर शासन को भेजा गया पक्का पुल निर्माण का प्रस्ताव

अखंड भारत संदेश

पुल के निर्माण के लिए हो रही जांच पड़ताल के दौरान उपस्थित नेता

मेजा रोड। परानीपुर-लाक्षागृह मार्ग पर पक्का पुल बनाए जाने का प्रस्ताव सेतु निगम मुख्यालय लखनऊ को भेज दिया गया है। एक माह पूर्व हुई जांच में मिट्टी पुल के लिए उपयुक्त पाई गई है। गौरतलब हो कि परानीपुर गंगाघाट से लक्षागृह घाट की दूरी लगभग 1600 मीटर है, इस पुल के निर्माण पर अनुमानित लागत 485 करोड़ आएगा।विधानसभा चुनाव के पूर्व निवर्तमान मेजा विधायक नीलम उदयभान करवरिया के नेतृत्व में अधिकारियों का एक दल परानीपुर घाट पहुंच जांच पड़ताल किया था, जिसे लेकर विपक्षियों ने जांच पड़ताल को गलत बताया था। विधानसभा चुनाव पश्चात सांसद डॉ. रीता जोशी स्थानीय लोगों की मांग पर केंद्रीय मंत्री नीतिन गडकरी से मिल परानीपुर लाक्षागृह मार्ग पर पक्का पुल बनाए जाने का पत्र सौपा था। सांसद की मांग को स्वीकार करते हुए केंद्रीय मंत्री ने राज्य सरकार व सेतु निगम से जानकारी मांगी तो सेतु निगम की टीम माहभर पहले परानीपुर व लाक्षागृह घाट पहुंच मिट्टी की जांच की। वभागीय सूत्रों की मानें तो मिट्टी जांच में सब कुछ सही पाया गया है, पक्का पुल बनाने में किसी प्रकार की परेशानी नहीं होगी। पुल बनने से मिजार्पुर प्रयागराज राष्ट्रीय राजमार्ग से यदि कोई भारी वाहन वाराणसी प्रयागराज मार्ग पर जाना चाहे तो उसे प्रयागराज अथवा मिजार्पुर तक नब्बे किलोमीटर का चक्कर लगाना होता है, हांलाकि प्रयागराज से मिजार्पुर के बीच लोगों की आवागमन के लिए आधे दर्जन पांटून पुल बनाए जाते हैं, जो छह माह से अधिक अपनी सेवा नहीं दे पाते, इस पांटून पुल के निर्माण पर शासन व विभाग को प्रतिवर्ष लाखों रूपए खर्च करने पड़ते हैं। लोगों की समस्या को देखते हुए भाजपा सरकार पक्का पुल बनाने पर पूरी तरह तैयार हो गई है।

मांडा में ट्रेन में लगी आग, कड़ी मशक्कत के बाद आग पर पाया गया काबू

अखंड भारत संदेश

मांडा। हावड़ा से चलकर दिल्ली को जा रही मालगाड़ी (पीपीजीएस पेट्रोल) में अचानक आग लग गई। इससे आसपास के लोगों सहित रेल कर्मचारियों में हड़कंप मच गया। वहीं सिग्नल जेई द्वारा ट्रेन को रूकवाया गया। फिर फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों द्वारा कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाने के बाद ट्रेन को रवाना कराया गया। उक्त आग के कारण दिल्ली हावड़ा रेलमार्ग घण्टों बाधित रहा। जिससे कई ट्रेनें प्रभावित हुई।जानकारी के अनुसार, हावड़ा से चलकर दिल्ली के लिए निकली मालगाड़ी (पीपीजीएस पेट्रोल) दरें गुरुवार की शाम मांडा रोड़ रेलवे स्टेशन पहुंची। जिसे लूप लाइन में रोककर एक्सप्रेस ट्रेन को निकाला गया। इसके बाद 5:10 बजे पर मालगाड़ी को आगे की ओर रवाना किया गया।इस दौरान खम्हा संख्या 771/05 के समीप इंजन के दूसरे बोगी में अचानक आग लग गई। इससे हड़कंप मच गया। लोगों के शोरगुल पर स्थानीय सिंग्नल जेई शिवचन्द्र बिन्द ने तत्काल ट्रेन को रूकवाया दिया। रेल कर्मचारियों ने फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों को मामले की जानकारी दी।

कड़ी मशक्कत के बाद आग पर पाया गया काबू : उक्त सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की दो गाड़िया आग बुझाने में जुट गई। कड़ी एवम घंटों मशक्कत के बाद किसी तरह आग पर काबू पाया जा सका। तब जाकर रेल कर्मचारियों ने राहत की सांस लिया। इसके बाद तकरीबन 7 बजे ट्रेन को आगे की ओर रवाना कराया गया। उक्त हादसे को लेकर हड़कंप की स्थिति बनी रही।

घंटों बाधित रहा रेलमार्ग : बतादें की उक्त आग के कारण दिल्ली हावड़ा रेलमार्ग घंटों बाधित रहा। उधर घटना को लेकर आसपास के लोगों में हड़कंप मचा रहा। बताया जाता है कि बोगी से अचानक चिंगारी निकली और बोगी में आग लग गई। हालांकि समय रहते आग पर काबू पा लिया गया।

वर्षा जल बचाने के बताये गये उपाय

प्रयागराज। अधिशाषी अभियंता, भूगर्भ जल विभाग ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया है कि उ0प्र0 भूगर्भ जल की सुरक्षा, संरक्षा, नियन्त्रण तथा विनियमन और उससे सम्बन्धित विषय के अन्तर्गत जनसंख्या वृद्धि एवं औद्योगिकीकरण के कारण जल संसाधनों की मांग में अप्रत्याषित वृद्धि होने व सिचाई, पेय जल सेक्टर्स में भू-जल पर निरन्तर निर्भरता बढने से अनेक क्षेत्रों में भू-जल के अतिदोहन से भू-जल स्तर में चिन्ताजनक गिरावट की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। वर्षा जल संचयन एवं संरक्षण हेतु जनमानस को समेकित रूप से जागरूक किये जाने हेतु जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन (यथा लघु गोष्ठी, नुक्कड़ नाटक, सेमीनार, वर्कशॉप इत्यादि) विकास खण्ड शंकरगढ़ के ग्राम-गुलरिया, गाढा कटरा, में लघु गोष्ठी का आयोजन ग्राम विकास समिति प्रयागराज के समन्वय से किया गया।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मेरी इलाहाबाद विश्व विद्यालय बीकॉम की डिग्री सर्टिफिकेट वर्ष 2008 इनरोलमेंट नंबर C 0530390 वास्तव में कहीं खो गया है।

शाजिया मेराज खान पुत्री
मेराज उद्दीन खान निवासी
37/5/1 नयापुरा जीटीवी नगर
इलाहाबाद प्रयागराज पिन नंबर
211016

जिला कारागार का बंदियों को दी गई विधिक जानकारी

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव ने किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला कारागार का सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नीरज कुमार त्रिपाठी द्वारा निरीक्षण किया गया एवं बन्दियों को विधिक रूप से जागरूक किया गया। निरीक्षण के दौरान जेलर राजेन्द्र प्रसाद चैधरी द्वारा बताया गया कि जिला कारागार में 1108 बन्दी निरूद्ध है जिसमें 960 विचाराधीन बन्दी है। इसमें महिला 30 तथा 1025 पुरूष एवं किशोर बन्दियों की संख्या 53 है। सिद्धदोष बन्दियों की संख्या 137 बतायी गयी। जेल में बन्दियों के लिये कोरोना जांच की व्यवस्था है। जिला कारागार में कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारियों को कोरोना की बूस्टर डोज लगा

जिला कारागार में बंदियों को जानकारी देते सचिव।

दी गयी है।

सचिव द्वारा जिला कारागार में स्थित महिला बैरक, जेल अस्पताल, लीगल एण्ड क्लीनिक एवं वीडियो कान्फ्रेसिंग रूम एवं जेल परिसर की साफ-सफाई का निरीक्षण किया गया। लीगल एण्ड क्लीनिक में चयनित जेल पीएलवी द्वारा किये गये कार्यो की जानकारी ली गयी एवं लीगल एण्ड क्लीनिक के अभिलेखों का निरीक्षण किया गया। प्रत्येक बैरिक में मनोरंजन के लिये टी0वी0 एवं योगा के शिक्षक भी प्रत्येक दिन आते हैं। इस अवसर पर जेल पीएलवी को निर्देशित किया गया कि जिन बन्दियों को अपने मुकदमें की पैरवी हेतु निःशुल्क पैनल अधिवक्ता की आवश्यकता है उनके आवेदन पत्र लिखित रूप में प्राप्त करके उनके आवेदन पत्र रजिस्टर में अंकित करके जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कार्यालय को उपलब्ध कराये जिससे बन्दियों को उनके मुकदमें की पैरवी हेतु निःशुल्क अधिवक्ता उपलब्ध कराया जा सके। इस अवसर पर सचिव द्वारा जिला कारागार में निरूद्ध बन्दियों को उनके अधिकारों एवं प्लीबारगेनिंग के सम्बन्ध में विधिक जानकारी देते हुये जागरूक किया गया। इस अवसर पर प्रभारी जेलर अधीक्षक डा0 आर0पी0 चैधरी एवं उप जेलर अवधेश प्रसाद राय, सुनील कुमार द्विवेदी एवं पी0एल0वी0 अमन त्रिपाठी उपस्थित रहे।

अभिनेत्री डा0 अनीता सहगल को किया गया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। देश की जानी मानी ऐंकर, शिक्षाविद, समाज सेविका, उम्दा कवयित्री, सफल अभिनेत्री डॉ. अनीता सहगल एक फिल्म कसमें वादे की सूटिंग के संबंध में प्रतापगढ़ शहर में होटल पैराडाइज, एल.आई.सी. रोड मीरा भवन चैराहे के पास अपनी फिल्म यूनिट के साथ आई। गुरुवार को वह एंजिल्स इण्टर कालेज की प्रबन्धक डॉ. शाहिदा के आवास पर गई। बता दें कि डॉ. अनीता सहगल की रचनायें एंजिल्स साझा काव्य संग्रह में निहित हैं, वह पुस्तक डॉ. शाहिदा द्वारा डॉ. अनीता सहगल को भेंट की गई। उसके बाद कुछ देर रहने के बाद डॉ. अनीता अपनी फिल्म

डा0 अनीता सहगल को पुस्तक भेंट करतीं डा0 शाहिदा।

यूनिट में वापस होटल गई। बता दें कि डॉ. अनीता सहगल 6 जून तक सूटिंग के संबंध में यहीं रुकेंगी।

मानिकपुर में अंग्रेजी शराब की दुकान में लाखों की चोरी

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। मानिकपुर थाना क्षेत्र के मिरगढ़वा में बीती रात को अज्ञात चोरों ने सरकारी अंग्रेजी शराब की दुकान को अपना निशाना बनाते हुए जमकर लूटपाट किया, जिसकी पुलिस को भनक तक नही लगी जब कि रात में पिकेट पुलिस की ड्यूटी भी क्षेत्र में रहती है घटना के समय नदारद रहे। मानिकपुर थाना क्षेत्र के मिरगड़वा स्थित सरकारी अंग्रेजी शराब की दुकान के अनुज्ञापी ठाकुर प्रकाश सिंह की पत्नी है । दुकान में बीती रात को अज्ञात चोरों ने शटर के दो ताले व अंदर की जाली का एक ताला तोड़कर व जाली काटकर 13 पेटी अंग्रेजी शराब जिसकी कीमत लगभग 77 हजार रुपया व बिक्री की दुकान में रखी रकम नगद लगभग 89810 रु0 चुरा ले गए। घटना की भनक लगते ही मकान मालिक शिवभान पुत्र प्रेम प्रकाश सोनकर ने शोर मचाया तो चोर टवेरा गाड़ी से नकदी व शराब लेकर कुंडा की ओर भाग गए। घटना कि सूचना फोन से मानिकपुर के सेल्समैन नंदलाल, रमेश मौर्य कमलेश मौर्य को दिया सभी मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी लिया जिसमे सीसीटीवी फुटेज में टवेरा वाहन सहित चोरों के वारदात का बिलकुल साफ साफ फुटेज है। घटना की तहरीर मानिकपुर पुलिस को दी गई है। पुलिस जांच पड़ताल के साथ व फुटेज के आधार पर चोरो की तलाश सरगर्मी से कर रही है।मानिकपुर थाना क्षेत्र में अब तक दो तीन बड़ी चोरियों का खुलासा नही हो सका अब देखना है कि पुलिस कितने दिनों में अंग्रेजी शराब की चोरी का खुलासा कर पाती है या फिर ठंडे बस्ते में चला जाता है यह तो पुलिस की कार्रवाई ही बता सकती है। बीती रात हुई चोरी की घटना को लेकर व पूर्व में हुई चोरियो का खुलासा न होने से ब्यापारियों में आक्रोश है।

सांगीपुर थाने के डांसर दरोगा को एसपी ने किया निलंबित

बिना अनुमति के ही सिपाही के तिलक कार्यक्रम में गया था गाजीपुर, महिला डांसर के साथ किया था अश्लील नृत्य, वीडियो हुआ वायरल

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सांगीपुर थाने में तैनात एक दरोगा ने पद की गरिमा को शर्मसार कर दिया। एक कार्यक्रम मे हो रहे आर्केस्ट्रा के मंच पर चढ़ गया और नृत्य कर रही महिला डांसर के साथ खूब धमाल मचाया। इसे देख कर सभी लोग हैरत में पड़ गए। दरोगा जी बिना विभागीय अनुमति के ही एक सिपाही के तिलक में गाजीपुर गए हुए थे। मामले को गंभीरता से लेते हुए कप्तान ने डांसर दरोगा को निलंबित कर दिया।

सांगीपुर थाने में तैनात एक दरोगा बुधवार को आयोजित एक सिपाही के तिलक कार्यक्रम में बिना विभागीय अनुमति की ही गया हुआ था। आयोजक ने मनोरंजन के लिए आर्केस्ट्रा का प्रोगाम भी किया था। सभी लोग खाना-पीना खाकर नृत्य व संगीत

महिला डांसर के साथ डांस करते दरोगा।

का आनंद ले रहे थे। गीत खत्म होते ही जैसे मंच पर एक महिला डांसर आकर नृत्य करने लगी। अश्लील गाने पर हो रहे डांस पर

कार्यक्रम में थानेदार भी थे शामिल

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सिपाही के तिलक समारोह कार्यक्रम में एसओ जीतेन्द्र सिहं भी शामिल हुए थे। वायरल फोटो में वह दरोगा राजेश यादव के ही बगल बैठे नजर आ रहे है।अब प्रश्न यह है कि इतनी बड़ी जिम्मेदारी के पद पर कार्यरत थानेदार क्षेत्र को छोड़ सैकड़ो किमी दूर पार्टी कर रहे है वही क्षेत्र में कोई घटना होती है तो उसका जिम्मेदार कौन होता? अब एक प्रश्न और खड़ा होता है कि क्या थानेदार ने गाजीपुर जाने की जानकारी उच्चाधिकारियों को दी थी या नही।यही नहीं बिना अनुमति के साथ गए डांसर दरोगा पर तो थानेदार को ही कार्रवाई हेतु उच्चाधिकारियों को अवगत करना था।लेकिन वीडियो वायरल के बाद कार्रवाई का होना कहीं न कहीं से एसओ की भी लापरवाही नजर आती है।थानेउक्त संबंध में सीओ से बात करने का प्रयास किया गया लेकिन बात नही हो सकी।

दरोगा जी बेकाबू हो गए और मंच पर चढ़ गए।

यह सब देख कर वहां मौजूद सभी लोग दंग रह गए। लोग करते ही क्या? मामला दरोगा जी का था। लोगो की माने तो महिला डांसर के साथ नशे में टल्ली साहब का डांस देखने लायक था। दरोगा जी महिला के साथ लिपट कर खूब नाचे। अश्लील गाने पर डांस को देख कर सभी लोग तरह-तरह की चर्चा करते नजर आए। इसी बीच किसी ने डांस का वीडियो बनाकर बुधवार को ही वायरल कर दिया।

अब वीडियो में महिला डांसर के साथ नृत्य करते हुए दरोगा जी की पहचान सांगीपुर में तैनात राजेश यादव के रूप में की गई। इससे पहले वह मानधाता में तैनात थे। वायरल वीडियो सांगीपुर में तैनात सिपाही वरवा,पोस्ट चोचक जिला गाजी पुर का रहने वाला राजकशोर यादव की तिलक का बताया जा रहा है। दरोगा जी के कारनामों ने पुलिस विभाग के साथ ही पद की गरिमा को शर्मसार कर दिया। उक्त मामले को गंभीरता से लेते हुए एसपी सतपाल अंतिल ने सीओ से मामले की रिपोर्ट मांगी। रिपोर्ट मिलते ही डांसर दरोगा को कप्तान ने निलंबित कर दिया।

जलस्तर नीचे जाने से समरसेबुल भी दे रहे दगा

शहर के अनेक मोहल्लों में टैंकर से हो रही जलापूर्ति

नगर पालिका के टैंकर से पानी भरती महिलाएं।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रचण्ड गर्मी में पानी का जलस्तर नीचे चले जाने से घरों में लगे समरसेबुल व नगर पालिका में मोटरों से हो रही आपूर्ति बुरी तरह से प्रभावित हुई है जिसकी भरपाई नगर पालिका टैंकर से जलापूर्ति करने का प्रयास कर रही है।

नगर के स्टेशन रोड के बगल जैन गली में नगर पालिका की नियमित जलापूर्ति कई वर्षों से हो रही थी। लगभग दो माह पहले मोटर जल जाने से जलापूर्ति व्यवस्था लड़खड़ा गई। महीनों बाद नई मोटर लगाई गई तो जलस्तर नीचे जाने से वह ठीक से जलापूर्ति नहीं कर पा रही है और जैन गली में अभी भी नगर पालिका की टोटियां सूखी पड़ी है और पेयजल के लिये लोग परेशान रहते हैं।

इस बारे में पूछने पर पता चला कि भीषण गर्मी से जलस्तर नीचे जाने से समरसेबुल भी सुचारु रुप से नहीं चल रहे हैं। वर्षा होने के बाद पानी की मोटरें पहले जैसा कार्य करने लगेगी। इस बारे में नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह का कहना है कि नई विद्युत मोटर लग जाने के बाद भी जलापूर्ति में समस्या आई तो नियमित रुप से टैंकर भेजने का निर्णय लिया गया। उन्होंने बताया कि 15 दिन बाद स्थिति सामान्य होगी। अभी जहां भी इस तरह की समस्या आ रही है, वाटर टैंकर भेजे जा रहे हैं। इसके अलावा नगर में 10 वाटर एटीएम भी कार्य कर रहे हैं।

वर्षा के पूर्व नाले-नालियों की सफाई में जुटे कर्मचारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर को साफ-सुथरा रखने के लिये नगर पालिका ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। वर्षा के पूर्व नगर के नाले-नालियों को पूरी तरह से साफ रखने के शासन के कडे. निर्देश के चलते नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह ने नगर पालिका के सफाई कर्मियों की पूरी फौज उतार दी है। गुरुवार को रेलवे स्टेशन रोड के एक तरफ नाला क्लीनिंग मशीन लगी हुई थी तो दूसरी तरफ नगर पालिका के 20 कर्मचारी फावडे. से नाले की सफाई कर रहे थे। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि हर रोज प्रातः नगर पालिका व नगर निगमों की मानीटरिंग लखनऊ में बैठे आला अधिकारी कर रहे हैं कि कहां कितना कार्य किया जा रहा है?

जमीनी विवाद हल होने से रास्ते व नाली का निर्माण का मार्ग हुआ प्रशस्त, खुशी

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर पंचायत के नेताजीपुरम् वार्ड में गुरूवार को अर्से से चले आ रहे जमीनी विवाद के सुलट जाने से अब लोगों को जलनिकासी की समस्या से राहत मिल सकेगी। नेताजीपुरम वार्ड में दो पक्षों के बीच अर्से से जमीनी विवाद के चलते रास्ते के निर्माण के साथ नाली बनाये जाने का कार्य भी नहीं हो पा रहा था। समस्या को लेकर वार्ड के लोगों ने नगर पंचायत अध्यक्ष अनीता द्विवेदी से भी समाधान कराए जाने को लेकर ज्ञापन दिया था। चेयरपर्सन के निर्देश पर गुरूवार को ईओ सुभाषचंद्र सिंह ने वार्ड के लोगों के साथ दोनों पक्षों हिंगू लाल व हीरा लाल के बीच घंटो पंचायत की। पंचायत का नतीजा भी तब सुखद दिखा जब अन्ततः ईओ सुभाषचंद्र सिंह के समझाने बुझाने पर दोनों पक्षों ने सोलह फिट जमीन रास्ते व नाली निर्माण के लिए दिये जाने की लिखित मंजूरी दे दी।

पट्टी में किसान की बेटी बनी सिस्टेंट प्रोफेसर

कड़ी मेहनत से मिली सफलता पर लोग गदगद

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। कुछ अलग करने का जुनून हो और इरादे फौलादी हो तो इंसान को मंजिल मिल ही जाती है। विपरीत हालातो से लड़ते हुए सफलता हासिल करने वाली सुमित्रा पटेल ने यह दिखा दिया कि धैर्य के साथ की गई मेहनत कभी जाया नही होती है।पट्टी तहसील क्षेत्र के कैरी जोगीपुर गांव की रहने वाली सुमित्रा पटेल के पिता रामशिरोमणि सामान्य किसान है। दो भाइयों और दो बहनों में सबसे छोटी सुमित्रा देवी के इरादे बचपन से बड़े थे। शुरूआती प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा गांव के ही स्कूल

सुमित्रा पटेल।

से किया तो हाईस्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षा शीतलागंज स्थित कालूराम इंटरमीडिएट कालेज से किया। फिर स्नातक और परास्नातक की पढ़ाई प्रतापगढ़ स्थित एमडीपीजी कालेज से पूरी किया। असिस्टेंट प्रोफेसर बनने का ख्वाब पहले से ही बुन चुकी सुमित्रा पटेल विपरीत हालात में भी प्रयागराज में तैयारी करने का मन बना लिया और लगातार तीन साल तक वहां रहकर कठिन परिश्रम करती रही। दो दिन पहले जब उत्तर प्रदेश हायर एजुकेशन सर्विस कमिशन की परिणाम आया तो सुमित्रा को सामान्य वर्ग में 17वां तथा महिला वर्ग में दूसरा स्थान मिला। जिस पर परिवारीजनों ने खुशी जाहिर किया इस दौरान सुमित्रा से बात करने पर उन्होंने बताया कि परिवारी जनों का सहयोग और गुरुजनों का आशीर्वाद हमेशा मिलता रहा। जिसके कारण सफलता हासिल हुई। उन्होंने बताया कि महिला होने के नाते एक संघर्षपूर्ण चुनौती उनके सामने हमेशा बनी हुई थी, लेकिन मजबूत इरादों और धैर्य से कोई भी सफलता हासिल की जा सकती है सुमित्रा के चयन होने पर उनके पैतृक गांव में तथा परिवारजनों में जश्न का माहौल देखा गया।

दलित महिला के साथ छेडछाड़ को लेकर मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। दलित महिला के साथ छेडछाड़ तथा अश्लील हरकत को लेकर पुलिस ने सीओ की फटकार पर आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया है। कोतवाली के रायपुर तियाई निवासी विनय कुमार सरोज की पत्नी ममता ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीते वर्ष सत्रह नवंबर को बरीबोझ निवासी शाहरूख खान पुत्र शब्बीर उसे मार्कसीट देने के नाम पर पोल्ट्री फार्म ले गया। वहां आरोपी ने पीड़िता के साथ अश्लील हरकत करते हुए उसे निर्वस्त्र करने का प्रयास किया। शोर मचाने पर आरोपी गाली देते हुए शिकायत करने पर पीड़िता को जानलेवा धमकी दी।

एंबुलेंस में गूंजी किलकारी टेक्नीशियन व पायलट ने सुरक्षित कराया प्रसव

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। प्रसव के लिए ले जा रही एंबुलेंस में बच्चे की किलकारी गूँजने पर जच्चा बच्चा दोनों स्वस्थय पाए गए। मिली जानकारी के अनुसार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कालाकंकर के अंतर्गत पनिगो गांव निवासी कविता देवी पत्नी मनजीत कुमार (25) वर्षीय को गुरुवार की सुबह अचानक प्रसव पीड़ा शुरू होने लगी तभी गाँव की आशा सावित्री देवी ने लगभग 9बजे 102 एम्बुलेंस को फोन किया। मौके पर एम्बुलेंस यूपी 41 जी 2166 पनिगो गांव पहुंची और कविता देवी को लेकर ए एन एम सेंटर मानिकपुर के लिए रवाना हुई रास्ते में कविता देवी को अचानक प्रसव पीड़ा असहनीय हुई तो इमरजेंसी मेडिकल टेक्नीशियन दिनेश कुमार ने पायलट वीरेंद्र की मदद से एंबुलेंस को किनारे खड़ी करके सुरक्षित प्रसव कराया। जिसे प्रसव कराने के बाद मानिकपुर ए एन एम सेंटर में ले जाकर भर्ती किया। जहां पर जच्चा बच्चा दोनों स्वस्थ बताये जा रहे है। उधर कविता के मायके व ससुराल वालों को बच्चे की सकुशल जन्मे पर परिजनों ने एम्बुलेंस के टेक्नीशियन दिनेश कुमार व पायलट वीरेंद्र तथा आशा सावित्री को धन्यवाद देते हुए प्रंशसा किया।

तालाबों को अमृत सरोवर के रूप में विकसित किया जाएगा: सांसद

पर्वतपुर में सांसद ने तालाब का किया भूमि पूजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सांसद संगम लाल गुप्ता ने विकास खण्ड मानधाता के ग्राम पंचायत पर्वतपुर में अमृत सरोवर योजना के अन्तर्गत तालाब का भूमि पूजन एवं फावड़ा चलाकर शुभारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होने कहा कि अमृत सरोवर के तैयार हो जाने से तालाबों में जल संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा, जानवरों के लिये पेयजल की सुविधा उपलब्ध होगी व मनरेगा मजदूरों को रोजगार मिलेगा जिससे मजदूरों का जीवन स्तर सुधरेगा। सरोवर में मुख्य रूप से बरसात के पानी को संचित किया जायेगा, किसी भी हाल में गांव का गंदा पानी सरोवर में नहीं जायेगा। उन्होने कहा कि पानी की बढ़ती जरूरत के साथ भूगर्भ जलस्तर में कमी आ रही है, तालाब जो एक समय में पानी के मुख्य स्त्रोत थे,

अमत सरोवर तालाब का भूमि पूजन करते सांसद संगम लाल गुप्ता

उनका अस्तित्व खतरे में है जिसे देखते हुये शासन ने आजादी के अमृत महोत्सव योजना के तहत तालाबों को अमृत सरोवर के रूप में विकसित करने की शुरूआत की है। उन्होने कहा कि अमृत सरोवर योजना के तहत जिले के तालाबों को अमृत सरोवर के रूप में विकसित किया जायेगा। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया, खण्ड विकास अधिकारी अरूण कुमार सहित ग्राम प्रधान व ग्रामवासी उपस्थित रहे।

भारत में एक सुशासन की हुई शुरूआतः संगम लाल

भाजपा कार्यालय पर आयोजित प्रेसवार्ता में बोलते सांसद संगम लाल गुप्ता

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी के नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार के 8 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित रिपोर्ट टू नेशन प्रेस वार्ता का आयोजन भाजपा कार्यालय पर किया गया। इस दौरान सांसद प्रतापगढ़ एवं राष्ट्रीय महामंत्री ओबीसी मोर्चा संगम लाल गुप्ता ने कहा कि मोदी के नेतृत्व में सुशासन और अंत्योदय की शुरूआत के साथ साथ दुनिया में भारत के प्रति एक सोच के परिवर्तन का कार्य हुआ, जो सबसे बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि देश ने कठिन से कठिन चुनौतियों को पार करते हुए भी सफलता के नए आयाम स्थापित करते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय की नीतियों पर चलकर समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को सरकार के होने का एहसास कराया। सांसद ने कहा कि जनपद प्रतापगढ़ में ही 8 वर्षों के कार्यकाल में एक बहुत ही ऐतिहासिक कार्य नए बाईपास के रूप में 309 करोड़ रुपए की परियोजना का शुभारंभ कराकर एक बड़ी राहत दी गई

मारपीट की घटना में पांच के खिलाफ बलवा का केस

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने मारपीट की घटना में तीन नामजद व दो अज्ञात आरोपियो के खिलाफ क्रास केस दर्ज किया है। रानीगंज कैथौला चैकी के बोधी सिंह का पुरवा अगई निवासी शरद कुमार सिंह पुत्र छत्रधारी सिंह ने दी गई तहरीर मे कहा है कि उन्नींस मई की शाम साढ़े पांच बजे विपक्षियों ने उन्हें मारापीटा। आरोपी गांव के अमरेश सिंह पुत्र दरबारी सिंह, रौनक सिंह पुत्र उमरेश व सीता देवी पत्नी दरबारी सिंह ने दो अज्ञात लोगों के साथ घर पर हमलावर होकर गालीगलौज करते हुए गृहस्थी के सामान तोड दिये। विरोध करने पर आरोपियो ने जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने बुधवार की रात अमरेश समेत पांच के खिलाफ केस दर्ज किया है।

खबर संक्षेप

तो इस वर्ष फिर जलमग्न हो जाएगा फायर स्टेशन

पश्चिम शरीरा कौशाम्बी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के नगर पंचायत पूरब पश्चिम शरीरा में स्थित फायर स्टेशन प्रत्येक वर्ष बारिश के दिनों में 4 महीने जलमग्न हो जाता है जिससे फायर कर्मियों को स्टेशन परिसर में ड्यूटी करने और निवास करने में दिक्कतों से जूझना पड़ता है पूरे फायर स्टेशन परिसर में तालाब का गंदा पानी भर जाता है जिससे दुर्गंध भी उठती है लेकिन कई वर्षों से इसके लिए ठोस योजनाएं नहीं बनाई गई है ठोस योजनाएं ना बनाए जाने से फायर कर्मियों को प्रत्येक साल 4 महीने भारी मुसीबत से जूझना पड़ रहा है बीते कई वर्षों से फायर स्टेशन में तालाब का गंदा पानी भरने से उठने वाली दुर्गंध से फायर कर्मी परेशान रहते हैं लेकिन उसके बाद भी तालाब के गंदे पानी को तालाब में जाने से रोकने की योजना नहीं बनाई गई है बताते चलें कि फायर सर्विस स्टेशन के बगल में स्थित तालाब में पूरे पूरब शरीरा पश्चिम जिला के निवासियों के घर का गंदा पानी तालाब में पहुंच रहा है बरसात के दिनों में तालाब भर जाने पर तालाब से पानी बाहर निकलता है और फायर स्टेशन परिसर में भर जाता है अभी तक कोई ठोस योजना न बनाए जाने के चलते इस वर्ष भी फायर स्टेशन परिसर में तालाब का गंदा पानी भर जाने की आशंका बनी हुई है।

बाइक सवार को डंपर ने रौंदा दर्दनाक मौत

एआरटीओ और यातायात पुलिस तेज रफ्तार के कहर पर नहीं लगा पा रही है रोक

अखंड भारत संदेश

इमामगंज कौशांबी। सड़क के तेज रफ्तार का कहर लगातार जारी है एआरटीओ और यातायात पुलिस भी तेज रफ्तार के कहर पर रोक नहीं लगा पा रही है जिससे आए दिन लोगों को अपनी जान गवा कर कीमत चुकानी पड़ रही है ताजा मामला कोखराज थाना क्षेत्र के मूरतगंज जीएमआर प्लांट के पास का है जहां तेज रफ्तार अनियंत्रित डंपर चालक ने एक बाइक सवार रौंद दिया है जिससे बाइक सवार की मौके पर मौत हो गई है हादसे के बाद घटनास्थल पर राहगीर और ग्रामीणों की भीड़ लग गई है मामले की सूचना पाते ही स्थानीय पुलिस भी घटनास्थल पर पहुंच गई है मृतक के शव को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है घटना की जानकारी जैसे ही मृतक के घर पहुंची है परिजन थाना और पोस्टमार्टम हाउस पहुंच गए हैं घर परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

दुर्घटना के बाद घटनास्थल पर जुटी ग्रामीणों की भीड़

घटनाक्रम के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के आसरापुर बीरनपर निवासी विजय कुमार गौतम उम्र लगभग 35 वर्ष पुत्र शंकरलाल गुरुवार की सुबह बाइक से मूरतगंज जा रहे थे जैसे ही वह इसी थाना क्षेत्र के जीएमआर प्लांट के पास पहुंचे तेज रफ्तार अनियंत्रित डंपर चालक ने बाइक सवार को रौंद दिया है जिससे घटनास्थल पर विजय कुमार गौतम की दर्दनाक मौत हो गई है हादसे में बाइक सवार की मौत की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर आसपास के लोग एकत्रित हो गए हैं राहगीर भी वाहनों को साइड में खड़ा कर मौके पर रुक गए लेकिन तब तक विजय की सांसें थम गई थी मामले की सूचना आसपास के लोगों ने स्थानीय पुलिस को दिया है सूचना पाकर घटनास्थल पर स्थानीय पुलिस पहुंची है और मृतक के शव को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्ट मार्टम के लिए भेज दिया है ऐसे ही विजय कुमार की मौत की जानकारी घर परिवार पहुंची है घपरिवार में कोहराम मच गया है।

जी एम आर प्लांट में ग्रामीणों ने किया हंगामा

कौशांबी। जीएमआर कंपनी के डंफर से बाइक सवार युवक की मौत के बाद आक्रोशित ग्रामीणों ने जीएमआर कंपनी के कार्यालय में जमकर हंगामा किया है सूत्र बताते हैं कि कंपनी कार्यालय में ग्रामीणों ने तोड़फोड़ भी की है मामले की जानकारी मिलते ही उप जिला अधिकारी चायल क्षेत्राधिकारी नेतृत्व में कई थाने की भारी फोर्स मौके पर पहुंची है और ग्रामीणों को मुआवजा दिलाने का आश्वासन देकर शांत कराया है।

नियमों को ताक में रखकर हो रही कीट नाशकों की बिक्री

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। फसलों में छिड़काव करने के लिये जहरीली कीटनाशक की बिक्री नियमो को ताक में रखकर खुलेआम की जा रही है।जिले में कई दुकानें है जहा फसलों को कीटों एवं रोंगो से बचाने के लिये कीटनाशक दवाइया बेची जाती है।दुकानों में स्टाक रेजिस्टर रखना खरीदने वालों को बिल अवश्य देना,कीटनाशक लेने वालों का ब्यौरा रखना साथ ही दवाओं को सामान्य ग्राहकों से दूर सुरक्षित स्थान पर रखना है।यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि कीटनाशक लेने वाले के पास उस दवा का अनुपात में फसल है भी या नही।लेकिन वास्तविकता यह है कि अब तक नियमो का पालन कराने में न तो विभाग की कोई दिलचस्पी दिखाई दी और न ही दूकानदारों की।अगर देखा जाय तो जिले में कई ऐसे दुकानदार है जिनके पास कोई रिकॉर्ड ही नही है।कि उसने किसको कितना कीटनाशक बेचा।एक हकीकत यह भी है कि किसान ही नही कोई भी इन दुकानदारों से जहरीली कीटनाशक खरीद सकता है।लोग इसी तरह की दवा खरीद कर आत्महत्या व अन्य घटनाओ को अंजाम देते है जबकी नियमानुसार लाइसेन्सधारी दुकानदार को विभाग द्वारा जारी लाइसेन्स पर बेची जानी वाले की कीटनाशक दवा का नाम उसकी निमार्ता कंपनियों तथा डिस्टिब्यूटर्स की मंजूरी अंकित कराना भी आवश्यक है।ऐसा नही है कि लाइसेन्स मिला और किसी भी कंपनी की कोई भी कीटनाशक दावा बेचना आरम्भ कर दिया।यह घोर नियमो का उलंघन है जिले मे कीटनाशक दवा की तमाम दुकानें अवैध रूप से चल रही है।जब इसके लिये ग्रेजुएट इन एग्रीकल्चरया डिप्लोमा होना अनिवार्य है।बहुत से ऐसे दुकानदार है जिनके पास यह सब कुछ नही है।

चोरों ने दो घरों से साफ किया नगदी व लाखों का सामान

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र के अकबरपुर मिजार्पुर गांव में मंगलवार की रात चोरों ने दो घरों को अपना निशाना बनाते हुए सेंध करके घर के अंदर प्रवेश कर गए और नगद रुपए सहित जेवरात एवं लाखों रुपए का सामान उठा ले गए। सुबह जानकारी होने पर गृहस्वामियों के होश उड़ गए।उन्होंने तत्काल थाने जाकर घटना की तहरीर दी। तहरीर मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस घटना की जांच में जुट गई है। अकबरपुर मिजार्पुर गांव निवासी विनोद कुमार किसानी कर परिवार का पालन - पोषण करते हैं और मंगलवार की रात विनोद का परिवार खाना बना खाकर परिवार सहित ट्यूबवेल पर चला गया इसी दौरान सूना घर देखकर देर रात चोरों ने सूने घर में सेंध कर अंदर घुस गए और घर के अंदर रखा बक्सा का ताला तोड़कर खूब मनमानी किए बक्से के अंदर रखा नगद रुपए सहित कीमती सामान उठा ले गए। विनोद के अनुसार बक्से के अंदर पांच हजार रुपया नकद समेत पचास हजार रुपए के जेवरात थे। सुबह घटना की जानकारी मिलने के बाद विनोद बदहवास हालत में घर पहुंचा। घर पहुंचकर वहां का नजारा देख उसके होश उड़ गए। इसके बाद चोरों ने आशा देवी के मकान को अपना निशाना बनाया। आशा के अनुसार उनके पति जयकरन दिवाकर की कई साल पहले मौत हो चुकी है। बेटा मंगलेश इस समय परदेस में रहकर कमाई कर रहा है। आशा देवी बेटे की शादी के लिए रुपये जुटा रही थी। मंगलवार रात आशा देवी अपने दो कमरे के बने मकान में सो रही थी। इस बीच चोर पीछे की दीवार में सेंध कर कमरे में घुस गए। चोरों ने कमरे के अंदर रखा बक्सा का ताला तोड़कर 40 हजार रुपए नकद समेत लगभ साठ हजार रुपए के गहने पार कर दिया। कपड़ा आदि सामान चोरों ने घर के पीछे नींबू की बाग में ले जाकर फेंक दिया। गृहस्वामियों ने थाने जाकर घटना की तहरीर दी। तहरीर मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

चोरी के बाद बिखरे सामान का मुआयना करते ग्रामीण

3 घरों में लगी आग गृहस्थी जलकर खाक

पश्चिम शरीरा कौशाम्बी। पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के लोधन का पुरवा गांव में गुरुवार को विद्युत के शॉर्ट सर्किट से अचानक आग लग गई है देखते-देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और आस-पड़ोस के तीन घरों को अपने आगोश में समेट लिया जिससे तीन घरों की संपूर्ण गृहस्थी नगदी कपड़ा बर्तन विस्तर नगदी अनाज जलकर खाक हो गया है 3 घरों के परिवार के लोगों के सामने 2 जून रोटी की दिक्कत आ गई है। आग लगने की जानकारी मिलते हैं पश्चिम सरीरा थानेदार और फायर ब्रिगेड के अधिकारी मौके पर पहुंचे हैं कड़ी मशक्कत के बाद आग पर अधिकारियों ने काबू पाया है तब तक सब कुछ जलकर खाक हो गया था बताया जाता है कि पश्चिम शरीरा थाना क्षेत्र के लोधन पुरवा गांव निवासी धनराज महेश और भंडारी के घर में आग लगी थी परिजनों ने बताया कि बल्ब से निकली चिंगारी से आग लगी है और इस घटना में कपड़ा बर्तन बिस्तर चारपाई नगद रुपए जेवर आनाज आदि सब कुछ जलकर खाक हो गया है ग्रामीणों ने बताया कि इस अग्निकांड में 3 घरों में लाखों का नुकसान हुआ है।

बरई बंधवा गांव के सरकारी तालाब में जेसीबी से हो रही मिट्टी की खुदाई

सरकारी तालाब से मिट्टी खोद रहा जेसीबी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पूरे क्षेत्र में गांव गांव सरकारी तालाब में मिट्टी खुदाई का काम बेखौफ तरीके से चल रहा है तालाब से मिट्टी निकाल कर ठेकेदार और मिट्टी माफिया मिट्टी बेचकर मालामाल हो रहे हैं राजस्व निरीक्षक मिट्टी निकालने वाले ठेकेदार और माफियाओं से वसूली तक सीमित है आखिर सरकारी तालाब की मिट्टी सरकार की संपत्ति है और सरकार की संपत्ति को चोरी कर बेचने वालों पर अभी तक तहसील प्रशासन ने रोक क्यों नहीं लगाई है क्या तालाब लावारिस है जिससे राजस्व अधिकारी तालाब से अवैध तरीके से चोरी कर मिट्टी खनन पर मौन धारण किए हुए हैं सिराथू तहसील क्षेत्र में तालाब से मिट्टी खुदाई का मामला अभी ठंडा नहीं पड़ा है कि मंझनपुर तहसील क्षेत्र के बराई बंधवा गांव में तालाबी भूमि संख्या 626 से जेसीबी मशीन लगाकर मिट्टी माफिया चोरी से मिट्टी की खुदाई का बेच रहे हैं जिनसे तालाब से लेना देना नहीं है वह भी इस मामले की जानकारी राजस्व अधिकारियों को दे चुके है लेकिन उसके बाद भी अवैध तरीके से मिट्टी खनन के मामले पर खनन करने वालों पर कार्रवाई नहीं हुई है मिट्टी चोरी करने वाले लोगों पर मुकदमा दर्ज करा कर मिट्टी की कीमत राजस्व की वसूली भांति नहीं कराई गई है तालाब में अवैध तरीके से खुदाई कर चोरी किए जाने का मामला बेहद गंभीर है और बड़े अधिकारियों को इस मामले को संज्ञान लेते हुए मिट्टी चोरी करने वाले के साथ साथ लापरवाह राजस्व कर्मियों पर भी कठोर कार्रवाई किए जाने की जरूरत है।

करोड़ों की सरकारी भूमि पर थाने के सामने हो रहा बेखौफ कब्जा

कौशाम्बी। अतिक्रमण हटाओ अभियान के बजाय सरकारी संपत्तियों पर कब्जा कराने में जिम्मेदारों को अधिक दिलचस्पी दिखाई पड़ रही है सरकार एक तरफ सरकारी संपत्तियों के अवैध कब्जे को तहस-नहस करने के लिए बुलडोजर चलाने का निर्देश दे रही है वही योगी राज में ही मंझनपुर कोतवाली के ठीक सामने करोड़ों की सरकारी संपत्ति पर दिनदहाड़े जबरिया कब्जा हो रहा है जनपद मुख्यालय में एसडीएम तहसीलदार के साथ-साथ जिला अधिकारी भी मौजूद है लेकिन उसके बाद भी 1 सप्ताह पूर्व सरकारी संपत्ति पर शुरू हुए अवैध कब्जे पाए अधिकारी गंभीर नहीं हुए हैं सूत्रों की माने तो भू माफिया ने नगर पालिका से बड़ी सांठगांठ कर ली है और नगरपालिका की सांठगांठ के बाद सरकारी संपत्ति पर बेखौफ तरीके से कब्जा हो रहा है कई बार मामले की शिकायत योगी सरकार तक हो चुकी है लेकिन उसके बाद भी भूमाफिया का अवैध कब्जा नहीं रुक सका है बताते चलें कि इसी भूमि पर समाजवादी पार्टी इस सरकार में भी भू माफिया ने कब्जा शुरू किया था लेकिन तत्कालीन अधिकारियों ने लुका छुपी के बाद शासन के दबाव में सरकारी संपत्ति पर कब्जा रोक दिया था और अवैध तरीके से किए गए निर्माण को बुलडोजर लगाकर अधिकारियों ने गिरा दिया था कई वर्षों तक कोतवाली के सामने सरकारी भूमि पर बना यह अवैध भवन खण्डहर हालात में खड़ा था लेकिन समय बदलते ही सरकारी जमीन पर फिर कब्जा शुरू हो गया है।

शासन से मंजूरी : 85 पोल की लाइट से जगमगाएगा करारी नगर पंचायत

अखंड भारत संदेश

करारी कौशाम्बी। करारी नगर पंचायत में विद्युत समस्या के समाधान के लिए नगर पंचायत के प्रयास पर शासन ने मुहर लगा दी है 85 पोल की लाइट से जल्द नगर पंचायत करारी जगमगाएगा कस्बे को चकाचौंध करने के लिए 26 लाख की लागत पर शासन ने मंजूरी दे दी है जेई चंद्रिका प्रसाद मौर्या ने बताया कि शासन के निर्देश पर काम शुरू करा दिया गया है। नगर पंचायत करारी कस्बे की जनता को बिजली की समस्या न हो इसके लिए 85 पोल की लाइट, 26 लाख की लागत के क्रम में नगर पंचायत द्वारा शासन को लेटर भेजा गया था।जिस पर शासन की मुहर लगते ही काम शुरू हो गया है यह खबर कस्बाईओ के लिए सुखदाई है।आये दिन कस्बे में विद्युत आपूर्ति के कारण लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था।लोगों की समस्याओं को गम्भीरता से लेते हुए जेई चन्द्रिका प्रसाद मौर्या ने करारी कस्बे का फीडर अलग से लगने हेतु ठान लिया था। कस्बे में 85 पोल की लाइट की लागत 26 लाख रुपए प्रस्तावित हुई। कुछ दिनों पूर्व जेई चन्द्रिका प्रसाद मौर्या ने शासन को मामले से अवगत कराते हुए लेटर भेजा था जिसे शासन ने स्वीकृति करते हुए मंजूरी दे दी है जिससे पावर हाउस में काम शुरू करा दिया गया है। उन्होंने बताया कि अभी तक एक ही फीडर से करारी सहित कई गांवों की सप्लाई चालू थी,जिससे आये दिन विद्युत आपूर्ति की बाधा बनी रहती थी। लेकिन जेई के अथक प्रयास से अब इस समस्या से समाधान मिल जाएगा। जल्द ही काम पूर्ण हो जाएगा। जेई चन्द्रिका प्रसाद मौर्या ने उपभोक्ताओं से समय पर बिल का भुगतान करने बिजली चोरी न करने की अपील किया है।

दहेज लोभियों ने विवाहिता को खिलाया सल्फास गंभीर

कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के सकाढा गांव निवासी जुल्फिकार की बेटी ईसरा सिद्दीकी की शादी सैनी कोतवाली क्षेत्र के गोविंदपुर गोरियों गांव निवासी तौहीद अहमद पुत्र सहीद अहमद के साथ 26 जुलाई 2021 को मुस्लिम रीति रिवाज से सम्पन्न हुई थी शादी के बाद से ही विवाहिता ईसरा सिद्धिकी के साथ अतिरिक्त दहेज की मांग को लेकर आएदिन गाली गलौज मारपीट उत्पीड़न शुरू कर दिया मामले की कई बार शिकायत विवाहिता ने अपने पिता से भी की लेकिन उसके बाद भी ससुराली जनों के दहेज की मांग कम नहीं हुई 1 जून को सास ससुर ननंद नंदोई देवर पति आदि ने मिलकर विवाहिता इसरा सिद्दीकी को सल्फास खिला दिया और कहा कि तुम्हारा दर्द कम हो जाएगा विवाहिता की हालत बिगड़ने पर उसे मंझनपुर के एक निजी नर्सिंग होम में भर्ती कराया जाए जहां होश आने के बाद विवाहिता ईसरा ने बताया कि ससुराली जनों द्वारा एक राय होकर उसे सल्फास खिलाया गया है नर्सिंग होम के चिकित्सक ने भी सल्फास खिलाए जाने की पुष्टि की है विवाहिता की बुआ शाहिना बेगम और मा शमा परवीन ने पुलिस अधीक्षक को शिकायती पत्र देकर दहेज लोभियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की मांग की है।

लेखपाल ने जमीन नापकर साबित किया भूमिधारी

ईओ ने बुलडोजर चलाकर गरीब का तोड़ दिया घर

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। सरकारी संपत्तियों से अवैध कब्जा हटाने के नाम पर योगी सरकार में गरीबों का उत्पीड़न शुरू हो गया है। अमीरों को सरकारी संपत्तियों पर कब्जा कराए जा रहे हैं गरीब कमजोर अपनी निजी संपत्ति बचाने के लिए अधिकारियों की चौखट पर दौड़ लगाकर भीख मांग रहा है लेकिन उन्हें योगीराज में न्याय मिलता नहीं दिख रहा है जिससे गरीबों के सामने मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा है। क्या गरीबों पर अत्याचार करने वाले अधिकारियों के कारनामों को योगी सरकार संज्ञान लेकर दोषी अधिकारियों पर कठोर कार्यवाही करेगी या योगी सरकार में अधिकारियों की गरीब कमजोर मजलूम पर तानाशाही अत्याचार चलती रहेगी यह व्यवस्था पर बड़ा सवाल है। सरकारी संपत्तियों से कब्जा हटाने के नाम पर बड़े माफियाओं से सांठगांठ कर उन्हें सरकारी संपत्तियों पर कब्जा कराए जा रहे हैं और गरीब कमजोर मजलूम पर जुल्म ज्यादती अत्याचार शुरू हो गयी है। अतिक्रमण हटाओ अभियान राजस्व कर्मियों की कमाई का साधन बन गई है निजी संपत्ति पर बने मकान में सरकारी संपत्ति का हवाला देकर धराशायी किए जा रहे हैं जिससे गरीबों के सामने मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा है अतिक्रमण हटाने के नाम पर योगी सरकार को झूठी रिपोर्ट भेजी जा रही है मंझनपुर कोतवाली के सामने करोड़ों कीमत की सरकारी भूमि पर 10 दिनों से बेखौफ कब्जा हो रहा है उसे रोकने के लिए किसी अधिकारी ने पहल नहीं शुरू की है लेकिन मंझनपुर तहसील क्षेत्र के पूरब पश्चिम शरीरा नगर पंचायत के शिव चरण सरोज के आराजी संख्या 1277 को राजस्व लेखपाल ने नाप करके उसकी भूमिधरी साबित किया था आराजी संख्या 1277 में शिव चरण सरोज झोपड़ी बनाकर परिवार सहित रह रहा था लेकिन इसी बीच शनिवार को अधिशासी अधिकारी थाना अध्यक्ष के साथ भारी फोर्स लेकर शिव चरण सरोज के घर पर पहुंचे और जेसीबी मशीन से उसका घर गिराने लगे शिवचरण के घर का सारा सामान सड़क पर फेंक दिया गया है टीन शेड और छप्पर गिरा दिया गया है इतना ही नहीं उसके घर में मौजूद खाने-पीने का अनाज गेंहू चावल दाल सब कुछ सड़क पर फेंक दिया गया है रोजी रोटी के लिए गरीब ने पशुओं के चारा के लिए चारा मशीन और गन्ना पेराई की मशीन लगा रखी थी इस मशीन को भी अतिक्रमण दस्ते ने तहस-नहस कर दिया है पशुओं को खोल कर बाहर भगा दिया गया उनके खूटे को तोड़ दिया गया है। अब सवाल उठता है कि गरीब के निजी भूमि धरी जमीन पर बने निजी आवास को भी आधिकारी तोड़कर योगी सरकार को क्या संदेश देना चाहते हैं अतिक्रमण हटाओ अभियान में लगे अधिकारियों की मनसा को योगी सरकार को संज्ञान लेकर कठोर कार्यवाही किए जाने की जरूरत है वरना गरीबों की हाय का खामियाजा आने वाले लोकसभा चुनाव में भाजपा को भुगतना पड़ेगा।

मंझनपुर कोतवाली के सामने करोड़ों की सरकारी भूमि पर दस दिनों से बेखौफ कब्जा हो रहा है उसे रोकने के लिए किसी अधिकारी ने नहीं शुरू की पहल

न्यूज झरोखा

डीएम ने स्वामित्व योजना के तहत कराये जा रहें ड्रोन सर्वे कार्यों का निरीक्षण

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने तहसील चायल के ग्राम-भीटी देवमाफी महगॉव कछार एवं मोहिद्दीनपुर में स्वामित्व योजना के तहत कराये जा रहें ड्रोन सर्वे कार्य का निरीक्षण कर विस्तृत जायजा लिया एवं सम्बन्धित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दियें इस अवसर पर उपजिलाधिकारी चायल मनीष यादव सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहें। ज्ञातव्य है कि स्वामित्व योजना का उद्देश्य पंचायतीराज मंत्रालय भारत सरकार राजस्व विभाग और भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सहयोग से ड्रोन सर्वेक्षण तकनीक का प्रयोग करते हुए ग्रामीण आबादी के आवासीय अधिकार अभिलेख तैयार करना है स्वामित्व योजना का लक्ष्य-ग्रामीण भारत के नागरिकों को ऋण और अन्य वित्तीय लाभ प्राप्त करने के लिए अपनी सम्पत्ति को एक वित्तीय परिसम्पत्ति के रूप में प्रयोग करने में सक्षम बनाते हुए उन्हें वित्तीय स्थिरता प्रदान करना, ग्रामीण नियोजन हेतु सटीक भूमि अभिलेखों और जीआईएस नक्शों का निर्माण, सम्पत्ति कर का निर्धारण एवं सम्पत्ति विवादों को कम करना आदि है।

प्रति माह प्रति परिवार दो लीटर केरोसिन तेल दिया जाए : अजय सोनी

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी की मासिक बैठक बुधवार एक जून को जिला कार्यालय मंझनपुर में हुई। बैठक की अध्यक्षता अजय सोनी ने की। इस अवसर पर पार्टी कार्यकताओं ने पार्टी की मजबूती के लिए गांव गांव जाकर लोगों से संपर्क करने एवं जनहित में लोगों की समस्यायों के लिए संघर्ष करने का निर्णय किया। इस अवसर पर पार्टी कार्यकताओं को संबोधित करते हुए अजय सोनी ने कहा कि बिजली की भारी कटौती जारी है और लोग अंधेरे में रहने को विवश हैं। शाम ढलते ही बिजली कट जाती है और लोगों को शाम समय घरेलू कार्य करने में परेशानी होती है। इस समस्या से निजात के लिए अजय सोनी ने शासन प्रशासन से मांग किया है कि प्रति माह प्रति परिवार राशन की दुकानों से दो लीटर केरोसिन तेल दिया जाए ताकि लोग शाम को तमाम घरेलू कार्य कर सकें और पढ़ने लिखने वाले बच्चों को भी पढ़ाई का नुकसान न हो। अजय सोनी ने बताया कि इस सम्बन्ध में समर्थ किसान पार्टी के द्वारा पूर्व में ही जिला प्रशासन कौशांबी को एक लिखित मांगपत्र सौंपा गया था लेकिन आज तक कोई कार्यवाही नहीं की गई। अजय सोनी ने पुनः शासन प्रशासन से मांग करते हुए कहा है कि जल्द से जल्द आम जनता को प्रति माह दो लीटर केरोसिन तेल प्रदान किया जाए। इस अवसर पर पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष प्रेमचन्द्र केसरवानी, शैलेन्द्र मिश्रा, जयलाल चौधरी, सुरजीत वर्मा, दुख राज सरोज, फूलचंद्र लोधी, जुम्मन अली, शफीक अहमद आदि मौजूद रहे।

संदिग्ध दशा में चुल्ला से लटकती मिली विवाहिता की लाश

महिला की मौत के बाद मौके पर जुटी भीड़

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। सराय अकिल थाना अंतर्गत ग्राम बरई निवासी राजेश की पत्नी सरिता उम्र लगभग 32 वर्ष की घर के कमरे के अंदर चुलले से रस्सी के सहारे लटकती लाश मिली जनचर्चा में अगर जाये तो सरिता एक अच्छी महिला थी।और उसके तीन बच्चे है।एक लड़का व दो लड़की है सरिता बुधवार की दोपहर लगभग तीन बजे पशुओं के चारा के लिए चारी काटने के लिये खेत गई थी।वहां से चारा लाने के बाद चारा को मशीन में काटा।शाम को बच्चे बाहर खेलते हुए घर पहुचे तो देखा कि दरवाजा अंदर से बन्द था।काफी देर तक दरवाजा न खुलने के कारण बच्चे रोने लगे दरवाजा कैसे खुला यह सभी के लिये समझ से बाहर है मृतका के मायके वाले भी घटना स्थल पर पहुँच गए है।मायके वालों का आरोप है कि हत्या की गई है खबर की सूचना मिलते ही सराय अकिल प्रभारी निरीक्षक मौके पर पुलिस फोर्स के साथ पहुँचे और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया है।

पिता के साथ आम तोड़ने गए बालक की गड्ढे में गिरकर हुई मौत

कौशांबी। चरवा थाना अंतर्गत चक बादशाहपुर ग्राम सभा ने अपने पिता के साथ आम तोड़ने गए बालक की गड्ढे में गिरने से मौत हो गयी है बालक की मौत के बाद परिवार में कोहराम मच गया है जानकारी के मुताबिक प्रियांशु उम्र 11 वर्ष पुत्र जगन्नाथ अपने पिता के साथ पेड़ से आम तोड़ने गया था इसी बीच अचानक वह 10 फीट गहरे गड्ढे में गिर गया जिससे उसकी मौत हो गई है। गांव के ही बगल में जेसीबी लगाकर गड्ढा खोदा गया और यह गड्ढा बालक का काल बन गया क्षेत्र में आए दिन गरजती रहती हैं जेसीबी इस पर शासन व प्रशासन का नहीं चलता बस और इसी के चलते आज जेसीबी से खोदा गया लगभग 10 फीट गड्ढे में बालक की गिरने से मौत हो गयी बालक की मौत की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया है।

पड़ोसी दबंगों ने देवर-भाभी को जमकर पीटा

कौशाम्बी। चरवा कोतवाली क्षेत्र के गोगही गांव में बुधवार की सुबह पड़ोसी दबंगों ने मामूली विवाद को लेकर देवर भाभी को जमकर पीट दिया है। इससे दोनों को काफी चोटें आई है। शोर सुनकर मौके पर जुटे लोगों ने बीच बचाव कर मामला शांत कराया। घायलों ने थाने में आरोपियों के खिलाफ तहरीर दी है। तहरीर मिलने के बाद पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। जानकारी के मुताबिक गोगही गांव की रुपा देवी के पति हरजीत सिंह यादव की कई साल पहले मौत हो चुकी है। पड़ोसी दबंग उसकी भूमिधरी में जबरन गंदा पानी बहाते हैं। बुधवार सुबह रुपा ने नाली बनाकर तालाब में पानी ले जाने के लिए कहा। इसी बात को लेकर पड़ोसी आग बबूला हो गए। गाली गलौच कर उन लोगों ने महिला रूपा देवी को जमकर पीट दिया। शोर सुनकर बीच बचाव करने पहुंचे देवर रंजीत प्रसाद को भी दबंगों ने जमकर पीट दिया। इससे दोनों को काफी चोटें आई। मौके पर जुटे लोगों ने बीच बचाव कर मामला शांत कराया। घायलों ने थाने जाकर आरोपियों के खिलाफ मामले की तहरीर दी है।

सोशल ऑडिट ग्रामसभा की बैठक को सम्पन्न कराने हेतु डीएम ने अधिकारियों को किया नामित

सोशल ऑडिट ग्रामसभा की बैठक के लिए कैलेण्डर जारी

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने सोशल ऑडिट निदेशालय द्वारा जारी कैलेण्डर के अनुसार वित्तीय वर्ष-2022-23 में मनरेगा के अन्तर्गत कराये गये कार्यों एवं प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) की सोशल ऑडिट ग्रामसभा की बैठक को सुचारू रूप से सम्पन्न कराये जाने हेतु बीएसएसी बीआरपी एवं जिलास्तरीय अधिकारियों को पर्यवेक्षक के रूप में नामित करते हुए निर्देशित किया है कि कैलेण्डर के अनुसार सोशल ऑडिट ग्रामसभा की बैठक में उपस्थित होकर बैठक कराना सुनिश्चित करें जनपद के विकास खण्ड-सरसवां के ग्राम पंचायतों में 04 जून से 27 जुलाई 2022 के मध्य प्रत्येक ग्राम पंचायत के लिए निर्धारित तिथि पर सोशल ऑडिट ग्रामसभा की बैठक किया जाना हैं। इसी प्रकार विकास खण्ड-सिराथू के ग्राम पंचायतो में 04 जून से 30 जुलाई 2022 के मध्य, विकास खण्ड-कड़ा के ग्राम पंचायतो में 08 जून से 30 जुलाई 2022 के मध्य विकास खण्ड-चायल के ग्राम पंचायतो में 05 अगस्त से 28 सितम्बर 2022 के मध्य विकास खण्ड-कौशाम्बी के ग्राम पंचायतो में 05 अगस्त से 28 सितम्बर 2022 के मध्य विकास खण्ड-मंझनपुर के ग्राम पंचायतो में 08 अगस्त से 24 सितम्बर 2022 के मध्य विकास खण्ड-मूरतगंज के ग्राम पंचायतो में 08 अगस्त से 08 अक्टूबर 2022 के मध्य किया जाना है सोशल ऑडिट की बैठक में ग्राम प्रधान ग्राम पंचायत ग्राम विकास अधिकारी ग्राम रोजगार सेवक तकनीकी सहायक कार्यदायी संस्थाओं से सम्बन्धित अधिकारी कर्मचारीगण एवं पर्यवेक्षकीय अधिकारी आदि रहे।

संपादकीय

आक्रांताओं के बचाव को मिथकों का सहारा

न्यायालय के आदेश के बाद ज्ञानवापी क्षेत्र के सर्वेक्षण में जिस तरह हिन्दू मंदिर के प्रतीक मिले हैं, उसने गजनवी, गौरी, तुगलक, खिलजी और मुगल जैसे आक्रांताओं के अत्याचारों को प्रामाणिकता प्रदान की है। इस सर्वेक्षण ने अब तक पढ़ाए गए इतिहास को संदेह के घेरे में खड़ा कर दिया है। उत्तर भारत की अनेक इमारतों को बनाने का श्रेय मुगल शासकों को दिया जाता रहा है, अब इन दावों पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। मुगल शासकों को हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक के तौर पर पेश करके उनकी महानता पर आत्ममुग्ध होने वालों को भी स्वीकारना पड़ रहा है कि मुगलकाल में मंदिरों को तोड़क र मस्जिदें बनाई गईं। मुगल शासकों के साम्प्रदायिक सद्भाव का झूठ जगजाहिर होने के बाद अब ये लोग आर्य आक्रमण सिद्धांत और हिन्दू राजाओं के हाथों मंदिरों का विध्वंस जैसे मिथकों के सहारे भारतीय सनातन संस्कृति को नष्ट भ्रष्ट करने वाले आक्रांताओं के बचाव की कोशिश में जुटे हैं। मुस्लिम इत्तेहाद (एकता) के जरिए राजनैतिक महत्वाकांक्षा पूरा करने की कोशिशों में जुटे ऑल इण्डिया मजलिस ए इत्तेहाद उल मुस्लमीन (एआईएमआईएम) के नेता असदुद्दीन ओबैसी ही नहीं बल्कि खुद को प्रगतिशील राष्ट्रवादी मुसलमान की तरह पेश करने वाले जमीयत उलेमा ए हिन्द के नेता महमूद मदनी जैसे लोग भी मुसलमानों को भड़काने का प्रयास कर रहे हैं। मुसलमानों को समझाया जा रहा है कि हिन्दूवादी संगठन उनके धार्मिक स्थलों को छीनने का षड्यंत्र कर रहे हैं जबकि अधिकांश विवादित इमारतों के पूर्व में हिन्दू मंदिर होने के पुख्ता सबूत मौजूद हैं। आक्रांताओं द्वारा मंदिरों को तोड़ने की बात सिद्ध होने के बाद उनके कुकृत्यों को तत्कालीन राजाओं के चलन के तौर पर प्रचारित करने की कोशिश की जा रही है। इसके लिए आर्य आक्रमण सिद्धांत, हिन्दू राजाओं द्वारा पराजित हिन्दू राजाओं के मंदिर तोड़ने और बौद्ध मठ तोड़ने जैसे मिथकों का सहारा लिया जा रहा है। दरअसल भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान क्रिश्चियन मिशनरियों को धर्मांतरण के काम के लिए वैचारिक आधार भूमि तैयार करने और यहां की अपार धन संपदा लूटने का मार्ग सुगम बनाने के लिए विलियम जोंस, जेम्स मिल, लार्ड मैकाले और मैक्स मूलर जैसे लोगों ने आर्य आक्रमण सिद्धांत गढ़ा। उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि विदेशों से आए आर्यों ने यहां के मूल निवासी द्रविड़ और आदिवासियों को पराजित करके यहां से मारकर भगा दिया। लेकिन इस सिद्धांत को गढ़ने वाले साहित्यिक, पुरातात्विक या अन्य तथ्यों और साक्ष्यों के आधार पर पुख्ता तौर पर यह तक नहीं बता सके कि विदेशी आर्य भारत कहां से और कब आए? आर्य आक्रमण सिद्धांत को स्थापित करने वालों का मानना है कि आर्य विदेशी खानाबदोश थे लेकिन दार्शनिक और सुसंस्कृत थे, उनकी साहित्य में रूचि थी, उनकी अपनी समृद्ध भाषा थी, वे घुड़सवारी और तीरंदाजी जानते थे जबकि भारत के मूल निवासियों के पास इस तरह के ज्ञान का नितांत अभाव था। आर्य आक्रमण का मिथक गढ़ने वाले ये स्पष्ट नहीं कर सके कि दार्शनिक, सुसंस्कृत और साहित्य व कला में रुचि रखने वाला समुदाय आक्रमणकारी और खानाबदोश कैसे हो सकता है। इसके अलावा 1921 में सिंधु घाटी सभ्यता की खोज ने तो इस सिद्धांत को सिरे से खारिज कर दिया। आर्य आक्रमण सिद्धांत के अनुसार भारत के मूल निवासी द्रविड़ और आदिवासी, आर्यों के मुकाबले असभ्य और भाषा संस्कृति विहीन थे।

कश्मीर में फिर आतंकवाद

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

जम्मू-कश्मीर में जबसे धारा 370 हटी है, वहां राजनीतिक उठा-पटक और आतंकवादी घटनाओं में काफी कमी हुई है लेकिन इधर पिछले कुछ हफ्तों में आतंकवाद ने फिर से जोर पकड़ लिया है। कश्मीर घाटी के एक स्कूल में पढ़ा रही जम्मू की अध्यापिका रजनीबाला की हत्या ने कश्मीर में तूफान-सा खड़ा कर दिया है। कश्मीर के हजारों अल्पसंख्यक हिंदू कर्मचारी सड़कों पर उतर आए हैं और वे उप-राज्यपाल से मांग कर रहे हैं कि उन्हें घाटी के बाहर स्थानांतरित किया जाए, वरना वे सामूहिक बहिर्गमन का रास्ता अपनाएंगे। उनका यह आक्रोश तो स्वाभाविक है लेकिन उनकी मांग को क्रियान्वित करने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां हैं। यहां एक सवाल तो यही है कि क्या आतंकवादी सिर्फ हिंदू पंडितों को ही मार रहे हैं? यह तो ठीक है कि मरने वालों में हिंदू पंडितों की संख्या ज्यादा है, क्योंकि एक तो वे प्रभावशाली हैं, मुखर हैं और उनकी संख्या भी ज्यादा है लेकिन रजनीबाला तो पंडित नहीं थी। वह तो दलित थी। इसके अलावा हम थोड़े और गहरे उतरें तो पता चलेगा कि इस वर्ष अब तक आतंकवादियों ने 13 लोगों की हत्या की है, उनमें चार पुलिस के जवान थे, तीन हिंदू थे और छह मुसलमान थे। इन मुसलमानों में पुलिस वालों के अलावा पंच, सरपंच और टीवी की एक महिला कलाकार भी थी। कहने का अर्थ यह कि आतंकवादी सबके ही दुश्मन हैं। वे घृणा और घमंड से भरे हुए होते हैं। वे जिनसे भी घृणा करते हैं, उनकी हत्या करना अपना धर्म समझते हैं। क्या वे यह नहीं जानते यह कुकर्म वे इस्लाम के नाम पर करते हैं और उनकी इस करनी की वजह से इस्लाम सारी दुनिया में बदनाम होता रहता है। ऐसे ही हिंसक उग्रवादियों की मेहरबानी के कारण आज पाकिस्तान और अफगानिस्तान बिल्कुल खस्ता-हाल हुए जा रहे हैं। कश्मीर में इधर कुछ हफ्तों से आतंकवादी हमलों में जो बढ़त हुई है, उसका एक कारण यह भी लगता है कि ये आतंकवादी नहीं चाहते कि भारत-पाक रिश्तों में जो सुधार के संकेत इधर मिल रहे हैं, उन्हें सफल होने दिया जाए। इधर जब से शाहबाज शरीफ की सरकार बनी है, दोनों देशों के नेताओं का रवैया रचनात्मक दिख रहा है। दोनों देश सीमा पर युद्ध विराम समझौते का पालन कर रहे हैं और सिंधु-जल विवाद को निपटाने के लिए हाल ही में दोनों देशों के अधिकारियों की बैठक दिल्ली में हुई है। पाकिस्तान के व्यापारी भी बंद हुए आपसी व्यापार को खुलवाने का आग्रह कर रहे हैं।

कश्मीर में हिंदुओं की लक्षित हत्याओं का सिलसिला

प्रमोद भार्गव

कश्मीर में पाकिस्तान परस्त आतंकवादियों ने लक्षित हिंसा के तहत कश्मीरी हिंदुओं को निशाना बनाए जाने का सिलसिला तेज कर दिया है। कश्मीर में यह सिलसिला अक्टूबर 2021 से शुरू हुआ और 2 जून को कुलगाम में बैंक मैनेजर विजय कुमार की हत्या के साथ यह संख्या 19 हो गई है। इससे पहले 31 मई को दलित स्कूल शिक्षिका रजनीबाला की हत्या और 12 मई को कश्मीरी पंडित राहुल भट्ट को दफ्तर में घुसकर मार दिया था। तभी से 5000 हिंदू कश्मीरी सड़कों पर उतर आए हैं। उन्होंने चेतावनी दी है कि तत्काल घाटी के बाहर तबादले नहीं किए गए तो सामूहिक पलायन करेंगे। यदि ऐसा होता है तो आतंकियों की मंशा पूरी होगी और घाटी में 1990 के हालात बनने में देर नहीं लगेगी। जबकि घाटी में उन राष्ट्रवादी मुस्लिमों को भी आतंकी निशाना बना रहे हैं, जो सरकारी नीतियों पर भरोसा जताते हुए उन पर अमल कर रहे हैं। इस वजह से 13 मई को पुलिसकर्मी रियाज अहमद एवं सैफुल्ला कादरी और 25 मई को टीवी कलाकार अमरीन भट्ट की भी आतंकियों ने निर्मम हत्याएं की हैं। अतएव पाक परस्त आतंकियों के मंसूबे तोड़ने हैं तो धैर्य और साहस का परिचय हिंदुओं को देना होगा। पलायन से अच्छा है, वह सरकार से निजी सुरक्षा के लिए लाइसेंसी हथियारों की मांग करें और स्थानीय पुलिस व सेना के साथ अपनी सुरक्षा के लिए खुद कटिबद्ध हो जाएं।

दरअसल घाटी की बदलती स्थिति को आतंकी कुबूल नहीं कर पा रहे हैं। नतीजतन वे सिलसिलेवार बचे-खुचे अल्पसंख्यकों की हत्याएं करके ऐसी दहशत पैदा करना चाहते हैं कि घाटी से तीन दशक पहले खदेड़ दिए गए हिंदुओं की वापसी की जो उम्मीदें बंधी हैं, उन पर पानी फिर जाए। इस दहशतगर्दी के पीछे एक वजह यह भी है कि धारा-370 और 35-ए के खात्मे के बाद विस्थापित गैर-मुस्लिमों की संपत्तियों से अवैध कब्जे हटाने की मुहिम तेज हो गई है। 1990 के बाद यह पहला अवसर है कि विस्थापितों की जायदाद से कब्जे छुड़ाकर वास्तविक भूमि-स्वामियों को संपत्ति सौंपी जा रही है। लिहाजा पाकिस्तान परस्त आतंकी चाहते हैं कि कश्मीरी हिंदुओं की वापसी मुश्किल बनी रहे। साथ ही कश्मीरी पंडितों का हौसला बढ़ाने की दृष्टि से नरेन्द्र मोदी सरकार ने कश्मीरी हिंदुओं के लिए 6000 सरकारी नौकरियों के पद सृजित किए हैं। इनमें से 5900 पद भर भी गए। रजनी बाला और उसके पति राजकुमार को इन्हीं सृजित पदों में से अनुसूचित जाति के कोटे में नौकरी मिली थी। धारा-370 हटने से पहले इस राज्य में अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों को सरकारी नौकरी देने पर प्रतिबंध लगा हुआ था। आतंकियों के बौखलाने का एक कारण आतंकवादी यासीन मलिक को सजा सुनाना भी है। जबकि घाटी में सांप्रदायिक सौहार्द्र का माहौल बन रहा है। इसबार बड़ी संख्या में पर्यटक भी घाटी में पहुंचे हैं। नतीजतन लोगों की माली हालात सुधरने के साथ रौनक भी बढ़ी है, जो आतंकियों की बर्दाश्त से बाहर है। ऐसे में फारूक अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती जैसे नेता रजनी की हत्या को लेकर आग में घी डालने का काम कर रहे हैं। 1990 में कश्मीर में शुरू हुए पाक प्रायोजित आतंकवाद के चलते घाटी से कश्मीर के मूल सांस्कृतिक चरित्र के प्रतीक कश्मीरी पंडितों को बेदखल करने की सुनियोजित साजिश रची गई थी। इस्लामी कट्टरपंथियों का मूल मकसद घाटी को हिन्दुओं से विहीन कर देना था। इस मंशा में वे सफल भी रहे। देखते-देखते वादी से हिन्दुओं का पलायन शुरू हो गया और वे अपने ही पुश्तैनी राज्य में शरणार्थी बना दिए गए। ऐसा हैरान कर देने वाला दूसरा उदाहरण अन्य किसी देश में नहीं है। पूरे जम्मू-कश्मीर में करीब 45 लाख कश्मीरी अल्पसंख्यक हैं, जिनमें से 7 लाख से भी ज्यादा विस्थापन का दंश झेल रहे हैं। घाटी में मुस्लिम एकरूपता इसलिए है, क्योंकि वहां से मूल कश्मीरी हिंदुओं का पलायन हो गया है और जो शरणार्थी हैं, उन्हें बीते 75 साल में न तो देश की नागरिकता मिली है और न ही वोट देने का अधिकार मिला। हालांकि अब नागरिकता और वोट के अधिकार मिल गए हैं। दरअसल अनुच्छेद-370 हटने के बाद भी हालात में सुधार नहीं हो पा रहा है, तो इसका एक बड़ा कारण मजहबी कट्टरता पर चोट नहीं कर पाना है। अफगानिस्तान में तालिबानी कब्जे के बाद इस सोच को बल मिला है। साफ है कि यह समस्या अब राजनैतिक व संवैधानिक नहीं रह गई है, बल्कि अब धार्मिक चरमपंथ के रूप में सामने आ रही है। यह हिंसक उन्मादी सोच पाकिस्तान से निर्यात आतंकवाद तो है ही, घाटी के मस्जिदों और मदरसों में फैला वह तंत्र भी है, जो आतंक की फसल बोने और उगाने का काम करता है। यही वजह है कि जितने भी इस्लामिक देश हैं, उनमें न तो अल्पसंख्यकों का जनसंख्यात्मक घनत्व बढ़ रहा है और न ही उन्हें नागरिक समानता के अधिकार मिल रहे हैं। कश्मीर में भी जिहादी चाहते हैं कि गैर-मुस्लिम या तो इस्लाम स्वीकार करें या फिर घाटी छोड़ जाएं। इस दोषपूर्ण मंशा को संविधान निर्माण के समय डॉ. भीमराव अंबेडकर ने समझ लिया था। शेख अब्दुल्ला ने जब जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने की मांग की तो अंबेडकर ने सख्त लहजे में कहा था कि ह्यआप चाहते हो कि भारत कश्मीर की रक्षा करे, कश्मीरियों की आर्थिक सुरक्षा करे, कश्मीरियों को संपूर्ण भारत में समानता का अधिकार मिले, लेकिन भारत और अन्य भारतीयों को आप कश्मीर में कोई अधिकार देना नहीं चाहते? मैं देश का कानून मंत्री हूं और मैं अपने देश के साथ कोई अन्याय या विश्वासघात किसी भी हालत में नहीं कर सकता हूं। विडंबना देखिए कि मुस्लिम समाज देश में हर जगह बृहद हिंदू समाज के बीच अपने को सुरक्षित पाता है, किंतु जहां कहीं भी हिंदू अल्पसंख्यक मुस्लिमों के बीच रह रहे हैं, उनकी सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है। बावजूद नेहरू के अनावश्यक दखल से कश्मीर को विशेष दर्जा मिल गया। इस भिन्नता का संकट देश बंटवारे से लेकर अबतक भुगत रहा है। यही वजह है कि बंटवारे के बाद पाकिस्तान से जो हिंदू, बौद्ध, सिख और दलित शरणार्थी के रूप में जम्मू-कश्मीर में ही ठहर गए थे, उन्हें मौलिक अधिकार आजादी के 75 साल में भी पूरी तरह नहीं मिले हैं। इनकी संख्या करीब 70-80 लाख है, जो 56 शरणार्थी शिविरों में सभी सरकारी कल्याणकारी योजनाओं से महरूम रहते हुए बद् से बदतर जिंदगी का अभिशाप धारा-370 हटने से पहले तक भोगते रहे हैं।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

नेहरू के अनावश्यक दखल से कश्मीर को विशेष दर्जा मिल गया। इस भिन्नता का संकट देश बंटवारे से लेकर अबतक भुगत रहा है। यही वजह है कि बंटवारे के बाद पाकिस्तान से जो हिंदू, बौद्ध, सिख और दलित शरणार्थी के रूप में जम्मू-कश्मीर में ही ठहर गए थे, उन्हें मौलिक अधिकार आजादी के 75 साल में भी पूरी तरह नहीं मिले हैं। इनकी संख्या करीब 70-80 लाख है, जो 56 शरणार्थी शिविरों में सभी सरकारी कल्याणकारी योजनाओं से महरूम रहते हुए बद् से बदतर जिंदगी का अभिशाप धारा-370 हटने से पहले तक भोगते रहे हैं

लौटा दो ढ़क्कन वाला मास्क

सुनील कुमार महला

कोरोना अब खत्म प्रायः सा हो गया है, तभी शायद आजकल लोगों में कोरोना का भय नहीं रहा। अजी जब भय ही नहीं रहा तो आजकल मॉस्क भी कोई नहीं लगाता। मॉस्क आजकल सभी को टॉस्क नजर आता है लेकिन भैय्या जी जब से ये मॉस्क हमारी जिंदगी से गया है, भगवान कसम हमारी लुटिया डूब गई है। मॉस्क ने हमारा इतना साथ दिया है, जितना साथ शायद एक लुगाई (पत्नी) भी अपने पति को नहीं देती होगी। इन दिनों "आई एम नॉट वियरिंग ऐनी मॉस्क"। इसलिए दुनिया हमारे बारे में रही है बार बार "ऑस्क"। वो क्या है कि बाजार में हमारी उधारी बहुत है। पहले मॉस्क पहनकर उधार देने वालों की आंखों के सामने से ही धीरे से सरक जाया करते थे, किसी को पता तक नहीं लगता था। लेकिन आजकल हर कोई उधार के लिए हमें टोक देता है और हर कहीं मुखड़ा देखकर हमें सड़क, गली-मोहल्ले या जहाँ जिसका मन चाहे वहाँ हमें रोक देता है और हमसे पैसे उगलवाने के लिए अपनी सारी ताकत झोंक देता है। हम न जाने कितनी बार मॉस्क से कर्जदारों से बचें हैं। यह मॉस्क की ही कहानी है कि आजकल हमारी बीबी हमसे बहुत नाराज रहती है। मॉस्क नहीं है न। पहले थूथड़ी (मुंह) में आठ-सात गुटखे दबाकर चूसते रहते थे, बीबी क्या किसी की भी मजाल थी,जो हमें गुटखा खाते हुए पकड़ सके। अजी ! बीबी छोड़िए, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, सिनेमा हॉल, सुलभ कॉम्प्लेक्स, सार्वजनिक स्थानों पर हमने मॉस्क की आड़ में न जाने कितना थूका ?, अजी इतना थूका कि सीसीटीवी कैमरा भी हमारी फोटो लेने से चूका। अजी ! माफ करें मॉस्क की आड़ में स्वच्छता गई भाड़ में। कोरोना काल में हमने तंबाकू वाले खूब बीड़े गटकाये हैं और सिगरेट,बीड़ी ही नहीं हुक्के तक के खूब कश लगाये हैं। मुआ कोरोना क्या गया, हमारी ऐश ले गया। भगवान कसम ! मॉस्क से हमारे चेहरे पर ग्लो(चमक) आ गया था, ये मखमली सा चेहरा न जाने किस किस को भा गया था। अजी ! कुल मिलाकर बात ये है कि मॉस्क से हमारा चेहरा छा गया था। अब मॉस्क नहीं है तो बीवी सूंघ के पता लगा लेती है कि क्या कांड किया है ? जब तक मॉस्क हमारे संग था, तब तक न हाथ तंग था और न मुंह तंग था। उधारी से रोज घी पीता था और ऐश से जीता था। तब अजय देवगन नहीं हम ही गुटखा किंग थे। अजी ! तब हमारी जुबां ही केसर हुआ करती थी, हमारे रहते किसी ओर की जुबां पर केसर चढ़ जाए, ये हो नहीं सकता। अजी ! और तो और मॉस्क होने तक हमने खूब ट्रैफिक सिग्नल तोड़े, किसी के आगे भी हाथ न जोड़े, पुलिस के नहीं खाये कभी कोड़े, हम तो मॉस्क संग थे चौड़े ,बनकर घोड़े खूब थे दौड़े। अजी ! बेचारा ट्रैफिक हवलदार तो आज तक हमारे ट्रैफिक सिग्नल तोड़ने के किस्से घूमफिर कर हमें ही सुनाता है लेकिन उसे आज तक यह पता नहीं चल पाया है कि सस्स्साला वो हम ही थे, जिसने न जाने कितनी बार अपनी फटफटिया पर चार-चार बंदे बिठा रखे थे और रेड लाइट पर ही दौड़े थे। अजी ! ये जो मॉस्क है न इसमें सामर्थ्य बहुत है, योग्यता बहुत है। ये हमारी तरह अनक्वालीफाइड(अयोग्य) नहीं है। वो जब हमारे मॉस्क लगा होता था न, तब हम स्टेज से नेताओं की तरह खूब विकास के भाषण दिया करते थे। एकबार तो हमने पैट्रोल-डीजल महंगा होने पर अपने भाषण के दौरान यह कहा था कि हम पैट्रोल-डीजल की बचत के लिए ढ़लान वाली सड़कें बनवा देंगे।वो तो शुक्र है कि मॉस्क ने हमारी पहचान छुपा ली थी,और हम वहां से टाइम निकाल कर भाग छूटे थे,क्योंकि बाद में एक दर्शक किसी से बातचीत करते हुए उससे पूछ बैठा था कि "फिर उनका क्या होगा जो ढ़लान चढ़ते हैं ?" अजी ! अपने विकास भाषणों में हमने अनेक लोक-लुभावन योजनाएं जनता के समक्ष फेंकी थी और यह मॉस्क ही था जिसके कारण हमारी भाव-भंगिमाओं की जनता के पास न कोई रेकी थी। अजी ! मॉस्क पहन भाषण देते वक्त हम अपनी ही बताई इन योजनाओं पर अंदर ही अंदर खूब हंसते थे, लेकिन मॉस्क की कसम, मॉस्क पहन हम ही असली नेता लगते थे। जनता को हमने मॉस्क पहन खूब मूर्ख बनाया और मां कसम एक भी वोट नहीं गंवाया। अजी ! एक बात बताऊँ, वोट लेने के बाद हमारी जगह नेता बनकर, हमारा हमशक्ल ही दिखावे के लिए(कि नेताजी को जनता की खूब चिंता, फिक्र है) एकाध बार जनता के बीच आया। और तो और नेता बनने से पहले हम प्रेम व्रेम के चक्कर में भी पड़े थे। ठीक नहीं थी हमारी हरकतें, लेकिन मॉस्क के कारण थप्पड़ किसी ने भी न जड़े थे। अजी ! मॉस्क ने हमारी सैकड़ों बार जान बचाई, किसी को कोई शक वक भी नहीं हुआ।

अजी ! होली में मॉस्क लगाकर रंग खेलने के मजे के बारे में तो आप पूछो ही मत। वैसे, मॉस्क का असली फायदा इस लेखक को नहीं बल्कि महिलाओं को ज्यादा हुआ है। मॉस्क महिलाओं को मितव्ययी बनाता है। अजी ! इस देश की महिलाओं की लिपस्टिक को मॉस्क ने ढ़क लिया है। तोताराम जी कोरोना काल में बहुत खुश थे, उनकी धर्मपत्नी ने कभी लिपस्टिक नहीं लगाई, अपने होठों को दिलकश,लुभावना बनाने के लिए वो कभी ब्यूटी पार्लर भी नहीं गई। वो क्या है न कि मॉस्क में लिपस्टिक दिखाई तो देती नहीं, फायदा क्या है लिपस्टिक चेपने का। सारे के सारे पैसे बच गए। तभी मॉस्क के गुणों से प्रभावित होकर तोताराम जी ने नारा दिया था-"मॉस्क लगाओ, पैसे बचाओ।" वैसे तोताराम जी की धर्मपत्नी खूबसूरत नहीं है, तभी तो कोरोना काल में उनके मॉस्क लगाने पर तोताराम जी दूसरों को दिखाने के लिए(कि वे भी अपनी पत्नी को बहुत प्यार व्यार करते हैं) जोर जोर की आवाज में गाया करते थे-" ऐ मेरी जोहरा जबीं तुझे मालुम नहीं, तू अभी तक है हसी, और मै जवान तुझपे कुरबान मेरी जान मेरी जान, ऐ मेरी जोहरा जबीं तुझे मालुम नहीं...!" देखा आपने ! तोताराम जी को कितना फायदा हुआ है मॉस्क से। चलते चलते एक बात और, स्वयं तोताराम जी जब किसी से बातचीत करते हैं तो थूक के इतने छींटे उछालते हैं, जितने हमारे नेता एक दूसरे के खिलाफ आरोप प्रत्यारोप लगाते हैं। मॉस्क लगाने से थूक के छींटों में अभूतपूर्व कमी आई है।

अजी ! इतनी कि जैसे रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद विश्व में गेहूँ की कमी हो गई है। बहरहाल, हम तो मॉस्क के बारे में बस इतना ही कहेंगे कि "ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी, मगर मुझको लौटा दो....वो ढ़क्कन वाला मॉस्क....!"

कैसे बनेगा भविष्य का भारत?

गिरीश्वर मिश्र

वैसे तो जल, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र जैसी प्राकृतिक रचनाओं से सजी यह सृष्टि परस्पर सम्बद्ध है और सभी तत्व एक-दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं पर पृथ्वी वासी मनुष्य विकास क्रम में सब कुछ का कृत्रिम बंटवारा कर घरौंदों का निर्माण कर उस पर आधिपत्य जमा कर उसके स्वामित्व का भोग करते नहीं अघाते जिसके चलते संघर्ष, हिंसा और युद्ध जैसी घटनाएं होती हैं। इनसे न केवल मनुष्यता को आघात पहुंचता है बल्कि प्राकृतिक परिवेश प्रभावित होता है। आज जलवायु-परिवर्तन जैसी परिघटना के जो परिणाम दिख रहे हैं वे अच्छे भविष्य का संकेत नहीं देते और भेदों को भुला कर एकजुट होकर काम करने के लिए बाध्य कर रहे हैं। देश और राष्ट्र की सत्ता अलग अस्मिता, संप्रभुता की मांग करती है परंतु आज कोई भी देश अन्य देशों से पूरी तरह अलग नहीं रह सकता। भारत ने इस सत्य को पहचाना है और अतीत में हुई गलतियों न हों इसके लिए कमर कसी है। स्वतंत्र भारत ने विभिन्न देशों के साथ बराबरी और भाईचारे का नजरिया अपनाया। मानवीय दृष्टि वाले गुटनिरपेक्ष भारत को चीन और पाकिस्तान जैसे द्वेष भावना रखने वाले पड़ोसियों से साबका पडा। इनके साथ अबतक हुई कई मुठभेड़ों से भारत ने यह सीखा है कि बदलते माहौल में अपनी सामर्थ्य बढ़ाने का कोई विकल्प नहीं है। साथ ही शक्ति-संतुलन के लिए वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों के साथ बहुकोणीय संवाद भी बनाए रखना भी जरूरी है। औद्योगिक-आर्थिक गतिविधि के लिए दूर और नजदीक के देशों के साथ सहयोग जरूरी है। बहु ध्रुवीय होती जा रही दुनिया में अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियाँ कब करवट बदलेंगी यह कहना मुश्किल होता है इसलिए सावधानी के साथ अन्य देशों के साथ दूरियां और नजदीकियां नियमित करनी होती हैं। विगत वर्षों में भारत ने आर्थिक सुधारों के साथ एक नए युग में प्रवेश किया है जब उसे एक प्रमुख अर्थ-तंत्र वाले राष्ट्र के रूप में परिगणित किया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले लगभग सभी आर्थिक और राजनैतिक विमर्शों में भारत की सक्रिय भागीदारी रही है। भारत ने पड़ोसियों की मुश्किलों को आसान किया है। कोरोना महामारी के दौरान अनेक देशों को टीका उपलब्ध कराने और नेपाल, बांग्लादेश और श्रीलंका के विकास कार्यों और बुनियादी ढाँचे के लिए आर्थिक मदद की दृष्टि से भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। एशिया में भारत देश प्रकृति की अद्भुत रचना, अपनी भौतिक समृद्धि और ज्ञान की उत्कृष्टता के लिए प्राचीन काल से ही विदेशियों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ था। इस क्रम में वह कइयों की लोलुप दृष्टि का भी केंद्र बनता रहा और अनेक आक्रांताओं ने यहाँ के शांतिप्रिय समाज के जीवन में विघ्न डाला। कुछेक अपवादों को छोड़ दें तो विशाल केंद्रीय शासन-सत्ता के गठन की जगह विकेंद्रित छोटे राज्य या जनपद की व्यवस्था ही यहाँ अधिक प्रचलित थी जहां लोकतांत्रिक प्रवृत्तियों के पनपने की भी गुंजाइश थी। यहाँ के ऐसे राजनीति के परिदृश्य में आक्रांताओं का एकजुट हो कर तीव्र प्रतिरोध न हो सका और मानव-सुलभ दुर्बलताओं ने भी इसमें भरपूर सहयोग किया। विदेशी राजसत्ता के लगातार हस्तक्षेप की परिणति जो सघन रूप से अपनी उपस्थिति दर्ज कर सकी वह मुगल सत्ता की थी जो कई सदियों लम्बी राजनैतिक दखल बन गई और उनकी कई पीढ़ियों ने यहाँ शासन किया जिसके दूरगामी परिणाम हुए। समाज की संरचना क्षत-विक्षत हुई , बड़े पैमाने पर धर्मांतरण हुआ। कुछ अंशों में दोतरफे पारस्परिक प्रभाव भी पड़े पर सामाजिक-सांस्कृतिक परिणाम बड़े जटिल होते गए। राग द्वेष की विभिन्न धाराओं के बीच अस्मिताओं के द्वंद्व और वर्चस्व की लड़ाई चलती रही।

इसके फलस्वरूप विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों की अपनी शक्ति के अनुसार सत्ता बनती बिगड़ती रही। इस क्रम में अंग्रेजों के दाखिले ने जो एक छद्म ढंग से व्यापार के रूप में शुरू हुआ और अंततः बर्तानवी साम्राज्य के उपनिवेश को स्थापित करने में सफलता पाई।

सिर्फ मोदी विरोध की राजनीति कर रही कांग्रेस

रामा सिन्हा

भारतीय राजनीति कब किस समय कौन-सी करवट बैठेगी, इसका कोई भी विशेषज्ञ अनुमान नहीं लगा सकता। अगर इसका अनुमान लगाएगा भी तो संभव है कि उसका यह अनुमान भी पूरी तरह से गलत प्रमाणित हो जाए। हमारे देश में लम्बे समय तक सत्ता पक्ष की राजनीति करने वालों राजनेताओं के लिए यह समय वास्तव में ही अवसान काल को ही इंगित कर रहा है, अवसान इसलिए, क्योंकि उनके पास अपने स्वयं के शासनकाल की कोई उपलब्धि नहीं है। अगर उनका शासन करने का तरीका सही होता तो संभवतः उन्हें इस प्रकार की स्थिति का सामना नहीं करना पड़ता। कांग्रेस आज भले ही अपनी गलतियों के कारण उत्पन्न हुई स्थितियों को वर्तमान सरकार पर थोपने का काम करे, परंतु इस बात को कांग्रेस भी जानती है कि वह केन्द्र सरकार का विरोध न करे तो उसके पास राजनीति करने के लिए कुछ भी नहीं है। आज देश में जो समस्या दिखाई दे रही है, कांग्रेस उसे ऐसा प्रचारित करती है, जैसे यह सारी समस्याएं मोदी के शासनकाल में ही आई हैं। भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद देश में सबसे ज्यादा शासन करने वाली कांग्रेस पार्टी की इतनी दयनीय स्थिति क्यों बनी, इसका अध्ययन किया जाए तो यही सामने आता है कि इस स्थिति के लिए कांग्रेस के नेता ही जिम्मेदार हैं। कांग्रेस ने प्रारंभ से ही विविधता में एकता के सूत्र को स्थापित करने वाली परंपरा पर राजनीतिक प्रहार किया, एक प्रकार से कहा जाए तो कांग्रेस ने विविधता को छिन्न-भिन्न करने की राजनीतिक चाल खेली। अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की सीमाओं को लांघते हुए कांग्रेस ने हिन्दू आस्था पर घातक प्रहार करने का षड्यंत्र किया। इसमें कांग्रेस के साथ वामपंथियों ने कदम से कदम मिलाकर सहयोग किया। यही चाल वह आज भी खेलती हुई दिखाई दे रही है। समाज में विभाजन की खाई को पैदा करने वाले राजनीतिक दल भले ही इस नीति पर चलकर शासन करते रहें, लेकिन देश की जो तस्वीर बनी, वह बहुत ही कमजोर चित्र को दर्शा रही है।

मोईन अली टेस्ट क्रिकेट में वापसी को तैयार, लेकिन ये है शर्त!

लंदन । इंग्लैंड के हरफनमौला खिलाड़ी मोईन अली ने कहा है कि ब्रेंडन मैकुलम के नेतृत्व में टेस्ट क्रिकेट में वापसी के लिए तैयार हैं। 34 वर्षीय मोईन ने पिछले साल 64 मैचों में 195 विकेट लेने और 28.29 की औसत से 2914 रन बनाने के बाद पांच शतकों के साथ टेस्ट क्रिकेट छोड़ दिया। उन्होंने क्रीन्स बर्थडे ऑनर्स में क्रिकेट की सेवाओं के लिए ओबीई से सम्मानित होने के बाद मीडिया से बात करते हुए अपने मन की बात कही।

मोईन इंग्लैंड के व्हाइट-बॉल क्रिकेट के प्रमुख सदस्य हैं और 2019 विश्व कप की विजयी टीम का हिस्सा थे। उन्होंने कहा कि मैकुलम ने कुछ दिन पहले इंग्लैंड के नए कोच के रूप में पदभार संभालने के बाद उन्हें संभावित रेड-बॉल रिटर्न के बारे में बताया था। एक अखबार ने मोईन के हवाले से कहा, बाज (मैकुलम) ने मुझे मैसेज कर पूछा कि क्या मैं 'इन' हूं। 'मैंने इंडियन प्रीमियर लीग में उसके साथ खेला है और उसके काम करने के तरीके का वास्तव में आनंद लिया है। हमने बात की और उन्होंने संभावित रूप से उल्लेख किया, भविष्य में यदि कोई दौरा है या जब भी वास्तव में, क्या मैं उपलब्ध रहूंगा? मैंने कहा 'उस समय मुझे बुलाओ'। हम देखेंगे, दरवाजा खुला है।

इंग्लैंड ने साल की शुरुआत में एशेज गंवाने के बाद टीम को रीसेट कर दिया है और न्यूजीलैंड के खिलाफ श्रृंखला के साथ एक नए युग के कप्तान बेन स्टोक्स और मैकुलम से शुरुआत की। मोईन ने कहा कि वह यह देखने के लिए उत्सुक हैं कि नए नेतृत्व में इंग्लैंड के साथ क्या होता है। और भले ही यह दुखद है कि क्रिस सिल्वरवुड मुख्य कोच के रूप में चले गए और (जो) रूट ने कप्तान के रूप में पद छोड़ दिया, लेकिन यह हमेशा रोमांचक होता है जब कोई नया अध्याय होता है।

स्वप्निल कुसाले बाकू निशानेबाजी विश्व कप में पुरुष थ्री पोजीशन के फाइनल में

नई दिल्ली। भारत के स्वप्निल कुसाले ने अजरबेजान के बाकू में आईएसएसएफ (अंतरराष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ) राइफल/पिस्टल/शॉटगन विश्व कप की पुरुष 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन स्पर्धा के फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। युवा भारतीय निशानेबाज ने नीलिंग पोजीशन में 200 में से 199 अंक जुटाकर शुरुआत की और फिर प्रोन पोजीशन में 198 अंक बनाए। स्वप्निल स्टैंडिंग पोजीशन में 194 अंक से कुल 591 अंक जुटाकर क्वालीफिकेशन में 53 निशानेबाजों के बीच दूसरे स्थान पर रहे।

रियो ओलंपिक के रजत पदक विजेता यूक्रेन के सेरही कुलिश स्वप्निल से तीन अंक अधिक जुटाकर शीर्ष पर रहे।

फुटबॉल की 10 सबसे चर्चित महिला फैन, 5वीं करवा चुकी प्लेबॉय शूट

लंदन। फुटबॉल को बड़ी गेम बनाने में प्रशंसकों को सबसे बड़ा योगदान है। खिलाड़ी भी समय समय पर इस बात पर जोर देते रहे हैं कि बिना दर्शकों के उत्साह के वह मैदान पर कुछ भी नहीं है।

प्रशंसक खेल में तालियों की गडग़ड़ाहट के साथ जुनून और समर्पण

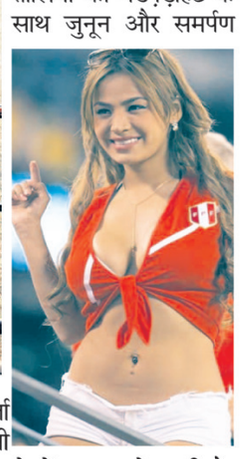

लाते हैं। फुटबॉल में एक खास दर्जा महिला फैंस को भी जाता है जो अपनी खूबसूरती के साथ सबको प्रभावित करने में सफल हो जाती हैं। आइए जानते हैं- फुटबॉल की 10 सबसे चर्चित महिला फैंस के बारे में जिनके ग्लैमरस रूप ने हर किसी का दिल जीत लिया। इवाना नोल, लारिसा रिकेल्मे, नताशा थॉमसन, कैटरीना मारिया, क्लाउडिया रोमानी।

द रॉयल ग्रैंड्योर थीम पर हुई दीपक-जया की शादी-घोड़ी पर चढ़कर दीपक ने किया भागड़ा; आगरा में हुई वीआईपी शादी

आगरा। चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाड़ी दीपक चाहर ने अपनी गर्लफ्रेंड जया भारद्वाज के शादी की। आगरा के फतेहाबाद रोड के फाइव स्टार होटल जेपी पैलस इस वीआईपी शादी का गवाह बना। सफेद शेरवानी और राजस्थानी साफा के साथ दीपक ने अपनी शादी को खास बनाया। वो घोड़ी चढ़कर बैंड-बाजा के साथ बारात लेकर होटल पहुंचे।

इस शादी में परिवार और खास लोगों को ही न्योता दिया गया था। मीडिया से भी दूरी बनाकर रखी गई थी। दीपक शादी के हर पल को इंज्वाय करते दिखे। जैसे ही, दीपक घोड़ी पर बैठे, बांके बिहारी की जयकारे लगे। घोड़ी चढ़ने के बाद वो हाथ उठाकर भागड़ा कर रहे थे। बैंड-बाजे की धुन पर दीपक के चचेरे

भाई लेग स्पिनर राहुल चाहर, बहन मालती चाहर, उनके पिता लोकेंद्र सिंह चाहर, चाचा देशराज चाहर, टीम इंडिया के सदस्य के साथ खास मेहमानों ने डांस किया। ये बारात होटल पहुंचती है। इस शादी समारोह की थीम को 'द रॉयल ग्रैंड्योर' नाम दिया गया है। ये थीम शाही अंदाज में शादियों के लिए इस्तेमाल की जाती है।

मेहमानों के साथ फोटो सेशन देर रात तक चला

बारात के होटल पहुंचने के बाद दीपक चाहर द्वारचार में बैठे। वहां से सीधे मंडप में पहुंचे थे। कुछ देर में गुलाबी लहंगे में जया मंडप की तरफ बढ़ती नजर आती है। उनके कुछ खास दोस्त और परिवार के सदस्य साथ थे। मंडप में वो दीपक का हाथ पकड़कर पहुंचती है। यहां जयमाल और फिर सात फेरों की रस्म पूरी कराई जाती है।

इसके बाद ये वीआईपी जोड़ा मंच पर पहुंचता है। जहां एक-एक करके मेहमानों से बातचीत और फोटो सेशन होते हैं। कई मौकों पर दीपक जया के साथ हंसी मजाक के मूड में दिखते हैं। ये जोड़ा पूरी शादी के हर पल को इंज्वाय करता दिखता है। आपको ये भी बता दें कि इसी होटल में मंगलवार सुबह मेहंदी सेरेमनी हुई थी। जिसके बाद म्यूजिक प्रोग्राम में दीपक और जया ने डांस किया था।

विजेता मुक्केबाज बेटियों से मिले पीएम मोदी, विश्व चैंपियन निकहत ने भेंट किए बॉक्सिंग ग्लव्स

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व बॉक्सिंग चैंपियनशिप में पदक जीतने वाली तीन महिला मुक्केबाजों निकहत जरीन, मनीषा मौन और परवीन हुड्डा से मुलाकात की। इस दौरान प्रधानमंत्री ने तीनों से काफी देर तक बात की। निकहत ने अपने ट्वीटर अकाउंट पर फोटो भी शेयर की। उन्होंने प्रधानमंत्री के साथ सेल्फी ली और टी-शर्ट पर ऑटोग्राफ भी लिया।

इस्तांबुल विश्व चैंपियनशिप में 52 भार वर्ग का स्वर्ण जीतने वाली निकहत जरीन, 57 और 63 भार वर्ग में कांस्य पदक जीतने वाली हरियाणा की मुक्केबाज मनीषा मौन और प्रवीण हुड्डा को पीएम ने आवास पर आमंत्रित किया।

निकहत ने पीएम को अपना स्वर्ण पदक दिखाया। उन्होंने हाथ में पदक लेकर पीएम के साथ सेल्फी भी ली। पीएम ने तीनों बॉक्सरों की टी शर्ट पर अपने ऑटोग्राफ भी दिए। निकहत ने पीएम से मुलाकात पर आभार का ट्वीट किया। निकहत ने पीएम के साथ अपनी फोटो भी साझा की। वहीं मनीषा ने ट्वीट में कहा कि प्रधानमंत्री से मिलकर वह अपने को गौरवान्वित महसूस कर रही हूं। उन्होंने भी इस मुलाकात के लिए पीएम का आभार जताया। प्रधानमंत्री ने मुक्केबाज बेटियों के साथ मुलाकात कर देश का नाम रोशन करने वाले पदक विजेताओं का हौसला बढ़ाने का क्रम जारी रखा है।

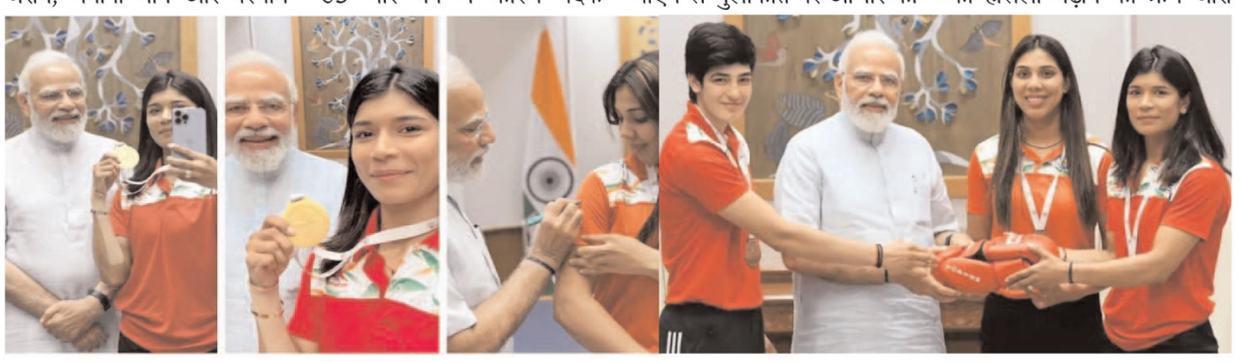

इससे पहले उन्होंने थॉमस कप जीतने वाली टीम को बैंकॉक में ही फोन कर बधाई दी। इसके बाद उन्होंने पूरी टीम को अपने आवास पर आमंत्रित किया था।

क्रिकेटरों को अपने जिले का प्रतिनिधित्व करने में फक्र महसूस होना चाहिए: धोनी

चेन्नई । पूर्व भारतीय कप्तान और चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने कहा कि क्रिकेटरों को अपने जिले का प्रतिनिधित्व करने में गर्व महसूस होना चाहिए क्योंकि यह शीर्ष स्तर पर पहुंचने के लिए पहला कदम होता है। धोनी ने यहां तिरूवल्लूर जिला क्रिकेट संघ (टीडीसीए) के रजत जयंती पर आयोजित एक कार्यक्रम में कहा, 'पहली बार है जब मैं जिला संघ की सफलता के मौके पर आयोजित जश्न का हिस्सा बन रहा हूं। मैं अपने जिला क्रिकेट संघ (रांची) को भी शुक्रिया कहना चाहूंगा। क्रिकेटरों को अपने जिले का प्रतिनिधित्व करने में गर्व महसूस होना चाहिए।' उन्होंने कहा, 'मुझे फक्र है कि मुझे अपने देश का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला लेकिन अगर मैं अपने जिले या स्कूल के लिए नहीं खेला हो तो यह मुमकिन नहीं होता।' इस मौके पर वह मुख्य अतिथि थे। उनके साथ आईसीसी के पूर्व अध्यक्ष और बीसीसीआई के पूर्व अध्यक्ष एन श्रीनिवासन भी मौजूद थे।

अब हर मैच के बाद मैं अपना विश्लेषण नहीं करता: अश्विन

नई दिल्ली। भारत के स्टार स्पिनर रविचंद्रन अश्विन का मानना है कि वह अपने करियर में ऐसे चरण पर पहुंच गए हैं जहां वह अपने मैच के बाद अपने प्रदर्शन का विश्लेषण करने को लेकर चिंतित नहीं होते। आफ स्पिनर ने कहा कि पिछले दो साल उनके लिए अच्छे रहे जिसमें उन्हें स्वदेश में टेस्ट मैचों में सफलता मिली और आस्ट्रेलिया का दौरा भी अच्छा रहा जहां भारत ने लगातार दूसरी बार श्रृंखला जीतकर इतिहास रचा। भारत के लिए 86 टेस्ट में 442 विकेट चटकाने वाले 35 साल के अश्विन ने चार साल के बाद सीमित ओवरों की टीम में भी वापसी की और पिछले साल यूएई में टी20 विश्व कप में खेले। अश्विन अभी इंगलैंड के खिलाफ पांचवें टेस्ट की तैयारियां कर रहे हैं। अश्विन ने अपनी तैयारियों पर एक शो के दौरान कहा कि मैं अब अपने प्रदर्शन का आकलन नहीं करता। मैं अपने जीवन के उस चरण में नहीं हूं जहां सोचूं कि मेरे आसपास क्या हो रहा है। उन्होंने कहा कि पिछले 2 साल काफी लोगों के लिए मुश्किल रहे लेकिन मेरे लिए यह काफी अच्छे रहे।

इसलिए सिर्फ अपने खेल का लुत्फ उठा रहा हूं। फिलहाल अश्विन परिवार के साथ समय बिताने को लेकर उत्सुक हैं। उन्होंने कहा कि ईमानदारी से कहूं तो अभी मैंने कोई योजना नहीं बनाई है। अंतरराष्ट्रीय सत्र काफी लंबा रहा। लंबे समय से जैविक रूप से सुरक्षित माहौल में रहा हूं, पांच महीने के बाद घर आने का मौका मिला है। इस समय मैं बस प्रत्येक दिन का लुत्फ उठाना चाहता हूं और आगे के बारे में नहीं सोचना चाहता।

तेलंगाना ने निकहत जरीन, इशा सिंह को दो करोड़ रुपये और आवासीय प्लॉट देने की घोषणा की

हैदराबाद। तेलंगाना सरकार ने तुर्की में महिला विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने वाली निकहत जरीन और जर्मनी में आईएसएसएफ जूनियर विश्व कप निशानेबाजी में स्वर्ण पदक जीतने वाली इशा सिंह दोनों को दो-दो करोड़ रुपये का नकद पुरस्कार देने की घोषणा की। आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव ने दोनों खिलाड़ियों को शहर के बंजारा हिल्स या जुबली हिल्स में आवासीय प्लॉट आवंटित करने का फैसला किया है।

टी इंडिया विंडीज के खिलाफ 3 वनडे-5 टी-20 मैचों की सीरीज खेलेगी

नई दिल्ली। भारतीय टीम 22 जुलाई से 7 अगस्त के बीच वेस्टइंडीज के खिलाफ 3 वनडे और 5 टी20 मैच खेलेगा। क्रिकेट वेस्टइंडीज (सीडब्ल्यूआई) और बीसीसीआई ने इसकी घोषणा की है। भारत 17 जुलाई को यूके दौरे पर एकमात्र टेस्ट खेलने के बाद इंग्लैंड से वेस्टइंडीज के लिए रवाना होंगे। यहां एकदिवसीय श्रृंखला और तीन टी-20 मैचों की मेजबानी त्रिनिदाद और टोबैगो और सेंट किट्स एंड नेविस में की जाएगी। इसके बाद अंतिम दो टी-20 संयुक्त राज्य अमेरिका के फ्लोरिडा के फोर्ट लॉडरहिल में आयोजित होंगे। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवासी भारतीयों के लिए विशेष तौर पर 6 और 7 अगस्त को फ्लोरिडा के ब्रोवार्ड काउंटी स्टेडियम में यह मैच करवाए जाएंगे। वेस्टइंडीज के कप्तान निकोलस पूरन ने आगामी सीरीज पर कहा- हमारे पास एक युवा टीम है जो क्रिकेट के उस ब्रांड को बहाल करने के लिए उत्सुक है जिसे वेस्टइंडीज टीम खेलने के लिए जाना जाता है। हमारी महत्वाकांक्षा हमेशा प्रतिस्पर्धी रहने की है, क्योंकि हम इस श्रृंखला का उपयोग आगामी टी 20 और 50 ओवर विश्व कप के लिए अपनी तैयारियों को ठीक करने के लिए करना चाहते हैं।

ऐसा है शैड्यूल

वनडे

पहला वनडे : 22 जुलाई (क्वींस पार्क ओवल, पोर्ट ऑफ स्पेन)
दूसरा वनडे : 24 जुलाई (क्वींस पार्क ओवल, पोर्ट ऑफ स्पेन)
तीसरा वनडे : 27 जुलाई (क्वींस पार्क ओवल, पोर्ट ऑफ स्पेन)
सभी वनडे मैच शाम 7 बजे से लाइव हैं।

टी-20 इंटरनैशनल

पहला टी-20ई 29 जुलाईः (ब्रायन लारा स्टेडियम, पोर्ट ऑफ स्पेन)
दूसरा टी-20ई 1 अगस्त (वार्नर पार्क, सेंट किट्स एंड नेविस)

तीसरा टी-20ई 2 अगस्त (वार्नर पार्क, सेंट किट्स एंड नेविस)
चौथा टी-20ई 6 अगस्त (ब्रोवार्ड) काउंटी ग्राउंड, फ्लोरिडा, यूएसए)
5वां टी-20ई 7 अगस्त (ब्रोवार्ड काउंटी ग्राउंड, फ्लोरिडा, यूएसए)
सभी टी-20 मैच रात 8 बजे से लाइव हैं।

मेरे पास कोई और ड्रैस नहीं है-फ्रेंच ओपन में कैमिला जियोर्गी की ड्रेस पर विवाद

पेरिस। फ्रेंच ओपन के दौरान महिला टेनिस प्लेयर कैमिला जियोर्गी को फील्ड अंपायर ने मैच से पहले अचानक रोक दिया। मामला बढ़ा तो पता चला कि अंपायर को कैमिला की पहनी पोशाक पर ऐतराज था। फ्रेंच ओपन के नियमों के मुताबिक यह पोशाक सही नहीं थी। उक्त मैच में दुनिया की 30वें नंबर की जियोर्जी ने सातवीं वरीयता प्राप्त आर्यना सबलेंका को 4-6, 6-1, 6-0 से हराकर पहली बार रोलांड गैरोस के चौथे दौर में प्रवेश किया।

हुआ यूं था कि सबालेंका के खिलाफ मैच शुरू होने से पहले अंपायर ने जिओर्गी से बात की थी। अधिकारी को लगा कि कैमिला द्वारा पहनी गई पोशाक पर एक विज्ञापन का लोगो निश्चित साइज ज्यादा बढ़ा है। उन्होंने कैमिला को इसे बदलने को कहा। इस पर कैमिला ने कहा- मेरे पास

कोई और ड्रैस नहीं है। यह मेरी एकमात्र पोशाक है। मैंने पहले इसीके साथ खेला था। टेनिस कमेंटेटर जोस मोर्गाडो के अनुसार, अंपायर ने जियोर्गी से कहा कि वह अपनी पोशाक में खेल सकती है लेकिन मैच के बाद इसके बारे में बात करनी होगी। बता दें मैच से पहले कैमिला ने अपने विज्ञापन दाता को टैग करते हुए लॉकर रूम की एक फोटो शेयर की थी। कैमिला ने जो ड्रैस पहनी थी उस पर लोगो नहीं लगा था लेकिन जब वह खेलने आई तो उस पर लोगो लगा हुआ था। बता दें कि फ्रेंच ओपन में खिलाड़ियों द्वारा पहने जाने वाले कपड़ों पर विज्ञापन का साइज निश्चित होता है। यह किसी भी प्रकार से बड़ा नहीं हो सकता। अगर खिलाड़ी नियमों की अवहेलना करता है तो उसे टूर्नामेंट से बाहर का रास्ता भी दिखाया जा सकता है।

मोहम्मद सिराज बोले- मेरा सीजन अच्छा नहीं था, इंगलैंड दौरे पर दिखाऊंगा दम

मुंबई। इंडियन प्रीमियर लीग 2022 में मोहम्मद सिराज ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर की ओर से निराशाजनक प्रदर्शन किया लेकिन भारत के उभरते हुए गेंदबाजों में शामिल इस तेज गेंदबाज को उम्मीद है कि वह इंग्लैंड में पांचवें टेस्ट में लाल ड्यूक्स गेंद से मजबूत वापसी करेंगे। सिराज ने आईपीएल में 15 मैच में 10.07 के इकोनॉमी रेट से सिर्फ नौ विकेट ही लिए थे। उन्हें 31 छक्के लगे जो टूर्नामेंट के इतिहास में किसी एक सत्र में एक गेंदबाज के खिलाफ सर्वाधिक छक्के हैं।

सिराज ने कहा- आईपीएल का यह सत्र उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा। पिछले दो सत्र में मेरा प्रदर्शन अच्छा था और इस बार प्रदर्शन में गिरावट आई। लेकिन मैं पिछले दो साल के प्रदर्शन से

आत्मविश्वास लूंगा। उन्होंने कहा- इस साल मेरे लिए खराब दौर रहा लेकिन मैं कड़ी मेहनत करके मजबूत वापसी करूंगा। मैं अपनी क्षमता और मजबूत पक्षों पर काम करूंगा। सिराज अब एजबस्टन में इंगलैंड के खिलाफ होने वाले मैच पर नजर टिकाए हुए हैं। सिराज ने मैच की तैयारियों बाबत कहा कि टेस्ट के लिए मेरी तैयारी अच्छी हो रही है। इंलैंड में ड्यूक्स गेंद का इस्तेमाल होता है, इंग्लैंड के हालात में गेंदबाजी करना हमेशा अच्छा होता है और ये गेंदबाजों की मददगार होती हैं। हम 2-1 से आगे चल रहे हैं। यह अच्छा है कि टेस्ट के कार्यक्रम में बदलाव किया गया और हमें अच्छा प्रदर्शन करने का भरोसा है।

आस्ट्रेलिया में हुई 2020-21 की टेस्ट श्रृंखला से पहले सिराज ने अपने पिता को गंवा दिया था। इसके बावजूद सिराज आस्ट्रेलिया में डटे रहे। ब्रिसबेन में चौथे टेस्ट में पहली बार पारी में पांच विकेट चटकाए। उन्होंने कहा- यह मेरे लिए सबसे यादगार लम्हा (ब्रिसबेन में पांच विकेट लेना) रहा। यह काफी भावुक था और अब्बा के गुजरने के बाद मुझे काफी कुछ सहना पड़ा।

अफगानिस्तान से निकाले लोगों ने अल्बानिया में किया प्रदर्शन

काबुल। पिछले साल तालिबान के सत्ता में लौटने के बाद अफगानिस्तान से निकाले गए लोगों के एक समूह ने संयुक्त राज्य अमेरिका भेजे जाने को लेकर में देरी पर निराशा जताते हुए अल्बानिया में प्रदर्शन किया। अल्बानिया की राजधानी तिराना के उत्तर-पश्चिम में 70 किलोमीटर (45 मील) की दूरी पर स्थित

शेंगजिन में परिवारों के एक छोटे समूह ने अमेरिका से उनके स्थानांतरण की प्रक्रिया को तेज करने का आह्वान किया। कुछ महिलाओं और बच्चों ने हाथों में पोस्टर पकड़े हुए थे जिनपर लिखा था, 'हमें भुला दिया गया है।' अगस्त और सितंबर 2021 में 2,400 अफगानों को अल्बानिया ले जाया गया और शेंगजिन और एक अन्य रिसॉर्ट शहर, ड्यूरेस में अस्थायी आश्रय प्रदान किया गया। संयुक्त राज्य अमेरिका और गैर-सरकारी संगठनों ने उन्हें समायोजित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की। अल्बानियाई सरकार ने उस समय कहा था कि वह अंतिम समझौते के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका जाने से पहले कम से कम एक साल के लिए हजारों अफगानों को यहां रखेगी। हाल ही में, सरकार ने उन्हें एक वर्ष से अधिक समय तक यहां रखने का वादा किया यदि उनके अमेरिकी वीज़ा में देरी हुई।

अमेरिकी सांसद ने कहा- भारत और अमेरिका के बीच एकजुटता वैश्विक हित के लिए फायदेमंद

वाशिंगटन। अमेरिका के एक सांसद ने कहा है कि भारत और अमेरिका के बीच एकजुटता वैश्विक हित के लिए अच्छी बात है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों ने कोविड-19 महामारी के दौरान भी साथ मिलकर काम किया था। प्रतिनिधि सभा के सदस्य डैरेन सोटो ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि भारत और अमेरिका के बीच सहयोग जारी रहेगा। सोटो ने बुधवार को अमेरिकी संसद की प्रतिनिधि सभा में कहा, अध्यक्ष महोदया, मैं भारत गणराज्य और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच मजबूत, बहुआयामी तथा परस्पर अहम साझेदारी का स्वागत करता हूं।

उन्होंने कहा, दोनों राष्ट्र शांति, प्रगति और समृद्धि के साझेदार हैं। दोनों लोकतांत्रिक देशों और मुक्त अर्थव्यवस्थाओं के बीच एकजुटता वैश्विक हित के लिए अच्छी बात है। सोटो ने कहा कि कोविड-19 महामारी के दौरान, दोनों देशों ने साथ मिलकर काम किया। उन्होंने कहा, टीकाकरण समेत स्वास्थ्य क्षेत्र में महत्वपूर्ण सहयोग किया गया। जब संक्रमण के मामले बढ़ रहे थे तब अमेरिका ने टीके के उत्पादन के लिए भारत को कच्चा माल उपलब्ध कराया। उन्होंने कहा, मेरे पिछले भारत दौरे के दौरान हमारे शिष्टमंडल को कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में हुई उन्नति के बारे में बताया गया। हमें बताया गया कि हमारे देशों के बीच संबंध में इसकी क्या भूमिका है और उद्योग जगत में इसका क्या प्रयोग हो सकता है।' सोटो ने कहा, 'हमने भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के पूर्व अध्यक्ष अलूरु सीलिन किरण कुमार से मुलाकात की और संगठन की संरचना, अभियान, प्रयोग और उपलब्धियों के पर चर्चा की।' उन्होंने कहा, 'बाद में हमने पूर्व विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री हर्ष वर्धन के साथ बैठक की और अंतरिक्ष तथा साइबर सुरक्षा में उपलब्धियों पर चर्चा की।'

नेवादा में रिपब्लिकन सीनेट उम्मीदवार भारतीय-अमेरिकियों के बीच पैठ बढ़ा रहे हैं

वाशिंगटन। नेवादा से सीनेट के चुनाव के लिए रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार एडम लैक्साल्ट डेमोक्रैट प्रतिद्वंद्वी को हराने की जुगत में प्रभावशाली भारतीय-अमेरिकी समुदाय तक अपनी पैठ बढ़ा रहे हैं। नेवादा के पूर्व अटॉर्नी जनरल और सीनेट उम्मीदवार एडम लैक्साल्ट ने सप्ताहांत भारतीय-अमेरिकी समुदाय से मुलाकात की और उन्हें एवं रिपब्लिकन पार्टी को आगामी नवंबर में होने वाले मध्यावधि चुनाव में वोट देने की समुदाय से अपील की। वह डेमोक्रैटिक पार्टी की कैथरीन कोर्टेज मस्तो के खिलाफ चुनाव मैदान में हैं। 'वेगासदेसी.कॉम' के अनुसार, लास वेगास के एक लोकप्रिय भारतीय रेस्तरां में भारतीय-अमेरिकी समुदाय को संबोधित करते हुए, लैक्साल्ट ने भारतीय-अमेरिकी और एशियाई प्रशांत अमेरिकी समुदायों से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने विचार रखे।'सैफरन फ्लेवर्स ऑफ इंडिया' के मालिक राजेश पटेल ने कहा, ''एडम लैक्साल्ट, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की तरह, भारतीय-अमेरिकी समुदाय के एक महान मित्र और समर्थक हैं। वह आर्थिक समृद्धि, और सभी अमेरिकियों के लिए शिक्षा के समान अवसर के समर्थक के तौर पर अवैध आव्रजन के खिलाफ कानून प्रवर्तन के साथ खड़े हैं।''

तीन टुकड़ों में बंट जाएगा पाकिस्तान, इमरान ने बलूचिस्तान पर कही बड़ी बात

वाशिंगटन : पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान ने साफ चेतावनी दी है कि मौजूदा शहबाज शरीफ सरकार ने सही फैसले नहीं किए तो देश तीन टुकड़ों में बंट जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि देश आत्महत्या की कगार पर पहुंच चुका है। अपनी सरकार गिराए जाने के बाद इमरान खान पीएम शहबाज शरीफ की सरकार पर लगातार सियासी वार कर रहे हैं। बुधवार को बोल न्यूज को दिए एक साक्षात्कार में पूर्व पीएम ने माना कि उनकी सरकार कमजोर थी। हर कोई उसे ब्लैकमेल करता था, क्योंकि उनके पास पावर नहीं थी, सभी जानते थे कि ताकत किसके पास थी।

पूर्व पीएम ने आशंका जताई कि पाकिस्तान की सेना को सबसे पहले खत्म किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यदि प्रतिष्ठान सही निर्णय नहीं लेता है तो मैं आपको लिखकर दे सकता हूं कि उन्हें नष्ट कर दिया जाएगा। पाकिस्तान में सत्ता प्रतिष्ठान का अर्थ राजनीतिक नेतृत्व के अलावा सेना से भी लगाया जाता है। इसलिए उनका इशारा सेना व सरकार दोनों की ओर माना जा रहा है। इमरान खान ने कहा कि जब देश तबाह हो जाएगा तो वह डिफॉल्टर हो जाएगा। ऐसे में दुनिया पाकिस्तान पर परमाणु निरस्त्रीकरण के लिए दबाव डालेगी। ऐसा ही यूक्रेन के साथ 1990 के दशक में किया गया था। भारतीय थिंक टैंक बलूचिस्तान को अलग करने पर मंथन कर रहे हैं।

2018 में सेना की मदद से पाक के पीएम बने थे

खान को अप्रैल में अविश्वास

प्रस्ताव के जरिए सत्ता से बेदखल किया गया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि वह अमेरिकी साजिश के शिकार हुए हैं, क्योंकि वह रूस, चीन व अफगानिस्तान को लेकर देश की स्वतंत्र विदेशी नीति का पालन कर रहे थे। इमरान खान 2018 में कथित तौर पर सेना की मदद से पाक के पीएम बने थे। वह देश के पहले पीएम हैं जिन्हें पाक नेशनल असेंबली में अविश्वास प्रस्ताव के जरिए हटाया गया। उनके बाद पीएमएलएन नीत शहबाज शरीफ सरकार बनी है।

भारत पर लगाया यह आरोप

इमरान खान ने देश की शहबाज सरकार पर आरोप लगाया कि वह अमेरिका को खुश करने के लिए काम कर रही है। नवाज शरीफ और आसिफ अली जरदारी ने हमेशा से अमेरिका, भारत और इस्राइल गठबंधन के लिए काम किया। वह पाकिस्तान को मजबूत नहीं करेगी। भारत पर आरोप लगाते हुए पूर्व पीएम ने कहा कि भारत मुझे इस्लामाबाद में पसंद नहीं करता, क्योंकि मैं एक स्वतंत्र विदेश नीति चाहता था।

पाकिस्तान में गृहयुद्ध की चेतावनी

इमरान पाकिस्तान में गृहयुद्ध छिड़ने की चेतावनी दे चुके हैं। पाकिस्तान के प्रमुख विपक्षी दल पीटीआई के प्रमुख ने कहा कि यदि देश में नए सिरे से चुनाव नहीं कराए गए तो वह गृहयुद्ध की ओर चला जाएगा। उन्होंने कहा कि पाक सुप्रीम कोर्ट प्रदर्शनकारियों की सुरक्षा पर फैसला कर ले, इसके बाद वह अपनी नई रैली की तारीख का एलान करेंगे। उन्होंने कहा कि हम देखेंगे कि वे हमें कानूनी व संवैधानिक तरीकों से चुनाव की ओर बढ़ने देते हैं या नहीं। अन्यथा देश गृह युद्ध की ओर चला जाएगा।

अमेरिका में फिर गोलीबारी, अब ओक्लाहोमा का अस्पताल परिसर बना निशाना, पांच की मौत

वाशिंगटन: अमेरिका में एक बार फिर गोलीबारी की घटना हो गई। इस बार ओक्लाहोमा के टुल्सा शहर के सेंट फ्रांसिस अस्पताल परिसर की नैटेली बिल्डिंग में गोलीबारी हुई। टुल्सा पुलिस के अनुसार अज्ञात हमलावर ने चार लोगों को गोलियों से भून दिया। सूचना मिलते ही तत्काल मौके पर पहुंची पुलिस ने शूटर को मार गिराया।

अमेरिका में लचर शस्त्र लाइसेंस कानून के चलते अक्सर गोलीबारी की घटनाएं सामने आती रहती हैं, जिनमें निर्दोष लोग मारे जाते हैं। 24 मई को उवाल्डे के एक प्राथमिक स्कूल में हुई गोलीबारी में 19 बच्चों समेत 23 की मौत हो गई थी। राष्ट्रपति जो बाइडन ने इन पर चिंता जताते हुए कहा था कि अब इस दिशा में कदम उठाने का वक्त आ गया है।

टुल्सा के अस्पताल परिसर में हुई गोलीबारी की सूचना राष्ट्रपति जो बाइडन को भी दी गई। व्हाइट हाउस द्वारा स्थानीय समयानुसार

बुधवार को जारी बयान में कहा गया है कि वह हालात पर नजर रखे हुए है। सीएनएन के अनुसार टुल्सा पुलिस ने अपनी फेसबुक पोस्ट में बताया कि एक अज्ञात राइफलधारी नैटेली बिल्डिंग में घुस गया और उसने अंधाधुंध गोलियां चलाकर चार लोगों की जान ले ली।

एक दिन पहले स्कूल में गोलीबारी हुई

अमेरिका में गोलीबारी की घटनाएं लगातार बढ़ती जा रही है। टुल्सा में फायरिंग से एक दिन पहले यानी मंगलवार को न्यू ऑरलियन्स के स्नातक दीक्षांत समारोह में शूटिंग हुई थी। इसमें एक वृद्धा की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए थे। इसके पहले उवाल्डे के रॉब एलीमेंट्री स्कूल में हुई गोलीबारी में 19 बच्चों समेत 23 लोग मारे गए थे।

बाइडन ने न्यूजीलैंड की पीएम से लिया परामर्श

उल्लेखनीय है कि अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन ने कल ही देश में बढ़ती फायरिंग की घटनाओं पर नियंत्रण को लेकर न्यूजीलैंड की पीएम जेसिंडा आर्डर्न से परामर्श किया था। बाइडन ने आर्डर्न से इसलिए परामर्श किया क्योंकि 2019 में न्यूजीलैंड के क्राइस्टचर्च में मुसलमानों को निशाना बनाकर की गई गोलीबारी में 51 लोगों की मौत के बाद वहां की सरकार ने सख्त कदम उठाए थे। न्यूजीलैंड में सेना जैसी राइफलों की बिक्री पर पाबंदी लगाने के साथ ही बंदूकों की सरकार द्वारा पुनः खरीदी भी की गई।

अजगरों की तस्करी में भारतीय मूल का मलेशियाई ड्राइवर गिरफ्तार, 3600 अमेरिकी डॉलर का जुर्माना

सिंगापुर। दक्षिणी मलेशिया से सिंगापुर में दो धारीदार अजगरों की तस्करी के लिए एक भारतीय मूल के मलेशियाई ट्रक चालक पर 3,600 अमेरिकी डॉलर का जुर्माना लगाया गया। चैनल न्यूज एशिया की रिपोर्ट के अनुसार, 51 वर्षीय पुलेंथिरन पलानीअप्पन को बिना परमिट के संरक्षित प्रजातियों के आयात के लिए दोषी ठहराए जाने के बाद जुर्माना लगाया गया। धारीदार अजगर एक अजगर प्रजाति है जो दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में पाए जाते हैं। यह दुनिया का सबसे लंबा सांप है। कई देशों में इसकी त्वचा का पारंपरिक चिकित्सा में उपयोग होने के कारण और पालतू जानवरों के रूप में बिक्री के लिए इसका शिकार किया जाता है।

7 अप्रैल को इमिग्रेशन अथॉरिटी के अधिकारियों ने इन्हें जब्त कर लिया था, जिन्होंने पलानीअप्पन के कंटेनर ट्रक को रोककर जांच की थी। ये दोनों दो अजगर बेहद गंभीर स्थिति में पाए गए थे। वे ड्राइवर की सीट के ऊपर एक डिब्बे में छुपाए गए थे। जांच से पता चला कि पलानीअप्पन सिंगापुर में एक अज्ञात शख्स को जानवरों को पहुंचाने पर सहमत हुआ था। उसे इस काम के लिए 300 मलेशियाई रिंगित 300 (लगभग 68 अमेरिकी डॉलर) का भुगतान किया जाना था। उसने 7 अप्रैल को जोहोर बाहरू में अजगरों वाला बॉक्स लिया और सिंगापुर की एक कंपनी को सीमेंट पहुंचाने के नाम पर ट्रक लेकर चल दिया।

जयशंकर ने कनाडा के समक्ष उठाया स्वतंत्रता के दुरुपयोग व चरमपंथ के खतरों का मुद्दा

टोरंटो। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कनाडा की अपनी समकक्ष मिलेनी जोली से टेलीफोन पर बातचीत की और इस दौरान स्वतंत्रता के

दुरूपयोग तथा कट्टरपंथ के खतरों के बारे में चर्चा की । दोनों विदेश मंत्रियों ने हिन्द प्रशांत और यूक्रेन संघर्ष के वैश्विक प्रभाव तथा द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के रास्तों पर भी चर्चा की ।

जयशंकर ने ट्वीट किया, '' कनाडा की विदेश मंत्री मिलेनी जोली के साथ सघन बातचीत की । हमारे राजनीतिक एवं आर्थिक सम्पर्कों का विस्तार करने तथा सांस्कृतिक एवं सामुदायिक सम्पर्कों के बारे में भी चर्चा की । ''उन्होंने कहा, '' हमने स्वतंत्रता के दुरूपयोग एवं कट्टरपंथ के खतरों के बारे में भी विचार विमर्श किया । ''

ऑस्ट्रेलिया की नई सरकार में रिकॉर्ड 13 महिला मंत्री, मुस्लिम और स्थानीय मूल के सांसदों को भी मिली कैबिनेट में जगह

सिडनी: ऑस्ट्रेलिया की नई सरकार में पहली महिला मुस्लिम समेत 13 महिलाओं ने मंत्री पद की शपथ ली। गवर्नर-जनरल डेविड हर्ले द्वारा कैनबरा में आयोजित समारोह में नए प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज के नेतृत्व में इन मंत्रियों का शपथ ग्रहण हुआ।

ऐनी एली ने ऑस्ट्रेलिया की पहली महिला मुस्लिम मंत्री के रूप में शपथ ली, जबकि एड हुसिक कैबिनेट में सेवा देने वाली पहली मुस्लिम बनीं। लिंडा बर्नी जातीय मामलों के मंत्री के रूप में पहली महिला और एकमात्र दूसरी

स्थानीय मूल की व्यक्ति बनीं। नई सरकार में नियुक्त 30 मंत्रियों में से लगभग आधी महिलाएं हैं।

कैबिनेट की प्रमुख भूमिकाओं में महिलाओं के पास 23 में से 10 विभाग हैं। लेबर पार्टी ने 150 सीटों वाले सदन में बहुमत हासिल करने के लिए पर्याप्त सीटें हासिल की हैं। अल्बनीज के मंत्रिमंडल में कुछ नए चेहरों के साथ-साथ कुछ ऐसे सांसद भी शामिल हैं। अल्बनीज ने कहा, हमारे पास संसद में हमारे पक्ष में कई प्रतिभाशाली सांसद हैं। यह हमारे इतिहास में सबसे अनुभवी लेबर सरकार है।

चीन के सिचुआन प्रांत में भूकंप से चार की मौत, 14 घायल

बीजिंग। चीन के दक्षिण पश्चिम प्रांत सिचुआन के यान शहर में बुधवार को आये शक्तिशाली भूकंप में चार लोगों की मौत हो गई और 14 घायल हो गए है। भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 6.1 मापी गई। शहर के भूकंप राहत मुख्यालय ने यह जानकारी दी। चीन के भूकंप नेटवर्क केंद्र (सीईएनसी) के अनुसार भूकंप का केंद्र 17 किलोमीटर की गहराई में 30.37 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 102.94 डिग्री पूर्वी देशांतर पर था। सीईएनसी के अनुसार भूकंप स्थानीय समयानुसार शाम पांच बजे यान शहर की लुशान काउंटी में आया। भूकंप के पहले बड़े झटके के तीन मिनट बाद, बाओक्सिंग काउंटी में 4.5 तीव्रता का भूकंप आया।

सरकारी समाचार पत्र ह्यपीपुल्स डेलीह्न की खबर के अनुसार भूकंप में चार लोगों की मौत हो गई और 14 अन्य घायल हो गये। यान शहर के भूकंप राहत मुख्यालय के हवाले से कहा गया कि बाओक्सिंग काउंटी से हताहतों की सूचना मिली है।

इटली में सिसली : 100 दिन बाद भी धधक रहा यूरोप में सबसे सक्रिय एटना पर्वत ज्वालामुखी

सिसली : यूरोप के सबसे ऊंचे ज्वालामुखी पर्वत की एक तस्वीर इन दिनों सोशल मीडिया पर काफी शेयर की जा रही है। इस तस्वीर में ज्वालामुखी से उठते हुए धुएं गुबार के विहंगम दृश्य को देखा जा सकता है। इस धुएं के गुबार का फैलाव सैकड़ों मीटर दूर तक है। इसके साथ ही जहां से यह धुआं निकल रहा है वहां धधकते ज्वालामुखी की आग दिखाई देती है। आग के कारण बनने वाली रोशनी से इसके लावे की अत्यधिक गर्म होने का अंदाजा लगाया जा सकता है। आइए इससे जुड़े कुछ और तथ्यों को जानते हैं।

ऊंचाई : 3329 मीटर (10922 फुट) ऊंचे इटली के सिसली स्थित एटना पर्वत ज्वालामुखी में सोमवार से फिर लावा निकल रहा है। इससे आसमान में नजारा आतिशबाजी जैसा है। इसमें लगातार बदलाव होता रहता है। यह यूरोप का सबसे ऊंचा ज्वालामुखी पर्वत है।

12 किलोमीटर ऊंचाई तक जा पहुंचा था इसी साल फरवरी में विस्फोट के दौरान इस

ज्वालामुखी से निकला लावा। एटना में सबसे ऊंची चोटी 10,9000 फुट है।

कुछ महीने शांति के बाद इसमें फरवरी में विस्फोट हुआ तो लावा इतनी तेज गति से निकला कि पूर्वी सिसली के ऊपर राख से 12 किलोमीटर ऊंचा बादल बन गया।

इटली के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ जिओफिजिक्स एंड वलकेनोलॉजी के मुताबिक, माउंट एटना में सबसे ऊंची चोटी 10,9000 फुट है। इसमें हर साल 100 फुट का इजाफा होता है। 2021 में यह ज्यादा सक्रिय था।

माना जाता है कि माउंट एटना तीन लाख साल पुराना है। इसमें सबसे बड़ा विस्फोट 1669 में हुआ था। इससे निकला लावा द्वीप के सबसे बड़े शहर केटानिया तक जा पहुंचा था। इससे वहां रहने वाले सैकड़ों समुदाय प्रभावित हुए थे। इसके लावे को हटाने के लिए 1983 में डाइनामाइट का इस्तेमाल करना पड़ा था। वर्ष 1992 में सेना ने इससे निकलने वाले लावे से आसपास के इलाकों में तबाही से बचने के लिए एक दीवार का निर्माण कर दिया। इसके बाद इसका लावा राख बनने के बाद द्वीप के घरों में धूल तो भर देता है, लेकिन कोई अन्य नुकसान नहीं होता। इस राख से इलाके की मिट्टी उपजाऊ बन गई है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम्
योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग
आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
211019 से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से सम्बंधित विवादों का न्याय क्षेत्र कौशाम्बी, प्रयागराज होगा।

सुरक्षा परिषद में भारत ने जैविक हथियारों के दुरुपयोग के बढ़ते खतरे पर किया सतर्क

संयुक्त राष्ट्र। भारत के संयुक्त राष्ट्र मिशन में सलाहकार ए. अमरनाथ ने जैविक एजेंट व रसायनों के बतौर हथियार दुरुपयोग के बढ़ते खतरे को लेकर पूरी दुनिया को सतर्क किया है। उन्होंने कहा कि आतंकियों व सरकार से इतर तत्वों की सामूहिक विनाश के हथियारों (डब्ल्यूएमडी) तक पहुंच से अंतरराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा हो सकता है। परमाणु, रासायनिक व जैविक हथियारों के प्रसार पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) 1540 समिति के खुले परामर्श सत्र में अमरनाथ ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय को इन हथियारों के दुरुपयोग के तेजी से बढ़ते खतरे पर गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि नई व उभरती प्रौद्योगिकी डब्ल्यूएमडी तक आतंकी व गैर कानूनी गतिविधियों में संलिप्त समूहों की पहुंच के खतरे को बढ़ा सकती हैं।

अमरनाथ ने कहा कि आतंकी व अपराधी समूहों के पास मिसाइल व मानव रहित विमानों की उपलब्धता ने डब्ल्यूएमडी के उपयोग के जरिये आतंकी वारदातों के खतरों को बढ़ा दिया है। इसी तरह, कोरोनाकाल में रसायन व जीव विज्ञान में प्रगति के साथ जैविक एजेंट व रसायनों का हथियारों के रूप में दुरुपयोग का जोखिम भी बढ़ गया है। इनपर विचार-विमर्श करने व समिति द्वारा सदस्य राष्ट्रों की मदद का रास्ता तलाशने के लिए यह खुला परामर्श एक उपयोगी मंच होगा। अमरनाथ ने कहा कि वैश्विक अप्रसार के लिए दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के साथ भारत ने संकल्प 1540 के प्रविधानों को लागू करने के वास्ते एक मजबूत कानून आधारित राष्ट्रीय प्रणाली स्थापित की है।

ब्रिटेन में लगेगी भारत विभाजन और महात्मा गांधी के संवाद से जुड़ी प्रदर्शनी

लंदन । ब्रिटेन स्थित साउथंप्टन विश्वविद्यालय में भारत विभाजन और इस संबंध में महात्मा गांधी के संवाद से जुड़ी प्रदर्शनी का आयोजन जाएगा, जिसमें गांधी की लिखित लिफाफे शामिल हैं।इन दुर्लभ लिफाफों को लोग गुरुवार से देख सकेंगे। मुंबई के कलाकार जितिश कल्लट ने संग्रह किए गए पांच दुर्लभ लिफाफों को 'टंगल्ड हायरार्की' नाम दिया गया है। इन्हें विश्वविद्यालय के माउंटबेटन आर्काइव में संरक्षित किया गया है। माउंटबेटन भारत के अंतिम वायसराय थे। विश्वविद्यालय की जान हैंसर्ड गैलरी में दो जून को प्रदर्शनी के उद्घाटन से पूर्व कल्लट ने कहा कि ये पत्र विभाजन की घोषणा से एक दिन पहले लिखे गए थे कल्लट ने आगे बताया कि 2 जून (सोमवार), 1947 को माउंटबेटन ने गांधी से मुलाकात की थी और उन्हें भारत विभाजन के फैसले से अवगत कराया था। इसका गांधी ने कड़ा विरोध किया था। महात्मा गांधी ने सोमवार को मौन व्रत करने का फैसला किया था, जिसके परिणामस्वरूप बैठक ने एक असामान्य मोड़ ले लिया था। गांधी ने इस्तेमाल किए गए लिफाफों के पीछे अपनी बात लिखकर माउंटबेटन के साथ संवाद किया था। गांधी ने लिखा कि मुझे खेद है कि मैं बात नहीं कर सकता। जब मैंने सोमवार के मौन व्रत का फैसला लिया, तो मैंने दो अपवाद रखे।